هنـدي

लेखक : हुसैन हैदर रिज़वी

# سيرة المعصومين



# मासूमीन अ.स. के शबो रोज़

*बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम*

*मुसलमानो! तुम में से उसके लिए रसूल की ज़िंदगी में बेहतरीन नमून-ए-अमल है। जो शख़्स भी अल्लाह और आख़ेरत से उम्मीदें वाबस्ता किये हुए है और अल्लाह को बहुत ज़ियादा याद करता है।*

(सूरह एहज़ाब आयत २१)

# मासूमीन (अ.स.) के शबो रोज़

## (निसाबे मजालिस दूसरा हिस्सा)




मुरत्तिब

सय्यद हुसैन हैदर रिज़वी




E-mail : eaf_q8@yahoo.com
www.eaf-q8.com
P.O.Box: 11111 Al-Dasma - Kuwait

الطبعة الأولى

Kuwait - الكويت

# फेहरिस्त

बिस्मेही तआला

# बयाँ अपना

इससे क़ब्ल ''निसाबे मजालिस'' कम इल्म ज़ाकेरीन और आम मोमेनीन के लिए तहरीर की गई थी इस में हक़ीर कितना कामयाब रहा उसका फैसला कारेईने कराम खुद फरमाएं।

मौजूदा किताब ''मासूमीन (अ.स.) के शबो रोज़'' (निसाबे मजालिस दूसरा हिस्सा) इसी सिलसिले की दूसरी कड़ी है। यह किताब उन ज़ाकेरीन हज़रात के लिए है जो मुतालेआ के शौकीन नहीं हैं और बड़ी किताबों के मुतालेआ से उनको वहशत होती है या उनके पास बड़ी किताबों के मुतालेआ का वक्त नहीं है। या इत्तेफाक से अगर कोई उन में मुतालेआ कर भी लेता है तो उस को यह तमीज़ करना मुश्किल होता है कि कौनसी रिवायत मन्शाए शरीअत के मुताबिक है। और कौन सी रिवायत मज़ाके शरीअत से दूर है। ऐसे अफराद मुतालेआ करके हर रिवायत को दुरुस्त समझते हुए उस को बयान कर देते हैं। बाद मजलिस जब उन से कहा जाता है कि आप ने यह क्या पढ़ दिया तो उनका सीधा जवाब होता है कि रिवायत में है। मैं ने फलाँ किताब में पढ़ा है .... अब उन हज़रात को कौन बताए कि रिवायत में होना काफी नहीं है रिवायत का सही होना भी ज़रूरी है।

हर शख़्स इतना इल्म नहीं रखता है कि रिवायत को मोतबर व गैर मोतबर होने की तमीज़ कर सके। इस सलाहियत के लिए इल्मे रेजाल के बहरे ज़ख्खार में ग़ौता ज़नी हर कस व नाकस के बस की बात नहीं। सही फ़िक्र के मालिक अफराद रिवायत को देख कर इतना अन्दाज़ा ज़रूर कर लेते हैं कि यह रिवायत मन्शाए शरीअत के मुताबिक नहीं है। और यह रिवायत शरई तकाज़ों के मुताबिक है। ..... ऐसी रिवायात जो शरई तकाज़ों के मुताबिक हों अगर मजालिस में पढ़ी जाएं तो बहुत बेहतर होगा। इसी चीज़ को मद्दे नज़र रख कर ''निसाबे मजालिस'' का दूसरा हिस्सा ''मासूमीन (अ.स.) के शबो रोज़'' शाए क्या जा रहा है। उम्मीद है कि कारेईने कराम इस को पसंद फरमाएंगे और ज़ाकेरीन हज़रात उन रिवायात को मजालिसे अज़ा में बयान करेंगे।

''मासूमीन (अ.स.) के शबो रोज़'' (निसाब मजालिस) की ज़रूरत इस लिए भी मेहसूस हुई कि कम इल्म ज़ाकेरीन व मौलवी हज़रात रिवायत से पहले और रिवायत के बाद ''मन्ज़र निगारी'' के तौर पर या 'ज़ेब दास्तानी'' के ''हुनर'' को इस्तेमाल करते हुए रिवायत के सियाक व सबाक का हुलिया बिगड़ने के बाद रिवायत को बयान करते हैं। जिस से रिवायत का मतलब कुछ और ही होजाता है। इस चीज़ का एहसास आम मोमेनीन नहीं कर पाते हैं। संजीदा तबका ज़ाकेरीन व मौलवी हज़रात की रविश से नालाँ है। मसलनः

हज़रत अली अलैहिस्सलाम ने एक खारजी के मुताल्लिक सुना कि वह नमाज़े शब पढ़ता है और कुरआन की तिलावत करता है। तो आप ने फरमाया कि यकीन की हालत में सोना शक की हालत में नमाज़ पढ़ने से बेहतर है। (नहजुल बलागा सफहा ८३२ तरजुमा मुफ्ती जाफर हुसैन साहब मतबूआ इमामिया कुतुब खाना मुगल हवेली लाहौर).. ज़ाहिर है कि यह बयान खारजी के लिए था। जिस का ईमान दुरुस्त नहीं था लेकिन एक ज़ाकिर ने इस वाकेआ को पढ़ने से पहले अज़ादारी और नमाज़ का मुकाबेला क्या और नमाज़, रोज़ा, हज व ज़कात व खुमुस के पाबंद कारियाने कुरआन मोमेनीन के मुकाबले में उन अफराद को पेश किया जो नमाज़ रोज़ा वग़ेरा से दूर हैं और सिर्फ अज़ादारी के ज़रिये खुद को कामयाब समझते हैं उसके बाद हज़रत अली (अ.स.) का कौल इस तरह पढ़ा कि ''रात भर नमाज़ पढ़ने से बेहतर ईमान के साथ सो जाना है'' ज़ाकिर के इस बयान पर बे अमल मोमेनीन ने खूब दाद दी और दाद देने वाले मोमेनीन जान ही न सके कि ज़ाकिर ने क्या ख़यानत की है ..... ज़ाकिर की इस हरकत से दो काम हुए एक तो यह कि ज़ाकिर को खूब दाद मिली और नतीजे के तौर पर बाद मजलिस अच्छी रकम हासिल हुई। ज़ाकिर की इस हरकत से दूसरा काम यह हुआ कि आम मोमेनीन नमाज़ व कुरआन वगैरह से दूर हुए नतीजे के तौर पर आखेरत में जहन्नम के मुस्तहक हुए और ज़ाकिर साहब को सीधे सादे मोमेनीन को गुमराह करने का सिला यह मिला कि उनको भी आखेरत में जहन्नुम का मज़ा चखना होगा।

''मासूमीन (अ.स.) के शबो रोज़ (निसाब मजालिस दूसरा हिस्सा) शाए

करने का मकसद यह भी है कि आम मोमेनीन भी समझ जाएं कि असल रिवायत क्या है और ज़ाकेरीन हज़रात जो दूसरे ज़ाकेरीन की मजलिस सुन कर याद करते हैं वह खुद भी पढ़ लें कि असल रिवायत किया है। उसके बाद रिवायत को बस इतना पढें कि जितना है। इस में अपनी तरफ से इज़ाफा व कमी करके गुनाहगार न हों। दूसरी मिसाल मुलाहेज़ा फरमाइये वह यह कि, ज़ाकेरिन पढ़ते हैं कि जनाबे हुर ने मौला के कदमों में सर रख दिया और हाथ जोड़ कर माफी माँगी। उन हज़रात को यह मालूम नहीं कि अरब के मुसलिम समाज में और खास तौर से आइमा ताहेरीन (अ.स.) की मौजूदगी में कदमों पर सर रखने या हाथ जोड़ कर माफी मांगने का रिवाज नहीं था और न आज है (१)। यह सब हिन्दू तहज़ीब का हिस्सा है इन बातों का असल वाकेआसे कोई ताल्लुक नहीं है।

ज़ाकेरीन व मौलवी हज़रात के लिए जहाँ ''मासूमीन (अ.स.) के शबो रोज़'' (निसाब मजालिस दूसरा हिस्सा) मुफीद साबित होगी वहीं पर यह आम मोमेनीन के लिए भी फाएदा मंद होगी और उनको असल हालात का पता चल जाएगा। और यह भी मालूम होगा कि मासूमीन (अ.स.) दूसरे मोमेनीन से किस तरह राह व रसम रखते थे और मोमेनीन का मासूमीन (अ.स.) के साथ कैसा बरताव था।

मासूमीन (अ.स.) के शबो रोज़ में इस बात का भी ख़याल रखा गया है कि न रिवायत को नक्ल क्या जाए जो समाजी पेहलुवूं से जुड़ी हुई हों और उन में भी उन रिवायत को चुना गया है जो मुख़्तसर हैं तवील रिवायत को तवालत के ख़ौफ से तहरीर नहीं क्या गया है।

हमारे ज़ाकेरीन व मौलवी हज़रात मजालिस में उन रिवायत को पढ़ते हैं जिन का अमल से और समाज से कोई ताल्लुक न हो और सिर्फ उन रिवायत पर वाह वाह हो ताकि मजलिस कामियाब करार पाए। मोमेनीन को इस से क्या सबक मिला, उनकी ज़िंदगी में क्या सुधार आया उस से उन

---

(१) (शरीफ रिवायत करते हैं कि हज़रत सादिक (अ.स.) की खिदमत में एक शख़्स हाज़िर हुआ। निहायत अदब व एहतेराम से हज़रत के सरे मुबारक को बोसा दिया और फिर आप (अ.स.) की पेशानी और हाथ चूम कर इमाम के पैरों पर गिर पड़ा ताकि आप के पैरों का भी बोसा ले सके। हज़रत (अ.स.) ने उसे फौरन ही टोक दिया कि यह क्या करते हो। मेरे पाऊं पर गिर पड़े हो हालांकि मैं भी बन्दा हूँ। खुदा के लिए ऐसी हरकत न करो। इस तरह की आजज़ी और तज़लील अल्लाह जल्ले शानहू के सिवा किसी के लिए सज़ावार नहीं (नफ़्से मुतमइन्ना सफहा १०२, मुसन्निफ़ आयतुल्लाह दसतगैब नाशिर इदारे अहयाए तरासे इसलामी कराची

ज़ाकेरीन व मौलवी हज़रात को कोई सरोकार नहीं है। उनको तो पढ़ना है कि मरहब के इस तरह टुकड़े किये, फलाँ शेख जी ने जंग से यूँ फरार किया वगैरह वगैरह और मोमेनीन ने जवाब में वाह वाह की, नारे लगाए, ज़ाकेरीन खुश कि मजलिस कामयाब रही अब अच्छी रकम मिलेगी बे अमल मोमेनीन खुश कि नमाज़ रोज़े वगैरह की याद दहानी करके बोर नहीं किया।

हमारी यह कितब समाज में सुधार लाने में काफी मदद देगी अगर मोमेनीन व ज़ाकेरीन व मौलवी हज़रात इस से फाएदा हासिल करना चाहें। अलमुख्तसर यह कि हम ने तो कोशिश की है। उसको कामयाब करना अल्लाह के हाथ है। हम अपना फर्ज़ अम्र बिल मारूफ और नहि अनिल मुनकर अदा कर चुके।

**नाशुकरी होगी** अगर इस मौके पर खादिमे दीने मुबीन मोहतरमा मेहर आरा साहेबा का शुक्रिया अदा न किया जाए जिन्होंने ज़ेरे नज़र किताब और उस से कब्ल किताब "इन्हेराफ" की तबाअत के अखराजात बरदाश्त किये। मौसूफा वाकई तौर पर खादेमाए दीने मुबीन हैं। दयार गैर में रहते हुए भी खिदमते दीन का हद्दे दर्जा जज़बा आप के अन्दर पाया जाता है। बे शुमार अफराद और दीनी इदारों की बका व सलामती व तरक्की के लिए हर वक्त कोशाँ रहती हैं। और इसी राह पर आप ने अपनी औलाद की तरबियत की है। दुआ है कि खुदावंदे आलम बा तुफेल अइम्मा ताहेरीन अलैहेमुस्सलाम मौसूफा को तूले उम्र अता करे और तमाम आफात अर्ज़ी व समावी से मेहफूज़ रखे। आमीन

एहकरुल एबाद
अस्सय्यद हुसैन हैदर

# हज़रत रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम

## लकड़ियाँ मैं जमा करूँगाः

रिवायत है कि आप (स.अ.) एक सफर में थे। हुक्म दिया कि खाने के लिए एक गोसफंद ज़िबह किया जाए। एक शख़्स ने कहा कि मैं उसे ज़िबह करूँगा दूसरा कहने लगा उस की खाल मैं उतारूँगा। तीसरा कहने लगा मैं उसे पकाऊंगा आप (स.अ.) ने फरमाया लकड़ियाँ मैं जमा कर लाउंगा। सहाबा ने अर्ज़ किया हम मौजूद हैं हम लकड़ियाँ जमा करेंगे आप को ज़हमत करने की ज़रूरत नहीं। फरमाया मैं समझता हूँ लेकिन मुझे यह पसंद नहीं कि अपने आप को तुम पर कोई इम्तियाज़ या तरजीह दूँ क्यूँकि खुदा किसी बन्दे से यह चीज़ पसंद नहीं करता कि उसे किसी से तरजीह दे।

(एहसनुल मकाल, सफहा ३२, तरजुमा मौलाना सफदर हुसैन साहब किबला नजफी मतबूआ इमामिया पबलीशरज़ लाहोर)

नोटः याद रहे कि अरब के सहरा में लकड़ियाँ तलाश करना सब से ज़ियादा मुश्किल काम है और सहरा में जो झाड़ियाँ होती हैं उनमें काँटे भी होते हैं।

## एक दिन भूका रहूँ।

रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम और अहलेबैत अलैहेमुस्सलाम फाकों पर फाके करते थे। लेकिन शुक्रे खुदा ज़बान पर रहता था। आप की भूक को देख कर खुदावंद आलम ने एक फरिश्ते को रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम के पास भेजा। फरिश्ते ने आकर अर्ज़ की आप (स.अ.) का परवरदिगार कहता है कि अगर आप चाहें तो मक्का का सहरा आप के लिए सोने का हो जाए तो आप ने आसमान की तरफ सर उठा कर अर्ज़ किया खुदाया मैं चाहता हूँ कि एक दिन सैर

रहूँ और तेरी हम्द करूँ और एक दिन भूका रहूँ ताकि तुझ से सवाल करूँ। आप अपनी हयात तैयेबा में कभी तीन रोज़ मुतवातिर गेहूं की रोटी से सैर नहीं हुए। हज़रत अमीरुल मोमेनीन अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि हम रसूले खुदा के साथ खन्दक खोदने में मसरूफ थे कि अचानक फातेमा सलामुल्लाह अलैहा रोटी का एक टुकड़ा (रोटी का तिहाई हिस्सा) ले कर हज़रत की खिदमत में हाज़िर हुई आप ने फरमाया यह क्या है? जनाबे फातेमा सलमुल्लाह अलैहा ने अर्ज़ किया कि मैंने हसन (अ.स.) व हुसैन (अ.स.) के लिए एक रोटी पकाई थी यह टुकड़ा मैं आप के लिए लाई हूँ। आप ने फरमाया की तीन दिन हो गए कि खाना तेरे बाप के शिकम में दाखिल नहीं हुआ और यह पहला खाना है जो मैं खा रहा हूँ।

(माखूज़ अज़ एहसनुल मिकाल सफहा ३० मतबूआ इमायि पबलीशर लाहोर)

## मैं बादशाह नहीं:

आप बच्चों और औरतों को सलाम करते थे एक दिन एक शख्स आप से गुफ्तगू के दौरान काँप रहा था। फरमाया मुझ से क्यूँ डरते हो मैं कोई बादशाह नहीं हूँ और अनस बिन मालिक से रिवायत है कि वह कहते हैं कि मैं दस साल तक हुज़ूर का खादिम रहा हूँ आप ने मुझे कभी उफ नहीं कहा जो गलत काम मुझ से हो गया तो यह नहीं फरमाया कि यह क्यूँ किया और जो काम मुझ से हो जाता यह नहीं कहा कि यह क्यूँ नहीं किया। उस का बयान है कि आपके लिए सहरी और इफतार में पीने के लिए अलग अलग चीज़ का इन्तेज़ाम होता था। और रोटी कभी सिर्फ एक ही वक्त मिलता और पीने की चीज़ कभी दूध और खाने के लिए कभी रोटी जो पानी में भिगोई जाती थी। एक मर्तबा मैंने (अनस बिन मालिक) आप के लिए शरबत मोहय्या किया। आप के हिस्से का शरबत मैंने खुद पी लिया। नमाज़े इशा के एक घंटा बाद आप तशरीफ लाए। आप के साथी से मैंने दरयाफ्त किया कि नबी अकरम सल्लल्लाहो

अलैहे व आलेही व सल्लम ने कहीं इफ्तार किया है? उसने कहा नहीं (रसूले अकरम (स.अ.) ने जब अपना पियाला खाली देखा तो समझ गये कि वाकेआ क्या है खामोशी से सोने के लिए लेट गए) अगले दिन भी आप ने रोज़ा रख लिया (जबकि वही शरबत आप का खाना था) और ता ह्यात शरबत के मुताल्लिक मुझ से दरयाफ्त नहीं किया और न किसी दूसरे शख्स को इत्तेला दी।

(माखूज़ एहसनुल मिकाल सफहा ३२ मतबूआ लाहूर)

## ज़िना की इजाज़त दें:

एक जवान पैगम्बरे खुदा (स.अ.) की बज़्म में आया और कहने लगा कि मुझे ज़िना की इजाज़त दें (उसकी बे हयाई देख कर) करीब मौजूद अफराद चिल्ला उठे (कि यह क्या कह रहा है) हज़रत (स.अ.) ने फरमाया कि मेरे करीब आओ। वह जवान नबी अकरम सल्लल्लाहो अलेहे व आलेही व सल्लम के करीब आया। आप ने उस से फरमाया कि क्या तु पसंद करता है कि तेरी माँ के साथ या तेरी बहन के साथ इसी तरह तेरी फुफियों, खालाओं और बाक़ी रिश्तेदार औरतों के साथ ज़िना किया जाए। कहने लगा यह तो मुझे पसंद नहीं। फरमाया खुदा के तमाम बंदे ऐसे ही हैं। फिर आप ने अपना दस्ते मुबारक उसके सीने पर रखा और अर्ज़ किया खुदाया इस के गुनाह को माफ फरमा इसके दिल को पाक कर इसकी शर्मगाह की हिफाज़त फरमा इसके बाद उसे किसी अजनबी औरत की तरफ जाते हुए नहीं देखा गया।

(माखूज़ एहसनुल मिकाल सफहा २९ मतबूआ लाहोर)

## एक दिन के तीन हिस्से:

घर की मसरूफ़ियात के औकात को आप ने तीन हिस्सों में तकसीम कर रखा था। एक हिस्सा अल्लाह की इबादत के लिए एक हिस्सा बीवीयों के लिए और एक हिस्सा अपनी ज़ात के लिए। जो वक्त जिस काम के लिए होता उस में किसी दूसरे काम में मशगूल

न होते और वक्त का जो हिस्सा अपने वास्ते मखसूस फरमाया था वह दूसरे लोगों (की भलाई) में सर्फ करते उस में से अपने लिए कुछ बाकी न रखते। पहले मखसूस लोगों से मिलते उसके बाद बाकी वक्त अवाम में गुज़ारते। हर शख्स की इज़्ज़त दीन में उस के इल्म और उसकी फज़ीलत के मुताबिक करते और उनकी ज़रूरत के मुवाफिक उनकी तरफ मुतवज्जे रहते (किसी को अपनी तरफ से ला परवाही बरते जाने का एहसास न होता) और जो कुछ उनके फाएदे और उम्मत की इसलाह के लिए ज़रूरी होता बयान फरमाते और बार बार फरमाते कि मौजूदा लोग जो मुझ से सुन रहे हैं उन लोगों तक पहुंचा दें जो मौजूद नहीं हैं और लोगों से फरमाते कि उनकी ज़रूरतें मुझ से बयान करो जो खुद मुझ तक अपनी हाजतें नहीं पहुंचा सकते हैं।

(माखूज़ हयातुल कुलूब सफहा २०६ जिल्द दूवम नाशिर ताहा पबलीशिंग सेंटर दरगाह हज़रत अब्बास रुसतम नगर लखनऊ)

## वादा वफाई:

पैगंबरे इस्लाम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम ने एक शख्स से वादा फरमाया कि वह जब तक नहीं आएगा आप (उस) पत्थर पर बैठे रहेंगे वह शख्स चला गया और सूरज निकल आया और गरमी हो गई। सहाबा ने अर्ज़ की या रसूलुल्लाह (स.अ.) आप धूप से साए में तशरीफ ले आएं तो क्या हर्ज है? आप ने फरमाया कि मैंने उस शख्स के साथ इस जगह का वादा कर रखा है अगर वह नहीं आता मैं क्यामत तक यहीं रहूंगा। (इस्लाम दीने माशेरत सफहा १२९ मतबूआ जामेआ तालीमाते इसलामी कराची पाकिस्तान) इसी किताब के सफहे १२८ पर हदीसे रसूल तहरीर है कि ''जो शख्स अपना वादा पूरा न करे वह दीन नहीं रखता'' और दूसरी हदीस में यह तहरीर है कि ''जो शख्स खुदा और रोज़े क्यामत पर ईमान रखता हो वह जब वादा करता है तो उसे वफा करता है। और यह हदीस भी इसी सफहे पर तहरीर है कि ''चार चीज़ें ऐसी हैं

जो जिस शख्स में हों वह मुनाफिक है उन में से एक यह है कि जब वादा करे तो उसे पूरा न करे।"

**लोगों का एहतेराम:**

जब कोई शख्स रसूले अकरम (स.अ.) के पास आता तो आप उस का एहतेराम करते और अकसर फर्श के तौर पर अपनी अबा उस के लिए बिछा देते और जिस सरहाने पर टेक लगाए होते वह उसे देदेते।

एक दिन रसूले अकरम (स.अ.) मस्जिद में तनहा तशरीफ फरमा थे। एक शख्स मस्जिद में दाखिल हुआ और आप की जानिब आया। हुज़ूर अपनी जगह से उठ कर ज़रा पीछे हट गए और वह जगह उसके लिए खाली करदी। उस शख्स ने अर्ज़ किया।

"या रसूलुल्लाह! मस्जिद खाली है और जगह वसीअ (बहुत) है। फिर आप एक कदम पीछे चले गए? आप ने फरमाया "मुसलमान के मुसलमान पर जो हुकूक हैं उनमें से एक यह है कि जब वह उसके पास आकर बैठे तो ख़ुद वह एक कदम पीछे हट जाए और उसके मोहतरम होने का एतेराफ करे।

अगर कुछ लोग हुज़ूर के पास बैठे होते तो आप सब का एहतेराम मलहूज़ रखते हुए अपनी मोहब्बत आमेज़ निगाहे करम सब हाज़ेरीन पर मसावी डालते थे।

जब रसूले अकरम (स.अ.) किसी मजलिस में तशरीफ लाते तो जहाँ खाली जगह देखते वहीं बैठ जाते और बुलंद और निचली जगह की कोई परवाह न करते।

जब आप मस्जिद में या किसी और मुक़ाम पर अपने असहाब के साथ तशरीफ फरमा होते तो मजलिस को एक दाएरे की शक्ल दे दी जाती ताकि बुनियादी तौर पर बुलंद या निचले मुक़ाम का कोई सवाल ही न रहे।

अगर कोई अजनबी शख्स आँहज़रत की मजलिस में वारिद

होता तो वह आप को पहचान न पाता क्यूँकि आप दूसरों के मुकाबले में अपने लिए कोई इम्तियाज़ न रखते थे। मजबूरन नौ वारिद को पूछना पड़ता कि आप में से रसूले खुदा कौन हैं?

## मैं इस दौलत को क़ुबूल करने के लिए तय्यार नहीं।

रसूले अकरम (स.अ.) लोगों के तकब्बुर और खुद ग़रज़ियों का बड़ी शद व मद से मुकाबेला करते थे और जब भी हालात उस अम्र के मुक्तज़ी होते उन्हें तवाज़ो और फ़रूत्तनी का सबक देते थे।

एक दिन आँहज़रत अपनी मजलिस में तशरीफ फरमा थे और सहाबा एक दाएरे की शक्ल में बैठे थे। एक मुसलमान जो नादार था फटा पुराना लिबास पहने हुए था वारिद हुआ और इसलामी तरीके के मुताबिक (यानी जो शख्स ख्वाह उस की हैसियत कुछ भी हो जब किसी मजलिस में आए तो जहाँ जगह खाली देखे बैठ जाए और इस ख्याल से कोई ख़ास जगह तलाश न करे कि मेरा रुतबा उस का क्या तकाज़ा करता है) उस ने इधर उधर नज़र दौड़ाई और एक जगह खाली देख कर वहां बैठ गया। इत्तेफाकन यह जगह एक अमीर आदमी के पहलू में थी। अमीर आदमी ने अपना लिबास समेटा और अपनी जगह से खिसक कर उस नादार शख्स से कुछ फासले पर जा बैठा जिस से ज़ाहिर होता था कि इस गरीब आदमी के उस के पास आ बैठने से उसे कोफ्त हुई है।

रसूले अकरम (स.अ.) अमीर आदमी की हरकात व सकनात को ग़ौर से देख रहे थे। आप (स.अ.) ने उस से मुखातिब हो कर फरमाया।

क्या तुम्हें यह खौफ हुआ कि उस शख्स की ग़रीबी से कोई चीज़ तुम्हारे चिपक जाएगी?

उस ने अर्ज़ किया ''नहीं या रसूलल्लाह''

फिर आप ने फरमाया कि क्या तुम्हें यह खौफ हुआ कि तुम्हारी दौलत से कोई चीज़ उसे मुन्तकिल हो जाएगी? उसने जवाब

दिया! ''नहीं या रसूलल्लाह''

फिर आप ने फरमाया कि ''क्या तुम्हें खौफ पैदा हुआ कि तुम्हारा लिबास उस से छूकर गंदा हो जाएगा?

उसने जवाब दिया ''नहीं या रसूलल्लाह''

उस पर आप ने फरमाया कि ''फिर तुम ने क्यूँ अपने आप को समेटा और उस से दूर जा बैठे?

उस शख़्स ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (स.अ.)! मैं एतेराफ करता हूँ मुझ से गलती हुई है अब उस गलती की तलाफी और उस गुनाह के कफ्फारे के तौर पर मैं उस मुसलमान भाई को अपनी आधी दौलत देने को तय्यार हूँ।''

ग़रीब शख़्स ने जब उसकी बात सुनी तो कहा ''या रसूलल्लाह! मैं उस दौलत को क़ुबूल करने को तय्यार नहीं हूँ''

हाज़ेरीन ने तअज्जुब से पुछा! क्यूँ?

उसने कहा ''मुझे डर है कि कहीं मैं भी ग़ुरूर और खुद पसंदी में गिरफ़तार हो जाऊं और किसी दिन अपने किसी मुसलमान भाई से ऐसा सुलूक करूँ जैसा इस शख़्स ने आज मेरे साथ किया है''

(इसलाम दीने मारेफत सफहा २१५-२१६ मतबूआ तालीमाते इसलामी कराची)

## लोगों की दिलजोई:

रिवायत है कि मदीना के खुद्दाम व मुलाज़ेमीन नमाज़े सुबह के बाद अपने पानी के बरतन रसूलल्लाह (स.अ.) की खिदमत में लाते थे कि आप अपना दस्ते मुबारक उन में दाखिल करें ताकि वह बाबरकत हो जाएं। बाज़ औकात सुबह की सरदी होती तब भी आप अपना हाथ उन में डालते और ना पसंदी का इज़हार न फरमाते और आप (स.अ.) के पास छोटे बच्चों को भी लाते थे ताकि आप किसी बच्चे के लिए बा बरकत होने की दुआ करें या उस का नाम तजवीज़ फरमाएं। उस बच्चे के घर वालों की दिलजोई के लिए उन बच्चो को अपनी गोद में ले लेते और कभी कभी वह बच्चा आप के

लिबास पर पेशाब कर देता। हाज़ेरीन में बाज़ लोग शोर मचाते तो आप फरमाते कि उस के पेशाब को न रोको पस उस को अपनी गोद में रहने देते। यहाँ तक कि वह पेशाब कर लेता। फिर हज़रत उस बच्चे के लिए दुआ फरमाते या उस का नाम तजवीज़ फरमाते तो उसके घर वाले खुश होजाते और समझते कि आँहज़रत को उससे तकलीफ मेहसूस नहीं हुई। जब वह लोग चले जाते आप अपना लिबास धो लेते (पाक कर लेते)

(माखूज़ एहसनुल मकाल सफहा ३२-३३ मतबूआ लाहौर)

## नापसंद होने पर मज़म्मत नहीं फरमाते थे।

रिवायत है कि आप लेहसुन, प्याज़, साग बदबूदार सबज़ी नहीं खाते थे और कभी किसी खाने की मज़म्मत नहीं फरमाते थे। अगर आप को अच्छा लगता तो खा लेते वर्ना छोड़ देते और मजलिस में तमाम लोगो से पहले खाने की तरफ हाथ बढ़ाते और सब से आखिर में हाथ रोकते (१) और आप अपने आगे से खाते। सिवाए खजूरों के उन में हाथ को गरदिश देते। और खाने के बाद प्याले को पूरी तरफ साफ करते और उंगलियों को एक एक करके चाटते और खाने के बाद हाथ धोकर चेहरे पर फेरते जब तक मुमकिन होता तनहा कोई चीज़ न खाते और पानी पीने से पहले बिस्मिल्लाह कहते और थोड़ा सा पानी पी कर लबों से दूर करते और अलहमदुलिल्लाह कहते। तीन दफा ऐसा करते। कभी दो उंगलियों से खाना नहीं खाते थे बल्कि तीन या उस से ज़ियादा उंगलियों से खाना खाते।

---

(१) (गालेबन यह अमल उस वक्त होता जब आप मेज़बान होते क्यूँकि शरई हुक्म यह है कि मेज़बान पहले शुरू करे और सब से आखिर में हाथ रोके इस तरह मेहमान को खाने में शर्म नहीं होगी और वह अच्छी तरह खाना खा सकेगा।) (माखूज़ एहसनुल मकाल सफहा ३४ मतबूआ लाहूर)

# हज़रत फातेमा ज़हरा सलामुल्लाहे अलैहा

## पहले पड़ोसीः

एललुश्शराए में हज़रत इमाम हसन अलैहिस्सलाम की यह रिवायत मरकूम है कि आप (अ.स.) ने फरमाया कि मैं ने. अपनी मादरे गिरामी हज़रत फातेमा ज़हरा (अ.स.) को देखा कि वह हर शबे जुमा रात भर मेहराब इबादत में खड़ी रहती थीं कभी रुकू में होतीं कभी सजदे में, यहाँ तक कि सुब्ह नमुदार हो जाती। मैं सुनता रहता था की आप मोमेनीन व मोमेनात के लिए नाम बनाम दुआए क्या करती थीं मगर अपने लिए कोई दुआ न करती थीं।

मैंने अर्ज़ किया मादरे गेरामी आप दूसरों के लिए दुआएं क्या करती हैं मगर अपने लिए कोई दुआ नहीं करतीं?

उन मोअज़्ज़माँ ने फरमाया ''बेटा पहले पड़ोसी फिर अहले खाना (बेहरुल अनवार सफहा १०७ हिस्सा सेव्वुम उर्दू तरजुमा मौलाना सय्यद हसन इमदाद साहबे मतबूआ मेहफूज़ बुक एजंसी कराची)

## तकसीमे कारः

किताबे क़ुरबुल असनाद में हज़रत इमाम जाफर सादिक अलैहिस्सलाम से यह रिवायत है कि हज़रत अली अलैहिस्सालम और जनाबे फातेमा ज़हरा (स.अ.) ने आँ हज़रत की खिदमत में अर्ज़ की कि आप (स.अ.) हम दोनों के दरमियान का बाँट दें।

आप ने फरमाया कि दरवाज़े के अन्दर जो काम हो वह फातेमा (अ.स.) के ज़िम्मे और दरवाज़े के बाहर जो काम हो वही अली (अ.स.) के ज़िम्मे।

जनाबे फोतमा ज़हरा सलामुल्लाहे अलैहा फरमाती हैं कि फिर पिदरे बुज़ुर्गवार के इस फैसले से जो मसर्रत मेरे दिल में हुई उसका

इल्म अल्लाह के सिवा किसी को नहीं इस लिए कि आप ने मुझे मरदों के दरमियान जाने से बचा लिया।

(बेहारुल अनवार सफहा १०६ हिस्स सूवम)

## ज़ियारते कुबूर

इमाम जाफर सादिक अलैहस्सलाम ने फरमाय कि जनाबे फातेमा ज़हरा सल्मुल्लाहे अलैहा हर सेशंबा (मंगल) की सुबह शोहदा की कबरों पर ज़ियारत के लिए जाती थीं खुसूसन हज़रत हमज़ा (र.ह.) की क़बर पर पहुंच कर उनके लिए तलबे मग़फेरत क्या करती थीं।

(बेहारुल अनवार ११५ हिस्सा सूवम)

### बाबरकत हारः

जाबिर इब्ने अबदुल्लाहे अंसारी से रिवायत है कि एक दिन जनाब रसूलल्लाह (स.अ.) के साथ हम ने नमाज़े अस्र अदा की बाद अदाए फरीज़ा हम सब आँहज़रत (स.अ.) के गिर्द बैठ गए। आप किबला रुख तशरीफ फरमा थे इतने में एक बूढ़ा अरब मुहाजिर फटे पुराने कपड़े पहने हुए आप (स.अ.) के पास आया। कमज़ोरी की वजह से उस में खड़े होने की ताकत नहीं थी।

आँहज़रत ने आने का सबब पूछा।

उसने अर्ज़ की कि ऐ अल्लाह के नबी! मैं भूका हूँ। मुझे खाना खिला दीजीए। मेरा जिस्म बरेहना है (फटे लिबास की वजेह से उस ने ऐसा कहा) मुझे लिबास दीजीए में फकीर हूँ कुछ माल दीजीए।

आप ने ईशार्द फरमाया कि भाई इस वक्त तो मेरे पास तुझे देने के लिए कुछ नहीं मगर जो खैर की तरफ रहनुमाई करे वह भी खैर करने वाले की तरह होता है। इस लिए मैं ऐसे शख्स का पता बताए देता हूँ कि जिस को खुदा और रसूल (स.अ.) दोस्त रखते हैं और वह जो खुदा व रसूल (स.अ.) को दोस्त रखता है और राहे

खुदा मैं ईसार क्या करता है। तुम फातेमा ज़ेहरा (स.अ.) के दरवाज़े पर चले जाओ। और हज़रत बिलाल से फरमाया कि ऐ बिलाल इसे फातेमा ज़हरा (स.अ.) के दरवाज़े पर ले जाओ।

चुनाँचे वह अरब हज़रत बिलाल के हमराह जनाबे फातेमा ज़हरा (अ.स.) के दर पर आया और आवाज़ दी ''अस्सलामो अलैकुम ऐ अहले बैते नबूवत जिन के पास फरिश्तों की आमद व रफ्त रहती है जिन के पास जिबरईल अमीन परवरदिगारे आलम की तरफ से नाज़िल होते हैं ''अंदर से आवाज़ आई। व अलैकस्सलाम, तुम कौन हो?

उसने अर्ज़ की कि मैं एक ज़ईफ अरब हूँ आप के पिदरबुज़ुर्गवार के पास अपने फ़क्र व फ़ाके से तंग हो कर आया था। आँहज़रत ने आप के पास भेजा है। दुख्तरे रसूल (स.अ.) मैं भुका हूँ मुझे खाना दीजीए मेरा लिबास बोसीदा हो गया है लिबास इनायत कीजीए अल्लाह तआला आप का भला करे।

हज़रत फातेमा सलामुल्लाहे अलैहा पर खुद तीन रोज़ से फ़ाका था। जब हज़रत फातेमा (अ.स.) ने देखा कि घर में कुछ नहीं है जो साएल को दिया जाए तो आप ने गोसफंद की वह खाल जिस पर रात को इमाम हसन (अ.स.) और इमाम हुसैन (अ.स.) सोया करते थे साएल को देदी और फरमाया ऐ भाई यह ले जाओ इस वक्त मुझ से यही मुमकिन है शाएद अल्लाह तआला उसके ज़रिये से तुम को कोई बेहतर चीज़ इनायत फरमादे।

साएल ने कहा दुख्तरे रसूल (स.अ).) मैंने आप से भूक की शिकायत की है और आप मुझे गोसफंद की खाल इनायत कर रही हैं यह लेकर मैं क्या करूँगा?

शहज़ादी के पास एक हार था जो आप की चचा ज़ाद बहन फोतमा बिन्ते हमज़ा ने आप को तोहफा में दिया था आप ने वह

हार अपने गले से उतार कर साएल के हवाले कर दिया और फरमाया कि अच्छा यह हार ले जाओ और इस को बेच करके अपनी ज़रूरत को पूरा कर लो शायद अल्लाह तआला उसके ज़रिये से तुम को इससे बेहतर कोई चीज़ इनायत फरमादे।

उस अरब ने वह हार ले लिया और वापस आकर रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम से अर्ज़ की कि या रसूलल्लाह आप की बेटी ने यह हार मुझे इनायत फरमाया है।

यह सुन कर रसूले अकरम (स.अ.) आबदीदह हो गए और फरमाया यह फातेमा बिन्ते मोहम्मद सय्यदा बनात आदम (अ.स.) का अतिया है अल्लाह तेरा क्यूंकर न भला करेगा।

यह माजरा देख कर अम्मारे यासिर उठे और अर्ज़ की या रसूलल्लाह अगर इजाज़त हो तो यह हार मैं खरीद लूँ?

आँहज़रत ने फरमाया ऐ अम्मार खरीद लो और सुनो! अगर इस हार की खरीदारी मैं दोनों जहानों के लोग भी शरीक हो जाएं तो अल्लाह तआला उन में से किसी को भी जहन्नम में अज़ाब न करेगा।

इजाज़त मिलने क बाद अम्मार ने उस अरब से हार की कीमत दरयाफ्त की। उस ने कहा बस मुझे रोटी और गोश्त खाने के लिए और एक चादरे यमनी तन पोशी के लिए और नमाज़ के लिए दे दो और एक दीनार भी ताकि मैं अपने अहल व आयाल के पास वापस जा सुकूँ अम्मार ने कहा मैं तुम्हें इसकी कीमत बीस दीनार और दो सौ दिरहम और एक चादर यामानी और अपनी सवारी देने के लिए तय्यार हूँ फिर तुम्हें खाने के लिए गेहूँ की रोटी और गोश्त भी दूँगा।

उसने कहा तुम बहुत सखी इन्सान मालूम होते हो।

फिर अम्मार उस को अपने साथ ले गए और जिस चीज़ के

लिए कहा था वह सब उसे दिया वह अरब यह सब चीज़ें लेकर खिदमते रसूल में हाज़िर हुआ।

आप ने दरयाफ्त क्या क्यूँ अब तो खूब सैर हो गए?

अरब ने कहा जी हाँ पेट भर कर खाना भी खा लिया लिबास और सवारी भी मिल गई मेरे माँ बाप आप पर फिदा हों इतना मिल गया कि अब मैं ग़नी हो गया हूँ।

उसके बाद अम्मार ने हार को मुश्क में बसाया और एक यमनी चादर में लपेटा और अपने गुलाम सहेम को दिया जिसने उनसे इस रकम से खरीदा था जो उन को खैबर के हिस्से में मिली थी। और उस गुलाम से कहा यह हार लेकर आँहज़रत की बारगाह में जाओ और उनकी खिदमत में पेश करो और मैंने तुझे भी आँहज़रत के लिए बख्श दिया ताकि तू उनकी खिदमत करे।

वह गुलाम हार लेकर जनाबे रसूलल्लाह (स.अ.) की खिदमत में हाज़िर हुआ और आप को अम्मार का पैग़ाम पहुचांया। आँहज़रत (स.अ.) ने गुलाम से फरमाया कि तुम यह हार ले जाकर फातेमा ज़हरा को दे दो और मैंने भी तुम्हें को फातेमा को बख्श दिया।

चुनाँचे वह हार लेकर गुलाम हज़रत फातेमा ज़हरा की देवढ़ी पर आया और रसूलल्लाह (स.अ.) का पेग़ाम सुनाया।

बिन्ते रसूल (स.अ.) ने वह हार लेकर फरमाया जा मैंने तुझे राह खुदा में आज़ाद किया। यह सुन कर गुलाम ज़ोर से हंसा।

आप ने उस से हंसने का सबब दरयाफ्त किया।

उसने कहा कि मैं इस हार की बरकत पर हंसता हूँ उसने एक भूके को सैर किया और उसको लिबास पेहनाया और उस को गनी किया और एक गुलाम को आज़ाद किया और दोबारा अपनी मालेका के पास पहुंच गया।

(तलखीस अज़ बेहारुल अनवार सफाहा ९० ता ९४ हिस्सा सूवम)

## अब मैं आप को मज़ीद ज़ेहमत न दूँगी:

एक दफा मदीना की एक मुसलमान औरत सिद्दीकए ताहेरा हज़रत फातेमा ज़हरा सलामुल्लाहे अलैहा की खिदमत में हाज़िर हुई और अर्ज़ किया।

मेरी माँ बेहद ज़ईफ और कमज़ोर है और उसे नमाज़ के मसाएल के बारे में कुछ गलत फेहमी हो गई है और अब उसने मुझे आप की खिदमत में भेजा है ताकि आप से उन मसाएल के मुताल्लिक दरयाफ्त करूँ।

आप ने फ़रमाया "तुम जो कुछ पूछना चाहो पूछो।"

उस औरत ने एक मसअला पूछा और हज़रत फातेमा सलामुल्लाहे अलैहा ने उसका जवाब दिया। फिर उसने एक और सवाल किया और आप ने उस का जवाब भी मरहमत फरमाया। फिर वह और सवाल पूछती रही हत्ता कि आप ने उस के दस सवाल के जवाब दिए।

और वह औरत शरमिंदा हो गई और कहने लगी कि अब मैं आप को मज़ीद ज़हमत न दूँगी हज़रत फातेमा सलामुल्लाहे अलैहा ने खनदा पेशानी से फरमाया।

**"जो चाहो पूछो अगर किसी को एक भारी बोझ छत पर ले जाने के लिए और एक लाख दीनार दीये जाएं तो क्या उस मज़दूरी को मद्दे नज़र रखते हुए उसे थकन का एहसास होगा?"**

उस औरत ने जवाब दिया "नहीं"

उस पर आप ने फरमाया "मैं तुझे जो मसअला बताती हूँ उसके बदले हज़ार गुना मुआवज़ा हासिल करती हूँ लेहाज़ा मुनासिब है कि हरगिज़ थकावट या मलाल महसूस न करूँ मैंने अपने वालिद बुज़ुर्गवार हज़रत रसूलुल्लाह से सुन रखा है कि कयामत के दिन

मुसलमान उलेमा अल्लाह ताला के हुज़ूर में पेश होंगे और उनमें से हर एक को उनके इल्म के मुताबिक और उस मेहनत और कोशिश के अन्दाज़ से जो उन्होंने अल्लाह के बंदोंकी हिदायत के लिए की होगी अजरे अज़ीम अता फरमाएगा।

(इसलाम दीने मारेफत सफहा ४०९ मतबूआ जामेआ तालीमात इसलामी कराची)

## मोमेना कामयाबी से खुश्हाल हो गईः

इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि दो औरतें थीं उन में एक मोमेना और दूसरी दुशमन थी, एक दीनी मतलब में आपस में इख्तेलाफ रखती थीं। इस इख्तेलाफ को हल करने के लिए जनाबे फातेमा (अ.स.) की खिदमत में हाज़िर हुई और अपने मतलब को बतलाया चुँकि हक मोमिना औरत के साथ था तो हज़रत फातेमा (स.अ.) ने अपनी गुफ्तगू और दलाएल और बुरहान से उस की ताईद की और उसे इस ज़रिये से उस पर फतेह मंद कर दिया और वह मोमेना उस कामयाबी से खुशहाल हो गई जनाबे फातेमा (स.अ.) ने उस मोमेना से फरमाया कि अल्लाह तआला के फरिश्ते तुझ से ज़ियादा खुशहाल हुए हैं और शैतान और उसके पौरूकारों पर ग़म व अंदोह उस से ज़ियादा हुआ है जो उस दुशम औरत पर वारिद हुआ है।

(फातेमा ज़ेहरा इसलाम की मिसाली खातून सफहा ११७ मोअल्लिफ आयतुल्लाह इबराहीम अमीनी उर्दू तरजुमा हुज्जतुल इसलाम अखतर अब्बास नाशिर अन्सारियान पबलीशरज़ क़ुम ईरान)

# हज़रत अली अलैहिस्सलाम

## कूफे का रास्ता वह है:

इमाम अली अलैहिस्सलाम अपनी हुकूमत के ज़माने में कूफा से बाहर एक गैर मुस्लिम के हम सफर हो गए। वह शख्स आप को जानता नहीं था। उसने पूछा आप कहाँ जा रहे हैं?

इमाम ने जवाब दिया ''कूफा''

बिलआखिर व एक दोराहे पर पहुंचे। ज़िम्मी (वह गैर मुस्लिम जो मुस्लिम हुकूमत की पनाह गाह में मुस्लिम मुल्क में रहता हो) शख्स अपनी राह हो लिया लेकिन खेलाफे तवक्को उसने देखा कि आप उसके साथ साथ चले आरहे हैं उसने पूछा।

''क्या आप कूफा नहीं जा रहे हैं?

हज़रत ने फरमाया ''हाँ मैं जा रहा हूँ''

वह कहने लगा ''कुफे का रास्ता वह है''

आप ने फरमाया ''मैं जानता हूँ''

उसने पूछा ''फिर आप ने अपना रास्ता क्यूं छोड़ दिया?''

इमाम अली अलैहिस्सलाम ने फरमाया ''मुसाहेबत और रफाक़त का तक़ाज़ा है कि इन्सान अपने हम सफर से जुदा होते वक्त चंद कदम उसके साथ साथ जाए और यह वह दस्तूर है जो हमारे जलीलुल क़द्र पैगम्बर (स.अ.) ने हमें सिखाया है।''

उस पुरखुलूस एहतराम का ज़िम्मी मर्द पर गहरा असर हुआ और उसने पूछा।

''क्या आप के पैगम्बर ने आप को यह हुक्म दिया है?''

आप ने फरमाया ''हाँ''

उस शख्स ने कहा ''जिन लोगों ने पैगम्बरे इसलाम की पैरवी

इख्तियार की और आप के नक्शे कदम पर चले वह आप की उन्हीं अखलाकी तालीमात और करीमाना सुलूक पर क़ुर्बान हुए हैं।''

बाद में उसने अपना रास्ता तर्क कर दिया और इमाम अली अलैहिस्सलाम के साथ कूफा रवाना हो गया उसने इसलाम के बारे में आप (अ.स.) से गुफ्तगू की और मुसलमान हो गया।

(इसलामे दीन मारेफत सफहा ४०२, मतबूआ जामए तालीमात इसलाम कराची)

## जहां हम कहते बैठ जाते:

सासा बिन सौहान और दूसरे लोगों ने बयान किया कि हज़रत अली अलैहिस्सलाम हम में इस तरह रहते जैसे हम में से एक हैं। हम जब आपको बुलाते आप तशरीफ लाते और जो कुछ हम कहते वह सुन लेते और जहाँ हम कहते बैठ जाते। बावजूद उसके हम आप से इतने खाएफ रहते जितना हाथ बाँधे हुए कैदी को उस शक्स का खौफ होता है जो नंगी तलवार उसके सर पर लिए खड़ा हुआ हो और उसकी की गरदन उड़ाना चाहता हो।

(एहसनुल मिकाल सफहा १८३, मतबूआ इमामिया पबलीशर लाहौर)

## सतरह मील लम्बी सड़क:

हज़रत अली (अ.स.) (१७) मील तक अपने हाथों से ज़मीन हमवार की और सड़क तामीर फरमाई और हर मील पर पत्थर नसब करके उन पर हाज़ा मील अली तैहरीर फरमाया। चूँकि उस ज़माने में नकल व हमल का कोई ज़रिया न था इस लिए उन वज़नी पत्थरों को जिन्हें बड़े बड़े क़वी हैकल लोग उठा न सकते थे हज़रत अली अलैहिस्सलाम खुद उठा कर ले जाते थे। और नसब फरमाते थे।

(चौदा सितारे सफहा १५३ मोअल्लेफा मौलाना नजमुल हसन साहब करारवी नाशिर इमामिया कुतुब खाना मोगल हवेली लाहौर ८)

## पसीना आप के चेहरे से बेहने लगा:

इमाम अली (अ.स.) के खेतों का मुन्तज़िम अबी नेज़र कहता है कि एक दिन आप खेती बाड़ी के काम की देख भाल के सिलसिले में तशरीफ लाए। चूँकि चाश्त का वक्त था इस लिए आप ने मुझ से दरयाफ्त फरमाया कि तुमहारे पास खाने को कुछ है? मैंने अर्ज़ किया कि खाना तो है लेकिन खलीफा के इस्तेमाल के काबिल नहीं है। मैंने इसी खेत से कुछ कद्दू तोड़ कर पका लिए हैं।

आप ने फरमाया "जाओ ले आओ"

फिर आप उठे और करीब ही एक छोटी सी नहर के किनारे पर गए और अपने हाथ धोए फिर आप ने थोड़े से पके हुए कद्दू खाए और दोबारा नहर के किनारे गए और अपने हाथ रेत से मल कर धोए। फिर आप ने पेट पर हाथ फैरते हुए फरमाया।

"लानत है उस शख्स पर जिस का पेट उसे दोज़ख की आग की तरफ खींच ले जाए।" कुछ देर आप ने नाली में मशक्कत की जब थक गए और पसीना आप के चेहरे से बेहने लगा तो नाली से बाहर तशरीफ लाए। चेहरे से पसीना पोछा। फिर दोबारा कुदाल पकड़ी और नाली में दाखिल हो गए आप ने खुदाई जारी रखी हत्ता कि अचानक पानी पूरे ज़ोर शोर से जारी हो गया। आप तेज़ी से नाली से बाहर निकल आए और फरमाया।

**"मैं अल्लाह तआला को गवाह करके कहता हुँ कि मैंने इस नाली को सदका करार दिया है ताकि इस की आमदनी हाजतमंदों की बेहबूद के लिए ख़र्च की जाए।"**

फिर आप ने मुझे कलम और कागज़ लाने के लिए फरमाया। मैंने तामील इरशाद की और कागज़ और कलम आप की खिदमत में पेश कर दिये। आप ने अपने दस्ते मुबारक से यूँ तहरीर

फरमाया।

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम। इस तहरीर के मुताबिक अमीरुल मोमेनीन अली ने दो खेत जिन के नाम ''कनात अबी नेज़र'' और ''बगीबगह'' हैं शहर के मुफलिस और नादार लोगों के बेहबूद के लिए और उन लोगों के लिए जो दौरान सफर नादारी और दरमाँदगी का शिकार हो जाए करार दिये हैं।

मैंने यह काम इस गरज़ से अन्जाम दिया है कि अल्लाह तआला की खुशनूदी मुयस्सर हो और मैं रोज़े कयामत के अज़ाब से महफ़ूज़ रहूँ।

यह दो खेत बेचे या हिबा नहीं किए जासकते और इन्हें मोहताजों की फलाह व बेहबुद के मसरफ में लाना चाहिये हत्ता कि अल्लाह तआला उन्हें अपनी मीरास में ले ले और वह बेहतरीन वारिसों में से है''

(इसलाम दीन मारेफत सफहा २५-२६ मतबूआ जामए तालीमात इसलामी कराची तबा दूवम (१९८७))

## और चिराग ठीक करने के बहाने बुझा दिया:

एक शख्स रसूले अकरम (स.अ.) की खिदमत में हाज़िर हुआ और अपनी भूक की शिकायत की। आँहज़रत (स.अ.) ने फौरन एक शख्स को अपने घर भेजा ताकि उस शक्स के लिए खाना ले आए। आँहज़रत (स.अ.) की ज़ौजा ने इज़हारे तास्सुफ करते हुए कहा कि घर में खाना मौजूद नहीं है। जब आप को अपने घर की जानिब से मायूसी हुई तो आप सहाबा कराम से मुखातिब हुए और फरमाया।

**''तुम में से कौन ऐसा हो जो आज रात इस मेहमान को क़ुबूल करे?''**

इमाम अली अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया ''या रसूलुल्लाह में इस काम की ज़िम्मेदारी लेता हूँ'' फिर आप ने इस शख्स का हाथ पकड़ा और उसे अपने घर ले गए और अपनी ज़ौजा गेरामी हज़रत फामेता ज़हरा सलामुल्लाह अलैहा से दरयाफ्त किया घर में कितना खाना है?

उन्होंने ने जवाब दिया ''थोड़ा सा है जो फ़क़त बच्चों के लिए काफी है।''

इमाम अली अलैहिस्सलाम ने फरमाया ''हमें चाहिये कि अपने मेहमान को खुद अपने आप और बच्चों पर मुक़द्दम रखें ''इस फैसले पर अमलदरआमद की खातिर हज़रत फातेमा ज़हरा सलामुल्लाह अलैहा ने बच्चों को सुला दिया और इमाम अली (अ.स.) ने जो खाना मौजूद था वह ले जाकर मेहमान के आगे रख दिया और चिराग ठीक करने के बहाने से बुझा दिया।

इस हालत में कि कमरे में अंधेरा छाया हुआ था आपने मेहमान को खाना खाने को कहा और खुद भी दस्तरख्वान के पास बैठ गए और कुछ खाए बगैर मेहमान को यह एहसास दिलाया कि आप खुद भी खाने में शरीक हैं।

इस रात इमाम अली (अ.स.) और हज़रत ज़हरा (अ.स.) ने अल्लाह की खातिर मेहमान को खाना खिलाया जिस के नतीजे में खुद भी भूके रहे और अपने प्यारे बच्चों को भी बगैर कुछ खिलाए पिलाए सुला दिया। अल्लाह ने यह आयत नाज़िल करके उस ईसार और करीमुन नफ्सी की तारीफ फरमाई।

**''अपने दीनी भाइयों को अपने आप पर मुकद्दम रखते हैं अगरचे वह खुद दुख और तकलीफ में ही हों।''**

(इसलामे दीन मारेफत सफहा २३६ से २३७ मतबूआ जामेआ तालीमात इसलामी कराची साले इशाअत दूवम १९८७)

## क्या ही अच्छा होता:

इमाम अली अलैहिस्सलाम के एक दौलतमंद साहबी अला बिन ज़ियाद हारसी बीमार हो गए। चुनाँचे एक दिन आप उनकी अयादत के लिए तशरीफ ले गए। उन का घर बड़ा शानदार और वसी था इमाम अली अलैहिस्सलाम ने फरमाया।

**''क्या ही अच्छा होता अगर तुझे एक ऐसा घर आखेरत में मयस्सर होता जो हमेशा तेरे कबज़े में रहता अब भी अगर तू इस घर में गरीबों, मोहताजों को मेहमान रखे और अपने अक़रबा को यहाँ बुलाए और उनकी खातिर तवाज़ो करे और जो हुक़ूक़ अल्लाह तआला ने तुझ पर वाजिब किए हैं वह उनके हकदारों तक पहुंचाए तो खुदाए बुज़ुर्ग व बरतर तुझे आख़ेरत में भी ऐसा ही घर इनायत फरमाएगा।''**

अला बिन ज़ियाद ने फरमाँबरदारी का इकरार करते हुए सरे तसलीम खम कर दिया।

(इसलामे दीने मारेफत सफहा २१, मतबूआ जामेआ तालीमात इसलामी कराची)

## उस ने फटे पुराने कपड़े पहन लिए हैं:

इन्हीं अला बिन ज़ियाद ने अपने भाई आसिम बिन ज़ियाद की हज़रत अली अलैहिस्सलाम से शिकायत की इमाम अली अलैहिस्सलाम ने पूछा उस ने क्या किया?

अला ने जवाब दिया 'उस ने फटे पुराने कपड़े पहन लिए हैं दुनियावी कारोबार तर्क कर दिया है और इबादत में मसरूफ हो गया है।''

इमाम अलैहिस्सलाम ने फरमाया 'उसे मेरे सामने लाओ।'

जब आसिम बिन जियाद पेशे खिदमत हुआ तो आप ने उस

से फरमाया।

''ऐ अपनी जान के दुशमन! शैतान ने तुझे परेशानी और सरगरदानी में मुब्तेला कर दिया है क्या वजह है कि तूने अपने बीवी बच्चों पर रहम नहीं किया और यह गलत रास्ता इख्तियार कर लिया है। क्या तेरा यह ख़याल है कि अल्लाह ने अपनी पाकीज़ा नेमतें तुझ पर हलाल कर दी हैं लेकिन वह नहीं चाहता कि तू उन से फाएदा उठाए?''

आसिम ने अर्ज़ किया ''मैंने मोटा मोटा पहन्ने और मामूली ख़ोराक इस्तेमाल करने में आप की पैरवी की है।''

इमाम आली मकाम ने फरमाया ''अफसोस है तुम पर! तुम्हें मालूम होना चाहिये कि मैं तुम्हारी मानिंद नहीं हूँ और मेरी ज़िम्मेदारियाँ तुम्हारी ज़िम्मेदारियों की तरह नहीं हैं। अल्लाह तआला ने पेश्वाओं और आइम्मा बरहक पर यह बात वाजिब की है कि वह अपनी जिंदगियाँ ग़रीब और नादार तबकों की ज़िंदगियों के बराबर क़रार दें ताकि इफ़लास और नादारी मफलूकुल हाल लोगों को बे आराम और परेशान हाल न करदें।''

(इसलाम दीने मारेफत सफहा २१-२२ मतबूआ जामेआ तालीमात इसलामी कराची)

## वह लोग जो अपनी दाढ़ी मुंडाते हैं:

हुबाबा अलबिया रिवायत करती हैं कि मैंने हज़रत अमीरुल मोमेनीन (अ.स.) को शर्तुल खमीस (फौजी अफसरों की एक जमाअत) के दरमियान देखा आप के हाथ में एक ताज़ियाना था। जिस से जरी व मार माही व मीर व बलमरानी (हराम मछलियों की अकसाम) फरोख्त करने वालों को सज़ा दे रहे थे। और फरमाते जाते थे ''या बय्याअ मसूखुन बनी इसराईला या बय्याअ जुन्दबनी मरवान) यानी ऐ मसूख बनी इसराईल के बेचने वाले! ऐ लशकर

बनी मरवान के बेचने वाले! उस वक्त फोरात बिन अखफ आप की फौज के एक सरदार खड़े हुए और उन्होंने अर्ज़ की या अमीरल मोमेनीन! जुंद बनी मरवान से क्या मुराद है? आप ने फरमाया व लोग जो अपनी दाढ़ी मुंडाते और मूँछों को ताओ देते थे। हुबाबा कहती हैं कि मैंने किसी बोलने वालो के हज़रत अली (अ.स.) से बेहतर नहीं पाया। उसके बाद मैं आप के पीछे पीछे गई यहाँ तक कि आप मस्जिदे कूफा के सहेन में दाखिल हुए उस वक्त मैंने हज़रत की खिदमत में अर्ज़ किया कि मौला यह बतलाइये कि इमाम की निशानी क्या है? हज़रत ने फरमाया "खुदा तुझ पर रहमत करे! उस संगरेज़े को उठाना" मैंने पत्थर का वह टुकड़ा उठा कर इमाम को दिया आप ने अपनी अंगुश्तरी से इस पर मोहर लगा दी और फरमाया ऐ हुबाबा! यह है इमाम की निशानी। जो शख्स मुद्दई इमामत हो इस तरह से कुदरत रखता हो जिस तरह तूने देखा तो जान लेना कि वह इमाम मुफ्तरिज़ुत ताआ है (उसकी इताअत वाजिब है) इमाम जिस चीज़ का इरादा करे वह चीज़ उस से मख़फी नहीं रह सकती। हुबाबा कहती हैं कि इस वाकेए को अर्सा गुज़र गया यहाँ तक अमीरुल मोमेनीन ने शहादत पाई। तब मैं इमाम हसन की ख़िदमत में हाज़िर हुई आप अपने वालिद बुज़ुर्गवार की जगह बैठे हुए थे और लोग आप को चारों तरफ से घेरे हुए आप से सवालात कर रहे थे। जूंही हज़रत की निगाह मुझ पर पड़ी फरमाया हुबाबा! वह संगरीज़ा लाओ जो तुम्हारे पास है। मैंने वह संगरीज़ा पेश किया। जिस पर आप ने भी अंगुश्तरी से मोहर लगा दी, इमाम हसन अलैहिस्सलाम की शहादत के बाद मैं इमाम हुसैन (अ.स.) की खिदमत में हाज़िर हुई आप उस वक्त मस्जिदे रसूल में तशरीफ फरमा थे। आप ने मुझ को अपने नज़दीक बुलाकर खुश आमदीद

कहा। उस के बाद फरमाया कि जो कुछ तू देख चुकी है वही तेरे मकसूद के लिए काफी है आया उसके बाद भी मेरी इमामत की निशानी देखना चाहती है। मैंने अर्ज़ की "जी हाँ" फरमाया अच्छा तो वह संगरेज़ा लाओ जो उठा कर लाई हो, चुनाँचे मैंने वह संगरेज़ा पेश किया आप ने भी बा एजाज़ उस पर अपनी खातम का नक्श कर दिया। इमाम हुसैन (अ.स.) की शहादत के बाद इमाम ज़ैनुल आबेदीन अलैहिस्सलाम की खिदमत में हाज़िर हुई उस वक्त पीरी मुझ पर असरअन्दाज़ हो चुकी थी क्यूंकि उस वक्त मेरी उम्र एक सौ तेरा साल की थी इमाम आली मक़ाम मशगूले नमाज़ थे मैं मायूस हुई कि शायद मुलाक़ात न हो सके, और मैंने दिल में ख़याल किया कि मैं निशानी देखने से महरूम हो जाऊं, इतने में हज़रत ने उन्गली से इशारा क्या (के पलट आ) इशारे के साथ ही मेरा शबाब पलट आ। जब नमाज़ से फारिग हुए मैंने अर्ज़ किया कि दुनिया कितनी गुज़री है और कितनी बाकी है? फरमाया जो गुज़री है बताऊंगा और जो बाकी है नहीं बताऊँगा। फिर आप ने फरमाया वह संगरेज़ा पेश करो मैंने संगरेज़ा पेश किया उस पर आप ने भी मोहर सब्त कर दी। उसके बाद हुबाबा इमाम मोहम्मद बाकिर अलैहिस्सलाम की खिदमत में गई और आप ने भी संगरेज़े पर मोहर लगादी फिर इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम ने भी इसी तरह संगरेज़े पर मोहर लगाई। आखिर में इमाम रज़ा अलैहिस्सलाम की खिदमत में हाज़िर हुई और उन्होंने भी संगरेज़े पर मोहर लगादी। बाद अज़ाँ हुबाबा ने नौ महीने और ज़िंदा रह कर वफात पाई।

(बेहार सफहा १६-१७ जिल्द १)

**नोट:**

देखा आप ने कल के शीआ हत्ता कि औरतें भी बगैर

तहकीक के मानते नहीं थे और आइम्मा भी सुबूत तलब करने वाले से नाराज़ नहीं होते थे और आज के शीआ - बस आवाज़ आजाए कि मोजिज़ा हो गया। औरत मर्द बूढ़े जवान बीमार तंदरुस्त, मौलवी ज़ाकिर मुसल्लत हुए मुदीर सब दौड़ पड़ेंगे। कोई यह ज़हमत नहीं करता कि तहकीक करे कि आवाज़ लगाने वाला कौन है? जो वाकेआ बयान किया जा रहा है वह शरीअत के बयान करदा शराएत मोज़ज़ा पर पूरा उतरता है या नहीं - यह सब कुछ नहीं। बस़ दौड़ पड़े और मातम शुरू कर दिया वहाँ की खाक को तबर्रुक बना दिया मुसल्लत हुए मुदीर ने शफायाबी की दास्तान शाए करदी। याद रखये ऐसी अंधी अक़ीदत का मज़हबे शीआ में कोई वुजूद नहीं और न उस अंधी अकीदत का कोई सवाब है। अक्ल व दलील के बाद जो मारेफत होगी वह शरीअत को कबूल होगी।

# हज़रत इमाम हसन अलैहिस्सलाम

## मर्दे शामी की गुस्ताखीः

मुबर्रद और इबने आएशा दोनों ने रिवायत की है कि एक शामी ने आप (अ.स.) को एक मर्तबा सवारी पर देखा तो आप को बुरा कहने लगा और बद्दुआ देने लगा मगर इमाम हसन अलैहिस्सलाम ने उस को कोई जवाब न दिया। जब वह बुरा कह चुका तो आप उसके करीब गए और सलाम किया फिर मुसकुराते हुए फरमायाः ऐ शेख! मेरा ख्याल है कि तू मुसाफिर है शायद तुम्हें शुबहा हुआ है अगर तुम नाराज़ हो तो मैं तुम्हें राज़ी करूँ अगर कुछ हाजत हो तो तुम्हें अता करूँ अगर रास्ता भूल गए हो तो मैं रास्ता बताऊँ अगर तुम्हारा बोझ वज़नी है तो मैं उठा कर ले चलूँ अगर भूके हो तो खाना खिलाऊँ अगर कपड़े न हों तो कपड़े पहनाऊँ अगर मोहताज हो तो तुम्हें माल दे कर ग़नी करदूँ, अगर तुम्हें शहर बदर किया गया हो तो तुम्हें पनाह देदूँ इसके अलावा अगर और कोई हाजत हो तो मैं उसे पूरा कर दूँ। क्या ही अच्छाहोता अगर तुम मेरे मेहमान होते क्यूँकि मेरे पास जगह भी कुशादा है माल व दौलत की भी कमी नहीं है लिहाज़ा जब तक यहाँ से कूच करो उस वक्त तक मेरे पास ही रहो।

मर्द शामी आप की मुख्लेसाना और मुशफेकाना गुफ्तगू से इस कद्र मुतास्सिर हुआ कि रोने लगा, नादिम हुआ और बोला "मैं गवाही देता हूँ कि आप अल्लाह की ज़मीन पर अल्लाह के खलीफा हैं वाकेअन अल्लाह तआला सब से बेहतर जानता है कि वह अपना अमरे रिसालत किस के हवाले करे आज तक मैं आप का और आप के पदरे बुज़ुर्गवार का दुनिया में सब से बड़ा दुशमन था मगर इस वक्त से मैं आप को सब से ज़ियादा दोस्त रखता हूँ।" यह कहकर वह अपना सामान आप के यहां लाया और कूच करने तक आप ही

का मेहमान रहा और आप का पक्का मोतकिद हो गया।

(बेहार सफहा १९८ जिल्द १०)

## दुशमन के मुकाबले में मदद:

एक मर्तबा एक शख्स इमाम हसन अलैहिस्सलाम के सामने आकर खड़ा हो गया और अर्ज़ करने लगा कि यब्ना अमीलल मोमेनीन! उस अल्लाह का वास्ता जिस ने आप को इन तमाम नेमतों से नवाज़ा है जिस के लिए आप उसकी बारगाह में किसी की सिफारिश ले कर नहीं गए थे। यह सब उस ने अज़ खुद आप को अता फरमाया है। ज़रा मेरे और मेरे दुशमन के दरमियान इन्साफ कीजीए वह ऐसा बे रहम और ज़ालिम है कि न किसी बूढ़े का लिहाज़ करता है न किसी बच्चे पर रहम करता है।

आप तकिया का सहारा लिए हुए थे। यह सुन कर उठ बैठे और फरमाया: तेरा दुशमन कौन है जिस से तेरी दाद ख्वाही की जाए?

उस ने अर्ज़ किया फ़क्र व इफलास।

यह सुन कर आप ने गरदन झुका कर कदरे सुकूत फरमाया फिर सर उठा कर अपने खादिम से कहा तेरे पास जितनी रकम है वह लेकर आ। वह पाँच हज़ार दिरहम ले कर आया और आप के सामने रख दिए। आप ने फरमाया इस शख्स को देदो। फिर उससे फरमाया तुम्हें उनही क़समों का वास्ता जो तुम ने मुझे दी हैं कि जब कभी तुम्हारा यह दुशमन तुम पर सितम ढाने के लिए आए तो तुम मेरे ही पास दाद ख्वाही के लिए फौरन आना।

(बेहार सफहा २०७ जिल्द १०)

## तेरा मेहमान तेरे दरवाज़े पर:

इमाम हसन अलैहिस्सलाम जब मस्जिद में दाखिल होते तो अपना सर ऊपर की तरफ करके अर्ज़ करते। परवरदिगार तेरा

मेहमान तेरे दरवाज़े पर है। ऐ एहसान करने वाले तेरी बारगाह में एक गुनेहगार हाज़िर हुआ है ऐ करीम! अपने करम से मेरी तमाम बुराइयों को दूर करदे।

(बेहार सफहा १९० जिल्द १०)

## दो मर्तबाः

इमाम हसन अलैहिस्सलाम ने अपना आधा असासा दो मर्तबा राहे खुदा में खैरात किया, यहाँ तक पाँव का एक जूता भी राहे खुदा में दे दिया और एक पाँव का मोज़ा भी।

(बेहार सफहा १९१ जिल्द १०)

## माँगना सिर्फ तीन मौकों पर जाएज़ः

इमाम जाफर सादिक़ अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि एक दिन उसमान बिन अफ्फान मस्जिद नबवी के दरवाज़े पर बैठे हुए थे कि एक साएल ने उन से सवाल किया उन्होंने उस को पाँच दिरहम दिए जाने का हुक्म दिया।

उस साएल ने कहा कुछ और मोखय्यर हज़रात का पता दीजीए।

उसमान ने कहा, वह चंद नौजवान तुम को नज़र आ रहे हैं। यह कह कर उन्होंने मस्जिद के एक गोशे की तरफ इशारा किय जहाँ इमामे हसन (अ.स.), इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम और अबदुल्लाह बिन जाफर बैठे हुए थे। साएल ने उन हज़रात के पास पहुंच कर सलाम किया फिर उन से सवाल किया।

इमाम हसन अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि ऐ शख्स! सवाल करना जाएज़ व हलाल नहीं है मगर सिर्फ तीन मवाके पर (१) कोई नागहानी मुसीबत हो। (२) या कर्ज़ ने मजबूर कर दिया हो या (३) फक्र व इफ़लास ने पस्त कर दिया हो। बताओ उन तीनों में से तुम्हें कौन सी मजबूरी पेश आ गई है?

साएल ने अर्ज़ की, जी हाँ इन्हीं तीनों में से एक मजबूरी है।

इमाम हसन अलैहिस्सलाम ने हुक्म दिया उसे पचास दीनार दिये जाएं इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम ने हुक्म दिया मेरी तरफ से इसे उन्चास (४९) दीनार दीए जाएँ अबदुल्लाह बिन जाफर (जनाबे ज़ैनब (अ.स.) के शौहर) ने हुक्म दिया कि मेरी तरफ से उस को अड़तालीस दीनार दिये जाएं।

साएल यह सब ले कर वापस हुआ और उसमान बिन अफ्फान के पास से गुज़रा।

उन्होंने पूछा कुछ काम बना?

साएल ने कहा कि जी हाँ आप के पास आया था और आप ने जो कुछ दिया था वह तो आप को मालूम ही है, मगर आप ने मुझ से कुछ न पूछा कि मैं क्यूँ माँग रहा हूँ। मगर उस गैसुऊँ वाले से जब मैंने सवाल किया तो उसने मुझ से दरयाफ्त किया कि आखिर यह भीक मांगने की क्या वजह दरपेश है। इस लिए कि सवाल करना सिर्फ तीन ही सूरतों में जाएज़ है। मैंने तीन वजूहात में से एक वजह बताई। उन्होंने मुझे पचास दीनार दिए दूसरे ने उन्चास दीनार दिए, तीसरे ने अड़तालीस दीनार दिये।

उसमान ने कहा: ऐसे नौजवान तुम को कहाँ मिलेंगे। यह साहेबान तो दूध के बदले इल्म पी पी कर बड़े हुए हैं। और खैर व हिकमत से भरे हुए हैं।

(बेहार सफहा १८१ ता १८२ जिल्द १०)

## मेरी औरत मुझ पर हाकिम बन गई:

एक मर्तबा एक मर्दे गाज़री आप के पास आया और अर्ज़ की मुझ से रसूलुल्लाह सल्लल्लहो अलैहे व आलेही व सल्लम की ना फरमानी हो गई है।

आप ने फरमाया कि यह तूने बहुत बुरा किया कैसे हो गई?

उस ने अर्ज़ किया कि रसूलल्लाह (स.अ.) ने इरशाद फरमाया

है किया।

***ला यफलह कौमिम मलकत अलैहिम इमरात।***

**''वह कौम कभी फलाह न पाएगी जिस की हुक्मुराँ औरत हो।''**

और मेरी औरत मुझ पर हाकिम बन गई है उस ने एक गुलाम खरीदने के लिए रकम दी मैंने गुलाम खरीदा मगर वह मुझ से छूट कर भाग गया। आप ने फरमाया फिर तू तीन बातों में एस एक बात इख्तियार कर अगर तू चाहे तो गुलाम की कीमत .....

उस ने (फौरन) अर्ज़ की कि जी हाँ बस आगे ज़रूरत नहीं। मैंने उसी को इख्तियार किया आप ने उस को गुलाम की कीमत देदी।

## परवरदिगार दस हज़ार दिरहम दिलादे:

सईद बिन अबदुल अज़ीज़ बयान करते हैं कि एक मर्तबा इमाम हसन अलैहिस्सलाम ने सुना कि एक शख्स दुआ कर रहा है कि परवरदिगार मुझे कहीं से दस हज़ार दिरहम दिलादे। यह सुन कर आप घर आए और उसके पास दस हज़ार दिरहम बिझवा दिये।

(वेहार सफहा २०३ जिल्द १०)

मोहम्मद बिन मुसलिम बयान करते हैं कि इमाम जाफर सादिक अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि इमाम हसन अलैहिस्सलाम की एक दुख्तर के इन्तेकाल पर आप के चंद असहाब ने आप को ताज़ियत का खत लिखा तो आप ने उन के खत के जवाब मे तहरीर फरमाया कि!

अम्मा बाद! मेरी फलाँ दुख्तर की ताज़ियत के सिलस्लि में तुम लोगों का खत मुझे मिला अल्लाह तआला की तरफ से इब्तेला आज़माइश पर सब्र और उस के हुक्मे कज़ा के सामने सरे तसलीम ख़म करके मैं अल्लाह से अज्र व संवाब का तालिब हूँ। वाकेअन मसाएब व हादसात ने हमें बहुत दुख और तकलीफ पहुँचाई। वह

काबिले 'उलफत एहबाब जो हमारी मारेफत रखते थे वह बरादराने ईमानी जो हम से मोहब्बत करते थे देखने वाले जिन्हें देख कर खुश हो जाते थे, आँखें जिन्हें देख कर ठंडक मेहसूस करती थीं वह गुज़र गए और कूच कर गए। अब वह कबरस्तानों में हैं आपस में पड़ोसी होकर भी पड़ोसी नहीं हैं। इतने करीबी पड़ोसी होकर भी न आपस में एक दूसरे से मुलाकात करते हैं न एक दूसरे की ज़ियारत को आते जाते हैं। उन के अजसाम अपने अहले व अयाल से दूर हैं उन की बज़्में एहबाब से खाली हैं। जैसे मकानों में यह रहते थे न अब ऐसा मकान नज़र आता है न जाए कयाम व अपने मानूस घरों से निकल कर एक पुर वहशत घर में हैं। वह बच्ची उस रास्ते पर रवाना हो गई जिस पर अव्वलीन जा चुके हैं और आखेरीन जाएंगे। वस्सलाम

(बेहार सफहा १८६ जिल्द १०)

## ज़हमत में मुब्तेला कर दिया:

एक मर्तबा एक शख्स ने इमाम हसन अलैहिस्सलाम से आकर कहा कि फलाँ शख्स आप को बुरा कह रहा है आप ने जवाब दिया तुम ने मुझ को ज़हमत में मुब्तेला कर दिया। अब मुझे अपने लिए और उसके लिए अल्लाह से तलब मगफेरत करनी है।

(बेहार सफहा २०७ जिल्द १०)

## इमाम हसन अलैहिस्सलाम के चंद अशआर:

**तरजुमा:**

१. ज़माने से वह शख्स कैसे धोका खा सकता है जिस के सामने दिन रात के वाज़ेह तजरुबात मौजूद हैं।

२. उस शख्स से कह दो जो उस जगह मुक़ीम है जहाँ उसके क़याम की जगह नहीं क्योंकि कूच का वक्त आ गया अपने एहबाब से रुख्सत हो जाओ।

३. तुम्हारे सारे मुलाक़ाती और सारे असहाब सब के सब ही कब्र में मिट्टी में सो चुके हैं।

४. ऐ दुनिया की लज़्ज़ात से लुत्फ अन्दोज़ होने वालो! ढलती हुई छाओं में क़्याम करना तो हिमाकत ही है।

५. मामूली रोटी के एक टुकड़े से मेरा पेट भर जाता है। और पानी का एक प्याला मेरे पीने के लिए काफी है।

६. बोसीदा और हलका सा कपड़ा भी ज़िंदगी में मेरे जिस्म को ढाँप लेता है और जब मैं मरजाऊंगा तो मेरे लिए कफन काफी होगा।

(बेहार सफहा १९१ ता १९२ जिल्द १०)

## सख़ावत:

एक मर्तबा इमाम हसन अलैहिस्सलाम से किसी शख्स ने सवाल किया तो आप ने उस को पचास हज़ार दिरहम और पाँच सौ दीनार अता फरमाए और फरमाया: एक मज़दूर बुला लाओ ताकि वह यह सब तुम्हारे साथ उठा कर पहुंचा दे।

जब व मज़दूर ले आया तो आप ने एक सब्ज़ रंग की खूबसूरत ईरानी चादर उस को दी और फरमाया कि यह मज़दूर की मज़दूरी है।

## बीस हज़ार दिनार:

एक मर्तबा एक एराबी आप के पास आया आप ने हुकम दिया "इस वक्त जो कुछ मेरे खज़ाने में है वह सब इसको देदो।"

जब देखा गया तो खज़ाने में उस वक्त बीस हज़ार दीनार थे आप ने वह सब ही उस एराबी को दे दिए।

एराबी ने अर्ज़ किया मौला! आप ने कुछ तो छोड़ा ही नहीं कि मैं अपनी हाजत बयान करूँ और आप की तारीफ़ करूँ।

(बेहार सफहा १९२ जिल्द १०)

# हज़रत इमाम हुसैन (अ.स.)

## ज़ने सालेहा

किताबे खराएज में अबू खालिद काबुली से उस ने यहया बिन उम्मे तवील से रिवायत की है कि उस ने कहा कि एक दिन हज़रत इमाम हुसैन (अ.स.) की खिदमत में बैठा था। नागाह एक जवान गिरया व नालाँ हज़रत के पास आया। हज़रत ने पूछा ऐ शख़्स तेरे रोने का सबब क्या है उस ने कहा मौला मेरी माँ ने इन्तेकाल किया है और कदरे माल छोड़ा है और कुछ वसीयत नहीं की मगर मरते वक्त उस ने मुझ से इतना कहा था कि पहले खबरे मर्ग हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम को पहुंचाना, बाद अज़ाँ तजहीज़ व तकफीन करना। उस की वसीयत के बमुजिब या मौला मैं आप को खबर करने को हाज़िर हुआ हूँ। यह माजरा सुन कर इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम ने अपने असहाब से फरमाया उस ज़ने सालेहा खुश एतेकाद के घर चलो, इमाम के हुक्म पर हम सब उठे और हम रेकाब फरज़ंदे बूतुराब रवाना हुए जब उस मकान पर पहुंचे जहाँ उस मोमेना की मय्यत को लिटाया गया था। हज़रत ने दरवाज़े पर खड़े होकर दस्ते मुनाजात दरगाह काज़ीयुल हाजात में बुलंद किए, अर्ज़ किया बारे खुदा इस को ज़िंदा कर ताकि वसीयत करे फिल फौर हज़रत की बरकते दुआ से वह ज़ने सालेहा उठ बैठी और शहादतैन को अपनी ज़बान पर जारी किया। बाद अज़ाँ उस मोमेना ने हज़रत की तरफ देखा अर्ज़ की मौला आप घर में आए हैं अब जो मेरे हक में मुनासिब हो इरशाद कीजीए ताकि अमल में लाऊँ। हज़रत दखिले हुजरा हुए और उस के सरहाने बैठे और फरमाया खुदा तुझ पर रहम करे अपनी वसीयत बयान कर उस ने कहा ऐ फरज़ंदे रसूल मैं इस कद्र माल रखती हूँ फलाँ मकान में रखा है एक तिहाई माल के

आप मुख्तार हैं अपने दोस्तों में से जिसे चाहें दें और दो तिहाई माल मेरे फरजन्द को दीजीए बशर्ते कि आप के ग़ुलामों और शीओं से हो और अगर मुखालिफ हो तो उस बकिया माल के भी आप मुख्तार हैं इस लिए कि माल मोमेनीन में मुखालेफीन का हक नहीं है। इस के बाद ज़ने सालेहा ने इस्तेदुआ की या हज़रत मेरी नमाज़े जनाज़ा आप ही पढ़ाइयेगा। और मेरी तदफीन अपने हाथ से फरमाइयेगा। इतना कहने के बाद उस मोमेना की रूह फिर रियाज़े जन्नत को परवाज़ कर गई।

(बेहारुल अनवार जिल्द अव्वल, सफहा १६ ता १८, उर्दू तरजुमा मौलाना सय्यद हसन इमदाद साहबे मतबूआ मेहफूज़ बुक एजंसी कराची तबा सूवम ५, जनवरी १९८०)

## भाई का एहतेराम:

हज़रत इमाम मोहम्मद बाकिर अलैहिस्सलाम ने इरशाद फरमाया कि हज़रत इमाम हुसैन (अ.स.) हज़रत इमम हसन अलैहिस्सलाम के सामने ताज़ीमन गुफ्तगू नहीं करते थे। इसी तरह हज़रत मोहम्मद हनफिया भी इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के सामने खामोश रहेत थे।

(बेहार सफहा १५५, जिल्द १०)

## फिकहा के माहिर:

किसी ऐराबी ने अबदुल्लाह इब्ने ज़ुबैर और उमर बिन उसमान से कोई मसअला पूछा हर एक ने दूसरे पर टाल दिया।

एराबी ने कहा अल्लाह से डरो मैं हिदायत लेने आया हूँ क्या दीन के मसाएल मेंभी एक दूसरे पर टाला जाता है।

फिर उन दोनों ने उसे इमाम हसन व इमाम हुसेन (अ.स.) के पास भेज दिया। इमाम हसन (अ.स.) व इमाम हुसैन (अ.स.) ने उसे शरई हुक्म से आगाह फरमाया तो एराबी ने खुश होकर अबदुल्लाह और अम्र बिन उसमान की मज़म्मत में यह शेर पढ़ा।

अल्लाह तआला तुम दोनों (अब्दुल्लाह व उमर) के मुँह के चमड़े का जूता बनाए जिसे हसन (अ.स.) व हुसैन (अ.स.) पहना करें।

(बेहार सफहा १५३, जिल्द १०)

## बिजली चमकती रही:

अमीरुल मोमेनीन अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि एक दिन शाम के वक्त हसन (अ.स.) व हुसैन (अ.स.) नबी सल्लल्लाहो व अलैहे व आलेही व सल्लम के पास थे कि रात हो गई। आँहज़रत (स.अ.) ने फरमाया अब तम दोनों अपनी माँ के पास चले जाओ। वह दोनों अपनी मादरे गेरामी के पास जाने के लिए पलटे कि उस अन्धेरी रात में एक बिजली मुसलसल चमकती रही यहाँ तक कि वह दोनों बिजली की रोशनी में अपनी मादरे गेरामी फातेमा ज़ेहरा (स.अ.) के पास जा पहुंचे। नबी सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम बजली को देखते रहे फिर फरमाय हम्द उस खुदा की जिस ने हम अहलेबैत (अ.स.) को मुकर्रम फरमाया।

(वेहार सफहा ९९ और सफहा ६३ जिल्द १०)

## इमाम अलैहिस्सलाम और बंदगाने खुदा:

तफसीर अयाशी में है कि एक दिन हज़रत इमाम हुसैन अलैहस्सिलाम एक मिसकीनो की जमाअत की तरफ से गुज़रे आप ने देखा कि वह अपनी अबा बिछाए हुए खुश्क रोटी के टुकड़े खा रहे हैं। जब हज़रत उन के करीब पहुंचे तो मसाकीन ने हज़रत को दावत दी कि यबना रसूलल्लाह (स.अ.) इस नाने खुश्क में शिरकत करें हज़रत घोड़े से नीचे उतरे और उनके साथ बैठ कर तनावुल किया (दूसरी रिवायत में है कि आप ने फरमाया कि अगर यह सदका न होता तो मैं ज़रूर खालेता सदका हम पर हराम है। आप सिर्फ उन के पास बैठ गए और उन सब को अपने घर लाकर

ज़ियाफत के साथ साथ लिबास दो दिरहम भी अता किए) और इस आयत की "तिलावत की इन्नल्लाह ला योहिब्बुल मुतकब्बेरीन" यानी हक ताला मुतकब्बिरों को दोस्त नहीं रखता। उसके बाद हज़रत ने फरमाया कि मैंने तुम्हारी दावत कबूल की तुम भी मेरी दावत को कबूल करो जब उन मसाकीन ने हज़रत की दावत कबूल किया तो हज़रत उनको अपने घर पर लाए और कनीज़ से फरमाया कि जो कुछ तूने मेहमानों के लिए ज़खीरा किया है हाज़िर कर कनीज़ ने सब हाज़िर किया। हज़रत ने बखूबी तमाम उनकी ज़ियाफत की और रुख्सत फरमाया।

(बेहारुल अनवार सफहा २७ हिस्सा अव्वल)

## कर्ज़:

इबने शहेर आशोब ने किताब मनाकिब में रिवायत की है कि जब उसामा बिन ज़ैद को मर्ज़ुल मौत हुआ तो हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम उन की अयादत को तशरीफ ले गए। उन को निहायत अन्दोहनाक पाया वह हालते मर्ज़ में कहते थे हाए अफसोस! हज़रत ने उसका सबब दरयाफ्त किया। उसामा ने कहा ऐ फरज़ंदे रसूल (स.अ.) मेरे ग़म की वजह यह है कि साठ हज़ार दिरहम का मैं करज़दार हूँ हज़रत ने फरमाया कि तुम खातिर जमा रखो तुम्हारा कर्ज़ मुझ पर है और मैं उसे अदा कर दूँगा। उसामा ने अर्ज़ किया ऐ फरज़ंदे रसूल (स.अ.) में डरता हूँ कि कब्ल अदाए कर्ज़ मरजाऊंग और कर्ज़ का बोझ मुझ पर रहे। हज़रत ने फरमया।। ऐ बरादर तेरा कर्ज़ मैं तेरे मरने से पहले अदा करदूँगा। रावी कहता है कि जो हज़रत ने फरमाया था वैसा ही किया। ने उसामा के इन्तेकाल से पहले उस का कर्ज़ अदा कर दिया।

(बेहरुल अनवार सफहा २८ हिस्सा अव्वल)

## पोशीदा इमदादः

किताबे मनाकिब में अब्दुर रहमान खज़ाई से रिवायत है कि जब इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम सहराए करबला में दरजए शहादत पर फाएज़ हुए तो लोगों ने हज़रत की पुश्ते मुबारक पर घट्ठों के निशान देखे। इमाम ज़ैनुल आबेदीन अलैहिस्सलाम से उन घट्ठों का सबब पूछा गया। आप ने फरमाया कि इमामे मज़लूम हमेशा ग़ल्ला और रोटियों के अम्बार अपनी पुश्ते मुबारक पर रख कर बेवाओं और यतीमों और मिसकीनों के लिए ले जाते थे और उनके घरों में छिपा कर पहुंचाते थे।

(बेहारुल अनवार सफहा ३० हिस्सा अव्वल)

## इल्मे दीनः

रिवायत है कि अब्दुर्रहमान सलमा ने हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के एक फरज़ंद को सूरए हम्द तालीम दी साहबज़ादे ने जब उसको इमाम हुसैन अलैहिस्सालम के सामने पढ़ा तो हज़रत ने हज़ार दीनार और हज़ार हिल्ले अब्दुर रहमान को अता किये और फरमयाा कि उस का मुंह मोतियों से भर दो। किसी ने कहा इस कद्र उजरत सूरए हमद सिखाने की नहीं होती है। फरमाया ऐ शख्स जिस कद्र माल व ज़र मैंने इस की तालीम के एवज़ में दिया है। बहुत कम है। उसके बाद आप ने फिल बदीहा अशआर नज़्म किए यानी

(तरजुमा अशआर) जब दुनिया तेरी तरफ रुजू करे तो चाहिये कि तू भी ख़ल्क़े खुदा पर इन्आम बखशिश कर पेश अज़ाँ तुझ से रू गरदानी करे। इस लिए कि जब दुनिया रुजू करती है तो जूद उसे फना नहीं कर सकता और जब मुँह फैरती है तो बुख्ल करने से बाकी नहीं रहती है।

(बेहारुल अनवार सफहा ३० हिस्सा अव्वल)

# हज़रत इमाम ज़ैनुल आबेदीन (अलैहिस्सलाम)

## बे खौफ गुलामः

इमाम ज़ैनुल आबेदीन अलैहिस्सलाम ने एक बार अपने गुलाम को दो मर्तबा आवाज़ दी लेकिन उसने कोई जवाब न दिया। जब तीसरी मर्तबा पुकारने पर उसने जवाब दिया तो फरमाया कि ऐ लड़के तुम ने मेरी आवाज़ नहीं सुनी?

उस ने कहा सुनी तो थी

आप ने फरमाया कि फिर तुम ने जवाब क्यूँ न दिया?

उसने कहा मैं आप के गुस्से से बे खौफ था। इस लिए जवाब न दिया।

यह सुन कर आप ने फरमाया कि उस खुदा के लिए हम्द है जिस ने मेरे गुलाम को मुझ से बे खौफ कर दिया।

(बेहार सफहा ६९ हिस्सा शशम)

## नमाज़ के लिए खुश्बू

अबदुल्लाह बिन हारिस कहते हैं कि हज़रत अली इब्निल हुसैन अलैहिस्सलाम की मुश्क से भरी एक शीशी मस्जिद में रखी हुई थी। जब आप नमाज़ के लिए तशरीफ लाते तो उस में से खुश्बू लगाते थे।

(बेहार सफहा ७२ हिस्सा शशुम)

## मामूलाते इमाम अलैहिस्सलाम

हज़रत इमाम मोहम्मद बाकिर अलैहिस्सलाम से मनक़ूल है कि इमाम ज़ैनुल आबेदीन अलैहिस्सलाम शब व रोज़ में एक हज़ार रकअत नमाज़ें पढ़ा करते थे जैसा कि जनाबे अमीरुल मोमेनीन अलैहिस्सलाम के अमल का तरीक़ा था आपकी मिलकियत में पाँच सौ दरख्त खुरमा थे और हर दरख्त के नीचे दो रकअत नमाज़ पढ़ते थे और जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो चेहरए अनवर का रंग

मुतगय्युर हो जाता था और नमाज़ में इस तरह खड़े होते थे कि जैसे कोई अदना गुलाम बादशाहे साहबे जलाल के सामने खड़ा हो और आप की यह हालत होती थी कि खौफे इलाही में आप का बदन काँपता था और इस तरह नमाज़ पढ़ते थे कि गोया अब फिर नमाज़ पढ़ने का मौका न मिलेगा। एक दिन नामाज़ में मशगूल थे कि आप की रिदा एक काँधे से खिसक गई तो आपने उसे ठीक नहीं किया। जब नमाज़ से फारिग हुए तो एक सहाबी ने उसके बारे में दरयाफ्त क्या तो फरमाया, अफसोस तुम्हें खबर नहीं कि मैं इस वक्त किस हस्ती के सामने खड़ा हुआ था किसी बंदे की नमाज़ उस वक्त तक क़ुबूल नहीं होती जब तक खुलूसे दिल से अदा न की जाए।

सहाबी ने अर्ज़ किया कि इसका तो यह मतलब हुआ कि हमतो हलाक हो गए।

इमाम अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि हरगिज़ नहीं। खुदावंदे आलम नवाफिल को बजा लाने से उस कमी को पूरा फरमा देता है।

(बेहारुल अनवार ७५ जिल्द शशुम)

## पुश्त पर निशानः

मोहताजों और मसाकीन वगैरह की इस तरह खातिर मदारात करते और उनका ख्याल रखते कि आप की वफात के बाद जब आप को गुस्ल दिया गया तो आप की पुश्ते मुबारक पर सियाह दाग देखा जो मोहताजों और मिसकीनों के लिए उनकी ज़रूरियात की अशया पुश्त मुबारक पर लाद कर ले जाने की वजह से पड़ गया था।

(बेहार सफहा ७५ जिल्द ६)

## कनीज़ का बयानः

किसी ने आप की कनीज़ से आप का हाल दरयाफ्त किया तो उस ने जवाब दिया कि तफसील से बताऊँ या मुख्तसर तौर पर?

पूछने वाले ने कहा मुख़्तसर ही बताओ।

कनीज़ ने कहा मैंने दिन का खाना कभी इमाम अलैहिस्सलाम के सामने नहीं रखा और रात को आप के लिए कभी बिसतर नहीं बिछाया।

(बेहार सफहा ७६ जिल्द शशुम)

## एक मसखरा और इमाम अलैहिस्सलामः

इमाम जाफर सादिक अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि मदीने में एक मसखरा अपनी फुज़ूल हरकतों से लोगों की तवज्जे का मरकज़ बना हुआ उन को हंसाया करता था। एक दिन इमाम अली इबनिल हुसैन अलैहिस्सलाम को देख कर कहने लगा, उन्हें हंसाना मेरे लिए मुश्किल अम्र है।

चुनाँचे जनाबे इमाम अलैहिस्सलाम अपने एहबाब व असहाब के हमराह जब उसके करीब पहुंचे तो उसने आप के गले में पड़ी हुई रिदा खींच ली और चल दिया। इमाम अलैहिस्सलाम ने उसकी तरफ कोई तवज्जे न की लेकिन लोगों ने उसका पीछा किया और उस से वह रिदा ले आए और उसे भी पकड़ कर आप के सामने ले आए।

इमाम अलैहिस्सलाम ने फरमाया, यह कौन है?

लोगों ने कहा कि हुजूर यह मदीने का मसखरा है लोगों को अपनी हरकतों से हंसाता है आप ने इरशाद फरमाया, उस से कहो कि खुदा की तरफ से दिन मुकर्रर है जिस में फुज़ूल हरकतें करने वाले नुकसान में रहेंगे।

(बेहार सफहा ८१ ता ८२ जिल्द ६)

## सफर में तआरुफ से गुरेज़ः

इमाम जाफर सादिक अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि हज़रत इमाम अली इबनल हुसैन अलैहिस्सलाम अकसर ऐसे आदमियों के

हमराह सफर इख्तियार करते थे जो आप को पहचानते न हों और उन से शर्त कर लेते थे कि वह इस जमाअत की हर वह खिदमत करेंगे जिस की उन्हें ज़रूरत होगी।

चुनाँचे एक मर्तबा आप ने एक ऐसे गिरोह के हमराह सफर इख्तियार किया कि जिस के एक शख्श ने आप को पेहचान लिया और अपने हमराइयों से कहने लगा कि तुम्हे मालूम है कि यह कौन बुज़ुर्ग हैं? वह कहने लगे हम तो उन्हें नहीं जानते। उस ने कहा, यह जनाबे अली इबनिल हुसैन अलैहिस्सलाम हैं। यह सुन कर वह लोग जल्दी से इमाम की दस्त बोसी के लिए लपके और आपकी दस्त बोसी की और बोले फरज़ंद रसूल (स.अ.)! क्या आप का यह इरादा था कि अगर हम से आप की शान में कोई नाज़ीबा बात हो जाती तो हम आतिश जहन्नुम में जलते और क़यामत तक हलाकत में पड़े रहते। हुज़ूर यह इरशाद फरमाइये कि आप ने ऐसा क्यूँ किया?

आप ने इरशाद फरमाया कि एक मर्तबा मैंने कुछ ऐसे लोगों के साथ सफर किया जो मुझे जानते थे उन्होंने जनाबे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम से मेरी कराबत का लेहाज़ करते हुए मेरे साथ ऐसी महेरबानियाँ कीं जिन का मैं मुस्तहक न था। अब मुझे इस का डर रहा कि तुम लोग भी ऐसा ही करोगे चुनाँचे मुझे यह बात पसंद न थी कि मैं अपने आप को तुम से मुतार्रिफ कराऊँ।

(बेहार सफहा ८२ जल्द शशुम)

**इफ़तारः**

हमज़ा बिन हमरान ने हज़रत इमाम जाफर सादिक अलैहिस्सलाम से रिवायत की है कि जिस दिन हज़रत इमाम अली इबनिल हुसैन अलैहिस्सलाम रोज़ा रखते थे तो बकरी ज़िबह करके हाँडियों में पकवाते थे और फिर इस पके हुए सालन को ज़रूरत

मंदों में तकसीम फरमा देते थे और खुद इफतार के लिए ख़जूर और रोटी मंगाते और यह आप का रात का खाना होता था।

(बेहार सफहा ८५ जिल्द ६)

## माहे सियाम में गुलामों की खताएं:

मोहम्मद बिन अजलान कहते हैं कि इमाम जाफर सादिक अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि माहे रमज़ान में जब कोई गुलाम या कनीज़ कोई ग़लती करती थी तो इमाम ज़ैनुल आबेदीन अलैहिस्सलाम उस ख़ता पर बाज़ पुरुस करने के बजाए उस को लिख कर रख लेते थे कि फलाँ गुलाम या कनीज़ ने फलाँ दिन ऐसा किया। और जब माहे रमज़ान की आखरी रात आती तो उन गुलामों और कनीज़ों को बुला कर अपने पास बिठाते और उन्हें वह तहरीर शुदा आमाल नामा दिखाते और फरमाते कि तुम ने यह ख़ता की थी जिस पर मैंने तुम्हारी कोई सरज़निश की कहो तुम्हें कुछ याद है?

चुनाँचे सब का यही जवाब होता कि फरज़ंदे रसूल (स.अ.) आप की तहरीर बिलकुल सही है।

फिर आप फरमाते कि ऊँची आवाज़ में कहो कि आप के रब ने आप के हर अमल को शुमार कर रखा है जो आप ने किया है बिलकुल उसी तरह जिस तरह आप ने हमारी खताएं तहरीर की हैं आप अपने हर अमल को उस के पास मौजूद पाएंगे जैसा कि हम ने अपने हर अमल को आप के पास मौजूद पाया है। लिहाज़ा आप हमें माफ फरमाएं जिस तरह आप इस को पसंद करते हैं कि वह मालिके हकीकी आप की खताओं को मुआफ फरमादे।

इमाम जाफर सादिक अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि इस गुफ्तगू से इमाम अली इबनिल हुसैन अलैहिस्सलाम ने अपनी ज़ात को आवाज़ दी थी और उन गुलामों और कनीज़ों को तलकीन करना मकसूद था और यह लोग भी आप के साथ उस आवाज़ के मतलूब थे।

उसके बाद इमाम ज़ैनुल आबेदीन अलैहिस्सलाम उन लोगों की तरफ मुतवज्जे हुए और फरमाया कि मैंने तुम्हें माफ किया तो क्या तुम भी मुझे माफ करदोगे और उन बातों से दरगुज़र करोगे जो मेरी तरफ से तुम्हारी किसी बुरी हरकत की बिना पर तुम्हारे लिए सादिर हुईं? मैं एक बुरा मालिक और ज़ालिम हूँ उसके मुकाबले में जो मेरा मालिक, सखी, करीम, आदिल, मुन्सिफ और फज़्ल व एहसान करने वाला है और मैं उसी का बंदा और गुलाम हूँ।

चुनाँचे उन सब ने कहा कि ऐ हमारे आकाः हमने आप को माफ किया और आप ने तो हमारे साथ कोई बुराई नहीं की।

इमाम अलैहिस्सलाम ने फरमया कि बारगाहे इलाही में दुआ करो कि परवरदिगार अली इबनिल हुसैन को उसी तरह माफ फरमादे जिस तरह उन्होंने हमे माफ किया और आतिशे जहन्नुम से आज़ाद करदे जिस तरह उन्होंने हमें गुलामी से आज़ाद किया। फिर रोज़े ईद इन्हीं इन्आमात से नवाज़ते थे कि वह बे नियाज़ हो जाते थे। आप का यह मामूल हर साल का था हर साल आप बीस से कम या ज़ियादा गुलाम व कनीज़ उसी तरह आज़ाद किया करते थे। और फरमाया करते थे कि खुदावंदे आलम हर शब में इफ्तार के वक्त तक सत्तर लाख उन अफराद को दोज़ख की आग से आज़ाद फरमाता है जो उस सज़ा के मुस्तहक होते हैं। और माहे रमज़ान की आखरी रात में इतने अफराद को आज़ाद फरमाता है जितने कुल माहे रमज़ान में आज़ाद फरमाए। मैं चाहता हूँ कि खुदा मुझे देखे कि मैंने इस दुनिया में अपने गुलाम इस उम्मीद पर आज़ाद किए हैं कि वह मुझे दोज़ख की आग से आज़ादी अता फरमाए।

(बेहारुल अनवार, सफहा १११ से ११४, जिल्द शशुम)

**नोटः**

मज़कूरा हदीस बड़ी तवीलहै हम ने यहाँ पर उसकी तलख़ीस की है। तफसील के ख्वाहिशमंद असल किताब में रुजू फरमाएं।

## हमारा मुहिब हमारे लिए बाइसे ऐब न होः

इब्ने शुहाब ज़हेरी से मनकूल है कि हज़रत इमाम अली इब्ने हुसैन (अ.स.) ने जो खानदाने बनी हाशिम में अफज़ल शख्सियत थे मुझ से फरमाया कि तुम हम से वह मोहब्बत रखो जो इसलामी कानून की हुदूद में हो तुम्हारी हम से मोहब्बत ऐसी होनी चाहिये कि वह हमारे लिए ऐब का बाइस न हो और हमारी ना खुशी का बाइस भी न हो।

(बेहार सफहा ८६ जिल्द ६)

## मुश्किल हल करने की दुआः

ताऊस कहते हैं कि एक रात में हजरे असवद के पास आया तो देखा कि हज़रत इमाम अली इब्ने हुसैन अलहिस्सलाम तशरीफ लाए और नमाज़ में मसरूफ हो गए। जब सजदे में गए तो मैं ने ख़याल क्या यह अहले बैत खैर में हैं मैं इनकी दुआ को ग़ौर से सूनूँगा चुनाँचे मैंने सुना कि सजदे में इस तरह दुआ फरमा रहे थे किः

***उबैदोका बेफनाएका मिसकीनका बेफनाएका फक़ीरोका बेफनाएका साएलेका बेफनाएका।***

**''(ऐ अल्लाह) तेरा बंदए हक़ीर, तेरा मिसकीन, तेरा फकीर व मोहताज और तुझ ही से सवाल करने वाला तेरी चौख़ट पर हाज़िर है।''**

ताऊस का बयान है कि मैंने इस दुआ को जब किसी परेशानी में विर्द क्या खुदावंदे आलम ने मेरी मुश्किल को हल फरमाया।

(बेहार सफहा ८७ ता ८८ जिल्द ६)

## सदके की तलाशः

हज़रत इमाम जाफर सादिक अलैहिस्सलाम इरशाद फरमाते हैं कि एक मर्तबा इमाम जैनुल आबेदीन अलैहिस्सलाम सुबह सवेरे रोज़ी की तलाश में अपने घर से बरआमद हुए तो किसी ने आप से अर्ज़ किया कि फरज़ंद रसूल (स.अ.) कहाँ का इरादा है?

आप ने फरमयाा कि अपने अयाल के लिए सदके की तलाश में हूँ।

उस ने तअज्जुब से सवाल किया के हुजूर आप और सदका लेंगे?

आप ने जवाब दिया कि जो शख्स खुदा से हलाल रोज़ी का तालिब हो तो वह रोज़ी उसके लिए खुदा की तरफ से सदक़ा होती है।

(बेहार सफहा ८० जिल्द ६)

## इमाम की ग़ीबत:

एक मर्तबा इमाम अलैहिस्सलाम ऐसे लोगों की तरफ से गुज़रे जो इमाम अलैहिस्सलाम की ग़ीबत कर रहे थे। आप रुक गए और फरमाया, अगर तुम बुराई के बयान करने में सच्चे हो तो खुदा मुझे माफ फरमाए और अगर तुम झूठ बोल रहे हो तो तुम्हें खुदा बख्शे।

(बेहार सफहा ८७ जिल्द ६)

## इल्मे दीन:

जब इमाम ज़ैनुल आबेदीन (अ.स.) के पास कोई तालबि इल्म आता तो फरमाते थे कि मरहबा तुम ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम की वसीयत पर अमल किया फिर फरमाते कि तालिबे इल्म जब घर से निकलता है तो उस से पहले कि वह ज़मीन की खुश्की व तरी पर अपना कदम रखे सातों ज़मीन उस की तारीफ व तौसीफ करने लगती हैं।

(बेहार सफहा ७६ जिल्द ६)

## गाली:

एक शख्स ने इमाम ज़ैनुल आबेदीन (अ.स.) को गाली दी तो आप खामोश रहे उस ने आप की खामोशी देख कर कहा कि मैंने तुम्हें गाली दी है इमाम अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि तेरा काम

गाली देना था लेहाज़ा तूने वह काम किया, मेरा काम तुझ से नज़र बचा लेना था लेहाज़ा मैंने तेरी इस हरकत को नज़र अन्दाज़ किया। एक दूसरी रिवायत में है कि गाली देने वाले ने जब आप की आला ज़रफी मुलाहेज़ा की तो यह कहता हुआ गया कि मैं गवाही देता हूँ कि आप ही रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम के फरज़ंद हैं।

(बेहार सफहा १०३ जिल्द ६)

## गैर बरादरी में शादी:

अबदुल मलिक बिन मरवान का शहर के वाकेआत की मुख्बरी करने वाला मदीने में एक जासूस था। उसने अबदुल मलिक को खबर दी कि इमाम अली इब्ने हुसैन अलैहिस्सलाम ने अपनी एक कनीज़ को आज़ाद कर के उस से शादी की है अबदुल मलिक ने इमाम अलैहिस्सलाम को खत तहरीर किया जिस का मज़मून यह था।

''मुझे इत्तेला मिली है कि आप ने अपनी कनीज़ से शादी करली है जो आप के लिए मुनासिब न था। आप को यह मालूम है कि कुरैश में आप के मुनासिब बराबरी के घरानों में रिश्ते तज़वीज़ मुमकिन था। जिस से औलाद शरीफ और नजीबुतरफैन होती आप ने अपनी अज़मत व शराफत को भी न देखा और न होने वाली औलाद को ख्याल किया''

इमाम अलैहिस्सलाम को उसका यह खत मिला तो आप ने उसे जवाब में लिखा है कि ''मुझे तुम्हारा खत मिल गया तुम ने मेरी कनीज़ से मेरे रिश्तए ज़ौजीयत को पसंद नहीं किया और इस अमल को एक सख्त पैराए में ले लिया। तुम यह समझते हो कि कुरैश ही व हैं कि जिन की औरतों से रिश्ते करने में अज़मत हासिल होती है। और उनसे औलाद में शरफ अज़मत हासिल होती है। यह तो देखो कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम पर किसी को शरफ व अज़मत में कोई बरतरी और बुलंदी हासिल नहीं वह

कौन है जो इन से बढ़ कर हो सके। यह तो एक बरकत का काम था जो मैंने अंजाम दिया। खुदावंदे आलम ने तो मुझ से ऐसे काम की तलब की थी कि मैं उस से सवाब हासिल कर सकूँ और फिर वह सुन्नत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम करार पा जाए। जो शख्स दीने इलाही में खालिस और पाकीज़ा नफ्स होता है तो उसके काम में कोई चीज़ खलल नहीं डाल सकती। खुदा ने इसलाम से तमाम नकाएस और ऊँच नीच को यकसर खत्म कर दिया और अज़ीज़ व ज़लील की तमीज़ उठादी। मुसलमान के लिए ज़ात पात का सवाल नहीं। यह सब ज़मानए जाहिलियत की फरसूदा बातें हैं अगर ऐब की कोई शै है तो वह कुफ्र है।

दूसरी रिवायत मैं है कि इमाम ने अब्दुल मलिक को यह भी तहरीर फरमाया कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम ने भी अपनी कनीज़ से और अपने गुलाम की मुतलेका ज़ौजा से तज़वीज की थी।

(बेहार सफहा १८४ ता १८५ जिल्द ६)

**नोट:**

बनू उम्मैया अहले बैत (अ.स.) के सख्त दुशमन थे जुमा के खुतबों में हज़रत अली अलैहिस्सलाम को गालियाँ देना उनकी आदत थी। उन दुश्मनाने अहलेबैत (अ.स.) की ज़ेहनियत यह थी कि गैर बरादरी में शादी करना ऐब है इसलाम ने इस तसव्वुर को खत्म किया और मोमिन मोमिना का कुफू करार पाया। इसलाम के इस हुक्म पर अहलेबैत (अ.स.) ने अमल करके दिखाया लेकिन आज अहलेबैत (अ.स.) की मोहब्बत का दावाकरने वाले सादात में बनू उम्मैया की ज़ेहनियत जड़ पकड़ गई है कि गैर बरादरी में शादी को उसी तरह तौहीन मेहसूस करते हैं जिस तरह कल अब्दुल मलिक ने तौहीन मेहसूस की। ज़रूरत इस बात की है कि इस ज़ेहनियत को खत्म किया जाए कल अगर इस ज़ेहनियत के लोगों को मैदाने हश्र

में बनू उमैया के पैरूकारों में खड़ा कर दिया जाए तो क्या होगा? उस का तसव्वुर आसानी से क्या जा सकता है। यह भी ज़हन में रहे कि अबदुल मलिक ही ने इमाम (अ.स.) को ज़हेर से शहीद कराया। बा अलफाज़ दीगर गैर बरादरी में शादी को तौहीन समझना इमाम के कातिल की पैरवी है जिस से हर मोमिन को बचना चाहिए। दूसरे यह कि मज़कूरा वाकेआत से कहीं यह साबित नहीं होता कि इमाम हर वक्त बीमार रहे ज़ाकेरीन का इमाम को बार बार बीमार इमाम कहना दुरुस्त नहीं आप सिर्फ करबला में बीमार हुए ज़िंदगी में एक मर्तबा कौन है जो बीमार नहीं होता तो क्या उसको बीमार का लक़ब दे दिया जाए?

## सादात की सज़ा व जज़ा:

बज़न्ती कहते हैं कि हज़रत इमाम अली रेज़ा अलैहिस्सलाम के सामने आप के बाज़ अहलेबैत (अ.स.) का ज़िक्र आ गया तो मैंने इमाम (अ.स.) से अर्ज़ किया के क्या आप के अहले बैत में हक का मुनकिर और आपके अलावा दूसरे लोगों में खुदा का ना फरमान बराबर हैं? और एक ही हैसियत रखते हुं (यानी आले रसूल स.अ. (सादात) के लोग और गैर आले रसूल (स.अ.) (गैर सादात) के गुनेहगार अफराद बा एतेबार गुनाह के एक ही सूरत में रहेंगे?

इमाम अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि ऐसा नहीं है हज़रत इमाम ज़ैनुल आबेदीन अलैहस्सलाम फरमाया करते थे कि हम में से (सादात में से) नेकी करने वाले की जज़ा दुगनी है और हम में से (सादात में) खुदा के नाफरमान और गुनेहगारों के गुनाह भी दुगने पड़ते हैं।

(बेहार सफहा २०९, जिल्द नं. ६)

# हज़रत इमाम मोहम्मद बाकिर अलैहिस्सलाम

## गुलामों के काम में हाथ बटानाः

इमाम जाफर सादिक अलैहिस्सलम फरमाते हैं कि मेरे पिदरबुज़ुर्गवार गुलामों को किसी काम का हुक्म नहीं देते थे बल्के यूँ फरमाते थे कि तुम जैसे चाहो करो और सूरत यह थी कि हज़रत जब यह मुलाहेज़ा फरमाते ते कि काम मुश्किल और भारी है तो बिस्मिल्लाह कह कर उनके साथ काम मे लग जाते थे और अगर वह काम सहल और आसान होता तो उन से अलाहेदा रेहते और उसकाम को उन्हीं पर छोड़ देते थे।

(बेहार सफहा ८३ हिस्सा चहारुम)

## ना वाकिफ अफराद को सलाम और मिज़ाज पुरसीः

अलकाफी मैं अबू उबैदा से मनक़ूल है कि वह कहते हैं कि मैं इमाम मोहम्मद बाकिर अलैहिस्सलाम के साथ अकसर सफर में रहा और मैं हमेशा रकाब थामता फिर आप सवार होते थे। जब हम रवाना होने लगते थे तो हज़रत इमाम का यह तरीक़ा था कि आप वहाँ नावाकिफ़ मौजूद लोगों को भी सलाम करते मिज़ाज पुरसी और दरयाफ्त एहवाल करते और मुसाफेहा करने के लिए हाथ बढ़ाते थे और जब किसी मंज़िल पर उतरते तो सलाम करते और हालात के बारे में इस्तिफसार फरमाते अबू उबैदा कहते हैं कि मैंने खिदमते इमाम में अर्ज़ किया के आप तो वह अजीब अमल बजा लाते हैं जो कोई नहीं करता। हज़रत ने इरशाद फरमाया तुम्हें मुसाफेहा के बारे में मालूम नहीं कि जब दो मोमिन आपस में मिलें और एक साथी दूसरे से मुसाफेहा करे तो उन दोनों के सारे गुनाह इस तरह झड़ जाते हैं जैसे पेड़ के पत्ते गिरते हैं खुदावंदे आलम उनपर उस वक्त

तक रहमत की नज़र फरमाता है जब तक एक दूसरे से जुदा हों।

(बेहार सफहा ८२ हिस्सा चहारुम)

## दूसरों की इमदाद में सब से आगे:

इमाम जाफर सादिक अलैहिस्सलाम से मनक़ूल है कि मेरे पिदरबुज़ुर्गवार अपने घर वालों में माली लेहाज़ से बहुत कमज़ोर थे लेकिन दूसरों के इखराजात बरदाश्त करने में सब से बढ़े हुऐ थे। हज़रत फरमाते हैं कि हर जुमा के दिन राहे खुदा में दीनार तसद्दुक क्या करते थे और फरमाते थे कि जुमा के दिन खैरात में दुगनी फज़ीलत है चूँकि जुमा को दूसरे दिनों पर फज़ीलत हासिल है।

(बेहार सफहा ७६, हिस्सा चहारुम)

## गुस्ताख ईसाई और इमाम अलैहिस्सलाम:

एक नसरानी ने इमाम मोहम्मद बाकिर अलैहिस्सलाम से कहा कि आप बकर (गाए) हैं तो हज़रत ने फरमाया नहीं मैं बाकिर हूँ। फिर वह नसरानी कहने लगा कि आप तबाखा (बावरचन) के बेटे हैं तो फरमाया कि यह तो उनका पेशा था। फिर बोला कि क्या आप हबशी औरत के फरज़ंद हैं तो इमाम ने इरशाद फरमाया कि अगर तू अपने कहने में सच्चा है तो खुदा उन्हें बख्श दे और अगर तू अपने इस कौल में झूठा है तो खुदा तुझे बख्श दे। रावी कहता है कि इमाम के उस बुलंद अखलाक से मुतास्सिर हो कर वह मुसलमान हो गया।

(बेहार सफहा ७२, हिस्सा चहारुम)

## वह कैसा बुरा भाई है:

हसन बिन कसीर से मनक़ूल है कि एक दफा मैंने इमाम मोहम्मद बाकिर अलैहिस्सलाम से अपनी मोहताजी के साथ अपने भाइयों की ला परवाही की शिकायत की तो इमाम ने फरमाया कि

वह कैसा बुरा भाई है जो तुम्हारी मालदारी की हालत में तो तुम्हारा ख्याल रखे और गुरबत व तंगदस्ती में तुम्हारा साथ छोड़ दे उसके बाद हज़रत ने अपने गुलाम को थैली लाने का हुक्म दिया जिस में सात सौ दिरहम थे और मुझ से इरशाद फरमाया कि जाओ इस रकम को खर्च में लाओ जब यह खत्म हो जाए तो मुझे इत्तेला करना।

(वेहार सफहा ७०, हिस्सा चहारुम)

## भाईयों और दोस्तों से सुलूकः

इमाम मोहम्मद बाकिर अलैहिस्सलाम की कनीज़ सलमा बयान करती है कि जब भी इमाम मोहम्मद बाकिर अलैहिस्सलाम की खिदमत में आप के भाई दोसत और एहबाब आते थे तो उस वक्त तक वापस नहीं जा सकते थे जब तक हज़रत उन्हों बेहतर खाना न खिला दें उमदा लिबास न दे दें और दिरहमों के अतिया से उन की खातिर मदारात न करलें मैंने हज़रत से उस में कमी करने के लिए अर्ज़ किया तो जो जवाब में फरमाया ऐ सलमा भाइयों और साथियों को बख्शिश करना दुनिया की नेकी है वह कहती हैं कि हज़रत इमाम पाँच छे सौ से लेकर हज़ार तक उन्होंने अता फरमाते थे और उन लोगों की सोहबत से अफसुर्दा दिल न होते थे और फरमाते थे कि तुम अपने किसी भाई के दिल में अपनी मोहब्बत का अन्दाज़ा करना चाहो तो यह देखो कि तुम्हारे दिल में उसकी कितनी मोहब्बत है आपके घर से साएल के लिए यह आवाज़ कभी नहीं सुनी गई कि ऐ साएल यह लेता जा हज़रत इमाम फरमाया करते थे कि उन्हें अच्छे नामों से याद क्या करो।

(बेहार सफहा ७३, हिस्सा चहारुम)

## ज़ीनत बराए अज़दवाजः

काफी में हकम बिन अतीबा से मरवी है कि वह कहते हैं कि एक दफा में इमाम मोहम्मद बाकिर अलैहिस्सलाम की खिदमत में हाज़िर हुआ उस वक्त आप उमदा रंगीन कमीस पहने हुए थे और घर मुज़य्यन व आरास्ता था और एक रंगीन चादर भी ज़ेब तन थी। चुनाँचे मैं घर की उस शक्ल व सूरत को देखता रहा तो हज़रत ने मुझ से फरमाया ऐ हकम इस लिबास के बारे में तुम्हारा किया ख्याल है? मैंने अर्ज़ किया कि हुज़ूर में क्या कह सकता हूँ सब कुछ मेरे सामने है लेकिन इतना समझता हूँ कि ऐसा लिबास एक ला परवाह किस्म का जवान ही पहनता है जिस पर हज़रत ने फरमाया ऐ हकम खुदा की मुक़र्रर करदा ज़ेब व ज़ीनत को कौन हराम कर सकता है जिसे उस ने अपने बंदों के लिए जाएज़ करार दिया है। लेकिन यह घर जो तुम देख रहे हो एक खातून का घर है जिन से थोड़ा अर्सा हुआ मेरी शादी हुई है और मेरे घर के बारे में तो तुम जानते ही हो कि कैसा घराना है।

(बेहार सफहा ७५ हिस्सा चहारुम)

(२) हसन ज़ियात बसरी से मरवी है वह कहते हैं कि एक दफा मैं अपने दोस्त के साथ इमाम मोहम्मद बाकिर अलैहिस्लाम की खिदमत में हाज़िर हुआ तो देखा कि हज़रत इमाम का घर मुज़य्यन व आरास्ता है। हज़रत गुलाबी रंग की चादर ओढ़े हुए हैं रीश मुबारक कतरी हुई और आँखों में सुरमा लगा हुआ है हम ने हज़रत इमाम से कुछ मसअले दरयाफ्त किए जबहम जाने के लिए खड़े हुए तो आप ने मुझ से फरमाया ऐ हसन तुम अपने दोस्त के साथ कल मेरे पास आना मैंने अर्ज़ किया कि मैं आप पर कुरबान हम कल ज़रूर हाज़िर होंगे। जब दूसरा दिन हुआ तो मैं हाज़िर हुआ देखा कि

हज़रत बोरिये पर तशरीफ फरमा हैं और मोटे कपड़े की कमीस पहने हुए हैं हज़रत इमाम मेरे साथी की तरफ मुतवज्जा होकर फरमाने लगे कि ऐ बरादर बसरी कल तुम मेरे पास आए थे। तो मैं अपनी ज़ौजा के घर में था कल उनकी बारी थी और घर भी उन्हीं का था और सारा साज़ व सामान भी वह मेरे लिए आरास्ता हुई तो मेरा फर्ज़ था कि मैं भी उनके लिए अपने आप को आरास्ता करूँ लिहाज़ा तुम्हारे दिल में कोई बात न आनी चाहिए। हसन कहते हैं कि मेरे दोस्त ने खिदतमे इमाम में अर्ज़ किया कि मैं आप पर कुरबान खुदा की कसम कल तो मेरे दिल में कुछ ख्यालात आए थे लेकिन अब खुदावंदे आलम ने वह सब मेरे दिल से निकाल दिये और मैंने यकीन कर लिया कि आप ने जो कुछ फरमाया वह हक है।

(बेहार सफहा ७५, हिस्सा चहारुम)

## रंज व गम के वक्तः

इमाम जाफर सादिक अलैहिस्सलाम से मनक़ूल है कि आप ने इर्शाद फरमाया कि मेरे पिदरे बुज़ुर्गवार को जब कोई रंज व गम लाहक होता था तो आप औरतों और बच्चों को जमा करके बारगाहे इलाही में दुआ करते थे और यह सब आमीन कहते थे।

(बेहार सफहा ७८ हिस्सा चहारुम)

## ज़िक्रे इलाहीः

इमाम जाफर सादिक अलैहिस्सलाम से मरवी है कि आप ने इरशाद फरमाया कि मेरे पिदरे बुज़ुर्गवार ज़िक्रे इलाही में ज़ियादा मशग़ूल रहते थे जब भी मैं आप के साथ चलता था तो आप की ज़िक्र खुदावंदी में मशग़ूलियत रहती थी और जब भी मैं आप के साथ खाना खाता था तो आप यादे इलाही में मसरूफ रहते थे आप

लोगों से गुफ्तगू फरमाते तो उस वक्त भी खुदा के ज़िक्र से गाफिल न होते थे मैं ने एक दफा देखा कि आप की ज़बान मुबारक तालू से लग गई उस वक्त भी ज़बान से ला इलाहा इल्लल्लाह का विर्द था। हज़रत फरमाते हैं कि पिदरे बुज़ुर्गवार हम सब को जमा करके हुक्म देते थे कि हम ज़िक्रे इलाही में मशगूल हों यहाँ तक कि सूरज निकल आए और साथ ही साथ उनको तिलावत का हुक्म देते थे जो हम में से पढ़ा हुआ होता था और जो हम से पढ़ा हुआ न होता तो उसे यादे इलाही बजा लाने में मशगूल रहने का हुक्म देते थे।

(बेहार सफहा ७८, हिस्सा चहारूम)

## रात को आने में देर हुई:

इमाम जाफर सादिक अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि मैं अपने पिदरे बुज़ुर्गवार के लिए बिस्तर बिछाया करता था और आप का मुन्तज़िर रहता जब आप बिस्तर पर लेट जाते और सोने लगते थे तो मैं अपने बिसतर पर आजाता था। एक रात आप को आने में देर हो गई तो मैं आप की तलाश में मस्जिद की तरफ आया और यह वह वक्त था कि तमाम लोग आराम में थे। मैंने देखा कि पदर बुज़ुर्गवार सजदे में हैं और आप के अलावा मस्जिद में कोई नहीं है। मैंने आप की आवाज़ सुनी कि आप बारगाहे इलाही में यूँ अर्ज़ कर रहे हैं कि परवरदिगार तू पाक व पाकीज़ा है तू ही मेरा रब है मैं तुझेही सजद-ए-बंदगी कर रहा हूँ पालने वाले मेरा अमल कमज़ोर है तू उसे मेरे लिए दो चंद करदे और ज़ियादती अता फरमा बारेइलाहा हशर के दिन मुझे अपने अज़ाब से मेहफूज़ रख मेरी तौबा क़बूल फरमा तू रहीम है और तू ही तौबा का क़बूल करने वाला है।

(बेहर सफहा ८१ हिस्सा चहारूम)

## बे मकसद सवाल करने की मुमानेअतः

इब्ने अबी याफूर से मनक़ूल है कि मैंने इमाम जाफरे सादिक (अ.स.) की खिदमत में अर्ज़ किया कि मुमकिन नहीं है कि हुज़ूर मुझे हर वक्त मुलाकात का शरफ़ और हुज़ूर की खिदमत में मेरा पहुंचना मुमकिन है मेरे पास आने वाले दोस्त मुझ से मसाएल दरयाफ्त करते हैं और मैं हर मसअले का जवाब नहीं दे सकता हूँ लिहाज़ा क्या करूँ? इमाम ने फरमाया कि मोहम्मद बिन मुसलिम सक़फी से उन मसाएल के जवाबात मालूम करने में तुम्हें क्या अम्र माने हैं? उन से पूछ लिया करो वह तो बहुत कुछ अहादीस मेरे पिदरे बुज़ुर्गवार से सुन चुके हैं और उनकी पसंदीदा शख्सियत रहे हैं वह हर मसअले में तुम्हारी रहनुमाई कर सकते हैं।

(बेहारुल-अनवार, सफहा १०७, हिस्सा चहारम)

उन्हीं मुसलिम ने एक दिन इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से बे मकसद सवाल किया तो इमाम ने उन को जवाब नहीं दिया उस का वाकेआ खुद मोहम्मद बिन मुस्लिम की ज़बान से सुनिए।

मोहम्मद बिन मुस्लिम से मनक़ूल है कि वह कहते है कि एक दफा मैंने इमाम मोहम्मद बाकर अलैहिस्सलाम से अर्ज़ किया कि मैं आप पर कुरबान यह तो फरमाइये कि सूरज सर पर आकर ठहरता हुआ क्यूँ मालूम होता है तो इमाम ने फरमायाः

''ऐ मोहम्मद तुम्हारा यह सवाल कैसा अदना और बे मकसद है। जिस के बाद तीन दिन तक हज़रत ने मुझ से कलाम नहीं किया और चौथे रोज़ फरमाया कि तुम इस लाएक हो कि तुम्हें इसका जवाब न दिया जाए।

(बेहार सफहा १०६ हिस्सा चहारुम)

**नोटः**

आज के मोमेनीन भी बे मकसद सवाल करने के मर्ज़ में मुब्तेला हैं बे मकसद सवालात करके यह ज़ाहिर करना होता है कि हम बहुत काबिल हैं और मौलवी साहब हमारे सवालात के जवाब देने से आजिज़ हैं। उनके सवालात करने का दरपरदा एक मकसद और होता है वह यह कि यह अफराद अपनी बे अमली और बे दीनी को छिपाते हैं। उनके सवालात कुछ इस किस्म के होते हैं मसलन ''चाँद पर नमाज़ किस तरफ मुँह करके पढ़ी जाएगी? या यह कि मय्यत को गुस्ल जनाबत क्यूँ दिया जाता है? या यह कि कुरआन में डाढ़ी कहाँ है? या यह कि कुरआन में जब हर खुश्क व तर मौजूद है तो कुरआन में अंग्रेज़ी कहाँ है? वगैरह वगैरह। चाँद पर नमाज़ की फिक्र करने वाले वह अफराद हैं जो इस धर्ती पर नहीं पढ़ते हैं। गुस्ल मय्यत की वेहशत उन अफराद को है जिन्होंने कभी किसी मय्यत को गुस्ल नहीं दिया। अगर गुस्ल दिया होता तो यह जानते कि मय्यत को गुस्ल जनाबत नहीं दिया जाता है। कुरआन में डाढ़ी के मुतलाशी को जब डाढ़ी दिखाई जाती है तो उनका जवाब होता है कि ज़ोर देकर नहीं बयान किया गया है। जब उन से कहा जाता है कि कुरआन एहकाम व अकाएद की किताब है दुनिया की ज़बानों का इन्साइकलोपीडिया नहीं। एहकाम व अकाएद का हर खुश्क व तर कुरआन में मौजूद है। उसके बाद भी उन अफराद की कट हुज्जती में कोई कमी नहीं होती है ऐसे अफराद के लिए इमाम की सीरत मौजूद है कि न उनको जवाब दिया जाए और न उनसे कलाम किया जाए।

# हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ (अलैहिस्सलाम)

## फितरे की अहमियतः

मोतब का बयान है कि हज़रत अबू अबदिल्लाह अलैहिस्सलाम ने मुझे हुक्म दिया कि जाओ मेरे तमाम अहल व अयाल और तमाम गुलामों की तरफ से फितरा निकाल दो किसी एक को भी न छोड़ना। अगर एक को भी छोड़ा तो डर है कि कहीं वह (अचानक) फौत न हो जाए।

मैंने अर्ज़ किया, फौत होने का क्या मतलब?

आप (स.अ.) ने फरमाया फौत से मुराद मौत है।

(बेहार सफहा ४२ जिल्द ८)

## सरमाया मुख्तलिफ मकामात पर रखोः

मोअम्मिर बिन खलाद का बयान है मैंने हज़रत इमाम अबुल हसन अलैहिस्सलाम को फरमाते हुए सुना कि एक शख्स हज़रत इमाम जाफरे सादिक अलैहिस्सलाम के पास नासेह बन कर आया और कहने लगा कि आप अपनी रुक़ुम को एक जगेह क्यूँ नहीं रखते मुख्तलिफ मक़ामात पर मुन्तशिर करके क्यूँ रखते हैं अगर यह सब रुकूम एक जगह रखते तो उनका इस्तेमाल आसान होता और फायदा भी ज़ियादा होता।

आप ने इरशाद फरमाया, अगर एक जगह की रकम पर कोई आफत आए तो दूसरी जगह की रकम तो सलामत रहे और थैली तो सब को एक जगह जमा कर ही लेती है।

(बेहार सफहा ६१ जिल्द ८)

## मेहंगाई हो गईः

जहेम बिन अबी जहेम का बयान है कि हज़रत अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम (इमाम सादिक अलैहिस्सलाम) ने अपने गुलाम मोतब से कहा मदीना में चीज़ों के दाम बहुत बढ़ गए हैं

हमारे पास खाने का सामान कितना है?

मोतब ने कहा इतना है कि कई महीने के लिए काफी है।

आप ने फरमाया उसे निकालो और फरोख्त कर दो।

मोतब का बयान है कि मैंने अर्ज़ किया, मगर मदीना में खाने पीने का सामान बिलकुल नहीं है आप (अ.स.) ने फरमयाा न हो उसे फरोख्त करदो।

जब मैंने सब फरोख्त कर दिया तो फरमयाा ऐ मोतब! तुम भी अब और लोगों की तरह रोज़ का सामान रोज़ खरीदा करो। यह भी फरमाया कि ऐसा करो कि मेरे अयाल की खूराक में आधा जौ और आधा गेहूँ कर दो। अल्लाह जानता है कि मैं इतना रखता हूँ कि अपने अयाल को गेहूं खिलादूँ लेकिन मैं यह चाहता हूँ कि अल्लाह यह भी देख ले कि मैं मईशत में किफायत शेआरी से काम ले रहा हूँ और उस में तवाज़ुन पैदा कर रहा हूँ।

(बेहार सफा ६२ ता ६३ जिल्द ८)

## जिस चीज़ पर तसर्रुफ न हो उसका वादा न किया जाए:

उमर बिन यज़ीद का बयान है कि हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक अलैहिस्सलाम के पास एक शख्स कुछ रकम माँगने आया मैं भी वहाँ मौजूद था। आप (अ.स.) ने फरमाया आज तो मेरे पास कुछ नहीं है। अलबत्ता कुछ खतर और वसीमा आने वाला है वह फरोख्त करके तुम्हें कुछ दे दूँगा इंशाअल्लाह। उस शख्स ने कहा फिर आप (अ.स.) मुझ से वादा करें।

आप (अ.स.) ने फरमाया मैं तुम से उस चीज़ का कैसे वादा करलूँ जो मेरे कबज़े व तसर्रुफ में न हो। जिस कदर मुझे उम्मीद है उतनी ही मुझ से तुम भी उम्मीद रखो।

(बेहार सफहा ६१ जिल्द ८)

## हलाल रोज़ी हासिल करना जेहाद से ज़ियादा मुश्किल:

अबू जाफर फराज़ी का बयानहै कि हज़रत अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम (इमाम सादिक अलैहिस्सलाम) ने अपने गुलाम मसारिफ को तलब किया और उसे एक हज़ार दीनार दिए और फरमाया इसका सामाने तिजारत खरीदो औ मिस्त्र ले जाओ। इस लिए कि (बगैर उसके मईशत में इज़ाफा न होगा) मेरे अयाल और मुतअल्लेकीन ज़ियादा हो गए हैं।

लिहाज़ा उसने सामाने तिजारत खरीदा और दूसरे ताजिरों के हमराह सफर पर गया। जब मिस्त्र के करीब पहुंचा तो एक काफेला जो मिस्त्र से बाहर ठेहरा हुआ था उस से पूछा कि हमारे पास जो सामाने तिजारत है उस का उस शहेर में क्या हाल है? उन्होंने बताया कि यह सामान तो मिस्त्र में नायाब है। चुनाँचे उन्होंने आपस में एक हलफिया मुआहेदा किया कि हम लोग अपना सामान सौ फीसद मुनाफे से कम पर फरोख्त न करेंगे।

जब यह लोग सामान फरोख्त करके उसकी कीमत सौ फी सद नफा के साथ वुसूल कर चुके तो मदीना वापस आए और मसारिफ वह रकम ले कर हज़रत अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम की खिदमत में आए उसके पास हज़ार दीनार की दो थैलियाँ थीं। अर्ज़ किया, मैं आप पर कुरबान जाऊँ उस एक थैली में तो आपका रासुल माल (असल रकम) और दूसरी थैली में उसका नफा है।

आप (अ.स.) ने फरमाया कि यह नफा तो बहुत ज़ियादा है। यह बताओ कि तुम लोगों ने इतना ज़्यादा मुनाफा किस तरह हासिल किया? तब मसारिफ ने हलफिया मुआहेदा वगैरह के बारे में बताया।

आप ने फरमाया, सुबहानल्लाह! तुम लोगों ने एक मुसलमान कौम से इस कद्र कसीर नफा हासिल कर लिया जो हर गिज़ जाएज़ नहीं। फिर आप ने इस में से एक थैली लेकर फरमाया, मेरा रासुल माल (असल रकम) है मगर उस का नफा मुझे नहीं चाहिए ऐ

मसारिफ गौर से सुनो! हलाल रोज़ी कमाने से ज़ियादा आसान तलवार से जेहाद करना है।

(बेहार सफहा ६१ ता ६२ जिल्द ८)

## सदके की बरकत से रोज़ी में वुसअतः

हारून बिन ईसा का बयान है कि एक मर्तबा हज़रत इमाम जाफर सादिक अलैहिस्सलाम ने अपने फरज़ंद मोहम्मद से दरयाफ्त किया कि तुम्हारे पास फलाँ खर्च से कितनी रकम बची है। उन्होंने कहा चालीस दीनार। आप ने फरमाया उसे निकालो और तसद्दुक करो। मोहम्मद ने कहा मगर उसके सिवा मेरे पास कुछ भी नहीं है। आप ने फरमाया तसद्दुक करदो अल्लाह देगा। क्या तुम्हें नहीं मालूम कि हर शै की एक कुंजी होती है और रिज़्क की कुंजी सदका है लिहाज़ा उस को तसद्दुक करदो।

चुनाँचे उन्होंने ऐसा ही किया और अभी तसद्दुक किए हुए सिर्फ दस दिन ही गुज़रे थे कि इमाम जाफर सादिक़ अलैहिस्सलाम के पास एक जगह से चार हज़ार दीनार आ गए।

आप ने फरमाया ऐ फरज़ंद देखो हम ने अल्लाह की राह में चालीस दीनार दिए थे और अल्लाह तआला ने हमें चार हज़ार दीनार अता कर दिए।

(बेहार सफहा ३९ ता ४० जिल्द ८)

## 'साद व नहेस' और सदकाः

इमाम जाफर सादिक अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि मेरे एक दूसरे शख्स के दरमियान ज़मीन की तकसीम का मामला था। वह नुजूमी था और इल्म नुजूम के हिसाब से नेक साअत देख कर घर से निकला जब ज़मीन के दो हिस्से हुए और क़ुरा अन्दाज़ी हुई तो ज़मीन का अच्छा मेरे नाम निकला। यह देख कर नुजूमी हाथ मल कर रह गया और बोला कि आज के दिन जैसा नेक दिन मैं ने कोई

नहीं देखा फिर यह किया हो गया (यानी खराब ज़मीन मेरे हिस्से में क्यूँ आई)

मैंने कहा उस के मुताल्लिक तुम्हें बताऊँ?

उसने कहा मैं नुजूमी हूँ मैंने आप को नहेस साअत में घर से बुलाया और खुद अच्छी साअत देख कर घर से निकला था मगर जब तकसीम हुई तो अच्छा हिस्सा आप (अ.स.) के नाम निकल आया।

मैंने कहा किया मैं तुम्हें एक हदीस सुनाऊँ जो मेरे पिदरे बुज़ुर्गवार ने मुझे सुनाई थी कि जनाबे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम ने इरशाद फरमाया कि "जो चाहता है कि अल्लाह तआला उस के लिए उस दिन की नहूसत को दूर करदे तो उसे चाहिए कि अपने उस दिन की इब्तेदा सदके से करे तो अल्लाह उस दिन की नहूसत से दूर करदेगा और जो चाहता है कि उस के लिए उस रात की नहूसत उस से दूर करदे तो उसे चाहिये कि वह रात का इफ्तेताह सदके से करे अल्लाह उस रात की नहूसत उस से दूर करदेगा। लिहाज़ा मैंने अपने निकलने के वक्त सदका दे कर नहूसत को रफा कर दिया और यह चीज़ (यह अमल) तुम्हारे लिए नुजूम से बेहतर है।

(बेहार सफहा ४० जिल्द ८)

## नोटः

मज़कूरा रिवायत ज़ाहिर कर रही है कि सअद व नहेस की फिक्र करने के बजाए सदका देकर अपना काम करना चाहिए इन्शाअल्लाह उस में बरकत होगी। यह जो हमारे दौर में जंतरी वालों ने सअद व नहेस के गोरख धंदे में मोमेनीन को उलझा रखा है और केलंडर शाए करने वालों ने केलन्डरों में सअद व नहेस शाए करके वहमियात का बाब खोल दिया है उस से परहेज़ लाज़िम है किसी मासूम ने सअद व नहेस पर अमल नहीं किया और न करने की

ताकीद की। सअद व नहेस की अगर रिवायत मौजूद हैं तो उसपर तेहकीक से साबित हो गया है कि सनद के एतेबार से वह रिवायात मोतबर नहीं हैं। मोमेनीन को चाहिए कि ऐसे केलंडर और ऐसी जंतरियाँ न खरीदें जिन में सअद व नहेस का तज़केरा हो। अय्यार अफराद ने जनतरियों को मज़हबी शनाखत देकर मोमेनीन को परेशान करने का ''मज़हबी'' रास्ता इख्तियार किया है। ऐसे अफराद का बाइकाट ज़रूरी है।

## गर्म खाना:

मोहम्मद बिन राशिद का बयान है कि मैं मौसमे गरमा में एक बार इशा के वक्त हज़रत इमाम जाफर सादिक़ अलैहिस्सलाम की खिदमत में हाज़िर था कि इतने में एक ख्वान आया जिस में रोटियाँ एक पयाला सरीद और हिरन का गोश्त था। आप (अ.स.) ने उस में हाथ डाला तो मेहसूस किया कि गर्म है आप ने हाथ उठा लिया और फरमाया मैं जहन्नम से अल्लाह की पनाह चाहता हूँ, हमें अल्लाह जहन्नम से बचाए। जब हम उस गरम सालन की गरमी को बरदाश्त नहीं कर सकते हैं तो जहन्नम की गरमी तो अलअमानो अल-हफीज़ आप बार बार यही फरमाते रहे यहाँ तक प्याला ठंडा हो गया। फिर हम सब ने आपके साथ खाना खाया। उसके बाद ख्वान उठा लिया गया। आप ने गुलाम से फरमाया कुछ और लाओ वह एक तबक में खजूर लाया। मैंने हाथ बढ़ाया तो देखा खजूर हैं। मैंने अर्ज़ किया कि अल्लाह आप का भला करे यह ज़माना तो अंगूर और दूसरे फलों का है (खजूर का नहीं है) आप ने फरमाया हाँ यह खजूर है।

(बेहार सफहा ३९ जिल्द ८)

## सवाल से पहले अता:

ज़ेहली से रिवायत है कि उस का बयान है कि हज़रत अबू

अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने फरमाया : ''एहसान व अता वही उमदा है जो सवाल से पहले ही कर दिया जाए। क्यूँकि सवाल के बाद अगर तुम ने किसी को कुछ दिया तो वह एह्सान नहीं बल्कि वह साएल के चेहरे के आब की कीमत है जो उसने तुम्हारे सामने पेश किया है। वह रात भर जागा है करवटें बदली हैं उम्मीद और मायूसी के आलम में रहा है उस की समझ में नहीं आता था कि वह अपनी हाजत किस के सामने पेश करे, बिल आखिर बहुत कुछ सोचने के बाद वह तुम्हारे पास आया फिर भी उस का दिल लरज़ रहा था, उस का जिस्म काँप रहा था। तुम उसके चेहरे का रंग देख रहे थे कि उस को पता नहीं था कि वह तुम्हारे पास से मायूस जाएगा या कामयाब होकर पलटेगा।

(बेहार सफहा १४ जिल्द ८)

**नोट:**

मोमेनीन को चाहिए कि करीब व दूर के मोमेनीन का ख्याल रखें और अगर किसी मोमिन को परेशान देखें तो अल्लाह के लिए उस की मदद इस तरह करें कि आप दाएँ हाथ से दें तो बाएं हाथ को खबर न हो। और उसकी इमदाद के बाद ता हयात एक हरफ भी ज़बान पर न लाएं अगर आप ने उस का इज़हार किया तो आप सवाब से मेहरूम हो गए और आप के इज़हार से अगर मोमिन की दिल आज़ारी हुई तो मोमिन की दिल आज़ारी का गुनाह भी आप के आमाल नामे में दरज होगा और कयामत में खसारे का सामना करना पड़ेगा।

## रसूल (स.अ.) की वजह से आल (अ.स.) रसूल (स.अ.) का लेहाज़ करो:

बज़दून बिन शबीब नहदी जिस का नाम जाफर था का बयान है कि मैंने हज़रत जाफर बिन मोहम्मद अलहिस्सलम को फरमाते

हुए सुना कि तुम लोग हम अहले बैत के हक की इसी तरह हिफाज़त करो जिस तरह अब्दे सालेह (हज़रत खिज़्र (अ.स.)) ने दो यतीम बच्चों के हक की हिफाज़त की थी। (सूरए कहेफ आयत ८२)। सिर्फ इस बिना पर कि उन दोनों यतीमों का बाप मर्दे सालेह था।

(बेहार सफहा ३३ जिल्द ८)

## मोमेनीन में सुलहः

अमीर हुज्जाज अबू हनीफा का बयान है कि मेरे और मेरे दामाद के दरमियान एक मीरास के सिलसिले में इख्तेलाफ था, उधर से मुफज़्ज़ल का गुज़र हुआ तो वह कुछ देर हमारे पास खड़े रहे फिर कहा देखो झगड़ा न करो मेरे घर आओ हम लोग उन के घर पहुंचे तो चार सौ दिरहम पर उन्होंने हमारी सुलह करादी और यह रकम भी अपने पास से अदा की। फिर हम दोनों एक दूसरे से मुतमइन हो गए तो उन्होंने कहा कि सुनो! यह रकम मेरी नहीं है बल्कि हज़रत अबू अब्दिल्लाह इमाम जाफर सादिक अलैहिस्सलाम का हुक्म है कि अगर हमारे असहाब में से दो आदमियों में कोई माली तनाज़ेआ हो तो मेरे माल में से देकर उनका झगड़ा चुका दो। यह रकम दर अस्ल हज़रत अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम की है।

(बेहार सफहा ५९ ता ६० जिल्द ८)

## पसीना खुश्क होने से पहलेः

हन्नान बिन शुऐब से रिवायत है कि उस का बयान है कि हज़रत अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम के बाग़ में काम करने के लिए हमारे एक गिरोह को रोज़ाना मज़दूरी पर रखा गया और काम का वक्त अस्र तक था। जब सब लोग काम करके फारिग़ हुए तो आप ने मोतब से फरमाया उनका पसीना खुश्क होने से कब्ल उनकी मज़दूरी अदा करो।

(बेहार सफाह ५९, जिल्द ८)

# हज़रत इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम

## अपनी ज़मीनों पर कामः

अबू हमज़ा ने अपने बाप से रिवायत की है कि उस के बाप का बयान है कि मैंने हज़रत अबुल हसन अलैहिस्सलाम (इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम) को देखा कि आप अपनी ज़मीनों पर काम कर रहे हैं और सर से पाऊँ तक पसीने में तर हैं मैंने अर्ज़ किया मैं आप पर कुरबान और आदमी कहाँ हैं? आप ने फरमाया कि ऐ अली अपनी ज़मीनों पर काम खुद अपने हाथों से तो उन लोगों ने भी किया है जो मुझ से बेहतर थे। मैंने पूछा वह कौन लोग हैं? फरमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम और अमीरल मोमेनीन अली इब्ने अबी तालबि अलैहिस्सलाम बल्कि मेरे आबाए केराम खुद अपने हाथों से करते थे। यह अँबिया सालेहीन का काम है।

(बेहार सफहा १३७ जिल्द ७)

## अफ्व व दरगुज़रः

मोतब का बयान है कि हज़रत इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम अपने बाग में थे और दरख्तों से फल उतारे जा रहे थे। उसी वक़्त मैने देखा कि एक गुलाम ने खजूरों की एक गठरी उठा कर बाग़ की चहार दिवारी के बाहर फैंक दी तो मैं फौरन गया और वह गठरी उठा कर आप के सामने पेश की और कहा मौला आप पर कुरबान यह खजूरों की गठरी मुझे बाग के बाहर मिली है (जो आप के उस गुलाम ने फेंकी है) आप ने आवाज़ दी ऐ गुलाम उस ने कहा लब्बैक फरमाया क्या तुम भूके हो? उसने कहा नहीं। फरमाया नंगे हो? कहा नहीं फरमयाा फिर तुम ने यह क्यूँ ली?

उसने कहा बस मेरा जी चाहा था आप ने फरमाया अच्छा जी चाहा था तो यही सही अब तेरी है ले जा। यह कह कर खजूरों की गठरी उसको देदी।

(बेहार सफहा १३७ जिल्द ७)

## जश्ने नौ रोज़ की शरई हैसियत:

एक मर्तबा खलीफा मनसूर ने हज़रत इमाम मूसा बिन जाफर अलैहिस्सलाम से कहा कि आप यौम नौरोज़ लोगों से तेहनियत लें और नज़राने कबूल करें आप ने फरमाया कि मैंने अपने जद्दे अमजद रसूल मकबूल सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम की रिवायत में बहुत तलाश किाय मगर इस ईदे नौरोज़ के मुताल्लिक हमें कोई रिवायत नहीं मिली यह अहले फारस की रस्म है जिसे इसलाम ने मिटा दिया है। और जिस चीज़ को इसलाम ने मिटा दिया है उसको मैं अज़ सरे नौ ज़िंदा करूँ? मा ज़ल्लाह।

(बेहार सफहा १२९ जिल्द ७)

## हसीन व जमील औरत के ज़रिये जाल और इमाम की मदद:

इब्ने अबी हमज़ा का एक शीआ दोस्त था उस का ब्यान है कि एक दिन में अपने घर से निकला तो एक निहायत हसीन व जमील औरत नज़र आई और उसके साथ एक दूसरी औरत भी थी। (उस औरत की नाज़ व अदा से मुतास्सिर होकर) मैं उसके पीछे हो लिया और मौका पाकर पूछा क्या तुम मुझ से मुता के लिए राज़ी हो? यह सुन कर वह मेरी तरफ मुतवज्जे हुई और बोली, अगर तुम्हारे पास कोई हमारी हम जिन्स है तो हमें ना मन्ज़ूर है वर्ना आओ हमारे साथ, मैंने कहा, मेरे पास कोई ज़ौजा नहीं है यह सुन कर वह मेरे साथ चल दी और मेरे मकान में दाखिल हुई अभी उस

ने अपने पाऊँ का एक ही मोज़ा उतारा था कि दरवाज़े पर दस्तक हुई। मैं बाहर निकला तो देखा कि मौफक़ है। मैंने पूछा क्या बात है? उसने कहा कि हज़रत अबुल हसन अलैहिस्सलाम (इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलम) ने फरमाया है कि वह औरत जो तुम्हारे साथ उस वक्त घर में है उसे बाहर निकाल दो और उसे हाथ भी न लगाना।

यह सुन कर मैं अन्दर गया और उस औरत से कहा, अपने मोज़े पहनो और बाहर जाओ। उसने अपना मोज़ा पहना और बाहर निकल गई। मोफिक़ ने मुझ से कहा कि अन्दर से दरवाज़ा बंद करलो। मैंने दरवाज़ा बंद कर लिया फिर खुदा की कसम अभी उस औरत को गए हुए थोड़ी देर हुई थी मैं दरवाज़े पर कान लगाए खड़ा था कि एक फितना परवाज़ शख्स आकर उस औरत से मिला और बोला, तू इतनी जल्दी बाहर क्यूँ निकल आई? क्या मैंने तुझ से नहीं कहा था कि हर गिज़ बाहर न निकलना। उस औरत ने जवाब दिया क्या बताऊँ उस जादूगर का क़ासिद आ गया और उसने हुक्म दिया कि उस औरत को निकाल दो इस लिए उसने निकाल दिया।

रावी कहता है कि मैं इशा के वक्त में हज़रत अबुल हसन अलैहिस्सलाम की खिदमत में हाज़िर हुआ आप ने फरमाया कि वह औरत बनी उमय्या के एक लानती घराने की थी उसके पास फिर न जाना लोगों ने उसे भेजा था और चाहा था कि उसे तुम्हारे मकान से बर आमद करें। खुदा का शुक्र है कि उस ने उस औरत को बाहर निकाल दिया।

(बेहार सफहा ८२ जिल्द ७)

## वह मेरा शीआ नहीं:

मराज़म का बयान है कि मैं मदीना गया और जिस सराए में कयाम किया उस में देखा कि एक कनीज़ है वह मुझे पसंद आई मैंने चाहा उस से मुता कर लूँ। मगर उसने इन्कार किया। इशा के बाद मैं फिर उसके पास पहुंचा दरवाज़े पर दस्तक दी तो उसी कनीज़ ने दरवाज़ा खोला फिर वह मुझे जल्दी से अन्दर ले गई।

अलगरज़ जब सुब्ह हुई और मैं हज़रत अबुल हसन अलैहिस्सलाम की खितमद में हाज़िर हुआ तो आप ने फरमाया ऐ मराज़म मेरा शीआ वह नहीं है जिस का दिल तखलिया में खौफ न करे।

(बेहार सफहा ६५ जिल्द ७)

## ज़ालिम हुकूमत में मुलाज़ेमत:

अली बिन यक़तीन का बयान है कि मैंने हज़रत अबुल हसन अलैहिस्सलाम से दरयाफ्त किया कि आप उन लोगों की मुलाज़ेमत के लिए क्या फरमाते हैं? आप ने फरमाया अगर यह अमल (मुलाज़ेमत) लाज़मी और मजबूरन करना ही पड़े तो शीओं के अमवाल से खुद को बचाओ। उसके बाद अली बिन यक़तीन का दस्तूर था कि शीओं से बिल एलान तो खराज वसूल करते थे मगर दरपर्दा उन्हें वापस कर देते थे।

(बेहार सफहा १८३ जिल्द ७)

## ज़ालिम हुकूमत में मुलाज़ेमत (२):

ज़ियाद बिन अबी सलमा से रिवायत है कि एक मर्तबा में हज़रत अबुल हसन मूसा रिज़ा अलैहिस्सलाम की खिदमत में हाज़िर हुआ तो आपने दरयाफ्त फरमाया कि ऐ ज़ियाद तुम बादशाहे वक्त

की मुलाज़ेमत करते हो? मैंने कहा जी हाँ! फरमाया क्यूँ? मैंने अर्ज़ किया कि क्या करूँ मेरी बीवी है बच्चे हैं मेरे पास कोई सरमाया नहीं कोई और ज़रिये मआश नहीं। फरमाया ऐ ज़ियाद अगर मैं किसी ऊँचे पहाड़ से ऐसा गिरूँ कि मेरे जिस्म के टुकड़े टुकड़े हो जाएं तो यह मुझे ग्वारा है ब निसबत उसके कि उनमें से किसी एक की मुलाज़ेमत करूँ या उस में से किसी के दरबार में जाऊं मगर फिर भी अगर करूँगा तो किसी मर्द मोमिन की मुसीबत दूर करूँ या किसी कैदी को रिहा कराऊं या किसी मकरूज़ का कर्ज़ अदा करूँ। ऐ ज़ियाद जो लोगं सुलतान जाबिर व ज़ालिम की मुलाज़ेमत करते हैं उन की कम से कम सज़ा यह होगी कि अल्लाह तआला तमाम खलाएक के हिसाब व किताब से फारिग़ होने तक उन लोगों पर आग के परदे डाले रखेगा।

लिहाज़ा ऐ ज़ियाद अगर तुम ने उन की कोई मुलाज़ेमत कर ही ली तो अपने भाइयों (मोमेनीन) में से हर एक से हुस्ने सुलूक करो और उसके बाद अल्लाह है जो गफूरुर रहीम है। और ऐ ज़ियाद अगर तुम में से कोई शख्स उनकी मुलाज़ेमत करे और फिर सब को एक ही लाठी से हाँके (मोमेनीन और गैर मोमेनीन के साथ यकसाँ सुलूक करे) तो उस से कह दो कि तेरा दावा गलत है तु यगाना नहीं है बेगाना है तु अपना नहीं गैर है। ऐ ज़ियाद! जब कभी तुम्हारे ज़हन में यह आए कि मुझ को लोगों पर इस कदर इक्तेदार हासिल है तो उसी वक्त यह भी सोच लो कि कल क्यामत के दिन अल्लाह को मुझ पर किता इक्तदार होगा और आज जो अपना इक्तेदार उन लोगों पर सर्फ कर रहे हो तो वह चंद दिनों में खत्म हो जाएगा मगर उस का गुनाह तुम्हारे ऊपर हमेशा हमेशा के लिए रह जाएगा।

(बेहार सफहा १९७ ता १९८ जिल्द ७)

## मोमेनीन को फाएदा पहुंचाने की नीयत से ज़ालिम हुकूमत की मुलाज़ेमत करोः

अबू अली बिन ताहिर का बायन है कि अली बिन यकतीन ने मेरे मौला अबुल हसन मुसा काज़िम अलैहिस्सलाम से बादशाहे वक्त की मुलाज़ेमत छोड़ने की इजाज़त चाही तो आप ने इजाज़त नहीं दी और फरमाया ऐसा न करो। हम लोगों को तुम से उन्स है उस मुलाज़ेमत की वजह से तुम्हारी कौम की इज़्ज़त है और हो सकता है कि अल्लाह तुम्हारे ज़रिये टूटी हुई हड्डी को जोड़ दे और मुखालेफीन के भड़काए हुए शोलों का ज़ोर तोड़ दे और अल्लाह के चाहने वालों को कोई नुक़सान न पहुंच सके। ऐ अली तुम्हारे इस अमल (मुलाज़ेमत) का कफ्फारह यह है कि तुम अपने भाइयों के साथ हुस्ने सुलूक और एहसान करो, अच्छा तुम मुझे एक अम्र की ज़मानत दो मै तुम्हें तीन बातों की ज़मानत देता हूँ तुम इस अम्र की ज़मानत दो जब भी मेरा कोई दोस्त (शीआ) किसी ज़रूत के लिए तुम से मिले तो तुम उस से इज़्ज़त से पेश आओ और उसकी हाजत पूरी करोगे और मैं उस अम्र की ज़मानत लेता हूँ कि किसी कैद खाने की छत तुम पर ता अबद साया न करेगी और किसी तलवार की हिद्दत तुम तक न पहुंचे गी और फक्र व इफलास तुम्हारे घर में कभी दाखिल न होगा। ऐ अली याद रखो कि जब कोई शख्स किसी बंदे मोमिन को खुश करता है तो उस के नतीजे में पहले अल्लाह उस से खुश होता है फिर उसका रसूल (स.अ.) उस से खुश होता है फिर हम लोग उस से खुश होते हैं।

(वेहार सफहा १६३ जिल्द ७)

## गुलामों और कनीज़ों पर नज़र:

एक मर्तबा इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम छत पर सो रहे थे कि यक ब यक जल्दी से उठे और वहाँ पहुंचे जहाँ दो गुलाम दीवार के उस पार मौजूद दो कनीज़ों से बात कर रहे थे (हालांकि उनके दरमियान में दीवार हाएल थी उसके बावजूद) आप ने सुब्ह को उन दोनों गुलामों को एक शहर में और उन दोनों कनीज़ों को दूसरे शहर में फरोख्त करने के लिए रवाना कर दिया और उन्हें फ़रोक्त करा दिया।

(बेहार सफहा १४१ जिल्द ७)

## माले खुम्स:

हज़रत इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि एक मर्तबा हारून रशीद ने मुझ से पूछा कि तुम लोग यह कहते हो कि माले खुम्स हम लोगों क हक़ है? मैं ने कहा हाँ उस ने कहा मगर यह तो बहुत है। मैंने कहा मगर जिस ज़ात ने हम लोगों को खुम्स का हक दिया उस की नज़र में बहुत नहीं है।

(बेहार सफहा १८३ जिल्द ७)

## मुत्तकी शीओं के जनाज़ों में इमाम की शिरकत:

नीशापुर के (कमज़ोर ईमान) शीओं का एक गिरोह जमा हुआ और मोहम्मद बिन अली नीशापुरी को अपना फरस्तादा मुन्तखब किया और उसको तीस हज़ार दीनार और पचास हज़ार दिरहम और कपड़े का एक थान दिया। उन लोगों के सामान के साथ साथ शतीता नाम की एक गरीब मुख्लिस दीनदार शीआ औरत ने भी एक दिरहम और अपने हाथ के कते हुए सूत का मोटा छोटा सा इज़ार जो ज़ियादा से ज़ियादा चार दिरहम का होगा दिया और कहा

अल्लाह को हक से कोई शर्म नहीं। रावी का बयान है कि वह तमाम सामान मैं ने आप के सामने लाकर रख दिया। आप ने शतीता का भेजा हुआ एक दिरहम और इज़ार ले लिया और फिर मेरी तरफ मुख़ातिब हुए और फरमाया 'अल्लाह को हक से कोई शर्म नहीं'' फिर फरमाया ऐ अबू जाफर शतीता से मेरा सलाम कहना और दिरहम की थैली उसको दे देना जिस में चालीस दिरहम हैं। और फिर फरमाया कि मैं अपने कफन में से एक कपड़ा उसको देता हूँ जो क़रीयए सैदा की रूई का बना हुआ है और यह क़रया हज़रत फातेमा ज़हरा सलामुल्लाहे अलैहा का है और उसका सूत मेरी बहन और हज़रत इमाम जाफर सादिक अलैहिस्सलाम की दुख़्तर हज़रत हलीमा के हाथों का काता हुआ है। फिर फरमाया कि उस से कह देना की इन दिरहमों और कफन के लिए मेरा भेजा हुआ यह कपड़ा पहुंचने के बाद तुम उन्नीस १९ दिन ज़िंदा रहोगी। उस में सोला दिरहम तो अपने ऊपर खर्च करना और चौबीस दिरहम अपनी तरफ से सदके वगैरह देना और यह भी कह देना कि मैं खुद तेरी नमाज़े जनाज़ा पढ़ाने आऊँगा। और सुनो, ऐ अबू जाफर! जब तुम उस वक्त मुझ को देखो तो किसी से न कहना पोशीदा रखना यही तुम्हारे लिए बेहतर है। फिर फरमाया और यह सब रकम जो और लोगों ने भीजी है वह उन के मालिकों को वापस कर देना। बहर हाल जब वह फरस्तादा नीशापुर वापस आया तो देखा कि जिन अफराद ने रुकूम भेजीं थीं और जिन को आपने वापस कर दिया था वह सब मज़हब फतीहा इख़्तियार कर चुके थे लेकिन शतीता मज़हब पर काएम थी। उसने शतीता को इमाम (अ.स.) का सलाम पहुंचाया और वह रकम की थैली और कपड़ा जो इमाम ने भेजा था उसको दे दिया और इमाम अलैहिस्सलाम ने जितने दिन बताए थे व

उतने ही दिन ज़िंदा रही। जब शतीता ने इन्तेकाल किया तो इमाम अलैहिस्सालम अपनी सवारी पर तशरीफ लाए। जब तजहीज़ व तकफीन से फारिग़ हुए तो अपने ऊँट पर सवार होकर सहरा की तरफ निकल गए और यह कह गए कि अपने असहाब को बता देना और मेरा सलाम कह देना और उन से यह भी कह देना कि मैं या जो भी मेरा काएम इमाम होगा वह तुम्हारे जनाज़ों में ज़रूर शरीक होगा, ख्वाह तुम किसी भी मुल्क में रहोगे। लेहाज़ा अपने मुताल्लिक अल्लाह से डरते रहो और तक़वा इख्तियार किए रहो।

(वेहार सफहा ९६ ता ९९ जिल्द ७)

**नोट:**

रिवायत तवील है हम ने यहाँ पर रिवायत की तलखीस तहरीर की है।

# हज़रत इमाम अली रिज़ा (अ.स.)

## तर्ज़े ज़िंदगीः

इब्राहीम बिन अब्बास का बयान है कि मैंने हज़रत अबुल हसन अली रिज़ा अलैहिस्सलाम को कभी किसी से सख़्ती से बात करते हुए नहीं देखा। नीज़ कभी किसी की बात काट कर खुद बात करते हुए या किसी मोहताज के सवाल को रद करते हुए या कभी अपने हम जलीसों के सामनेपैर फैलाए हुए या हम जलीसों के सामने तकिया लगा कर बैठे हुए या अपने गुलामों में से किसी को सख्त सुस्त कहते हुए या थूकते हुए या हंसते वक्ते क़हक़हा लगाते हुए नहीं देखा आप की हंसी सिर्फ मुस्कुराहट होती थी।

नीज़ जब दस्तरख्वान लगाया जाता तो आप के साथ गुलाम, दरबान और साइस भी खाना खाते थे। आप शब को बहुत कम सोते और ज़ियादा बेदार रहते, और अकसर रातों को तो अव्वल शब से सुब्ह तक बेदार ही रहते। आप अकसर व बेशतर रोज़ा रखते थे। हर महीने के तीन रोज़े आप कभी नहीं छोड़ते थे और फरमाते थे कि यह सौमुद दहेर है। आप पोशीदा तौर पर बहुत सदका व खैरात किया करते। अब अगर कोई शख्स कहे कि हम ने आँजनाब के मानिंद किसी भी शख्स को फज़्ल व शरफ़ में देखा है तो वह झूठा है। उसको सच्चा न जानो।

(बेहार सफहा ८८ जिल्द ५)

## कसर नफ्सी

एक दिन हज़रत इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम हम्माम तशरीफ ले गए तो किसी ने आप से कहा कि ज़रा मेरा बदन मल दो आप उसका बदन मलने लगे जब उसने पैहचाना तो माज़ेरत चाहने लगा

और आप उसके सीने को मलते और साफ करते रहे।

(बेहार सफहा ९६ जिल्द ५)

## मशायअते जनाज़ाः

मूसा बिलन सय्यार का बयान है कि हज़रत इमामे रेज़ा अलैहिस्सलाम के हमराह था। आप तूस के बागात के करीब पहुंचे तो शोर व गुल की आवाज़ सुनी आप इस तरफ बढ़े और देखा एक जनाज़ा जा रहा था। जैसे ही मेरे मौला की नज़र उस पर पड़ी आप फौरन अपने घोड़े से उतर पडे और जनाज़े की तरफ बढ़े उसे काँधा दिया और मुसलसल उसके साथ रहे जैसे एक बकरी का बच्चा अपनी माँ के पीछे पीछे चलता है उसके बाद मेरी तरफ मुतवज्जे हुए और फरमाया ऐ मूसा जो शख्स हमारे दोस्तों में से किसी दोस्त के जनाज़े की मशायत करे तो व अपने तमाम गुनाहों से उस तरह पाक होजाएगा जैसे वह अपनी माँ के शिकम से बेगुनाह पैदा हुआ है। उसके बाद जब उस शख्स का जनाज़ा कबरके किनारे रखा गया तो आप उसके करीब पहुंचे, जब मय्यित को ताबूत से निकाला गया तो आप ने मय्यित के सीने पर हाथ रखा फिर फरमाया ऐ फलाँ बिन फलाँ तुझे जन्नत की खुशखबरी हो अब इस वक्त के बाद तुझे कोई खौफ व खतर नहीं है।

मैंने अर्ज़ किया, मौला मैं आप पर कुरबान किया आप इस मरने वाले को पेहचानते हैं? यह जगह तो वह है जहाँ आप कभी तशरीफ नहीं लाए: आप ने फरमाया ऐ मूसा बिन सय्यार क्या तुझे नहीं मालूम कि हम आइम्माके सामने हमारे शीओं के आमाल रोज़ाना सुब्ह व शाम पेश किए जाते हैं। अगर उन के आमाल में कुछ तकसीर होती है तो हम उसके लिए अल्लाह से अफ्व व दरगुज़र की दुआ करते हैं और जिस के आमाल को बेहतर देखते हैं

तो उसके लिए कबूलियत की दुआ अल्लाह से करते हैं।

(बेहार सफहा ९५ ता ९६ जिल्द ५)

## मेहमानों से खिदमत नहीं लेतेः

ओबैद बिन अबी अब्दिल्लाह बग़दादी से रिवायत है कि उस से एक शख्स ने बयान किया कि हज़रत इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम के यहां एक मेहमान आया। वह रात के वक्त बैठा हुआ आप से बातें कर रहा था कि इतने में चिराग़ की लौ धीमी पड़ गई। मेहमान ने हाथ बढ़ाया कि उस की लौ तेज़ करदे। इमाम रज़ा (अ.स.) ने उसे रोका और खुद बढ़ कर चिराग की लौ को दुरुस्त कर दिया फिर फरमाया कि हम उस कौम से हैं जो अपने मेहमानों से खिदमत नहीं लेते।

(बेहार सफहा ९९ जिल्द ५)

## बचे हुए फलः

हज़रत इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम के गुलाम यासिर का बयान है कि एक दिन आप के गुलामों ने फल खाए जो बच गए वह फेंक दिए (यानी आधे खाए और आधे फेंके) हज़रत इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम ने देखा और फरमाया सुबहानल्लाह यह भी खूब रही। भाई अगर तुम को इनकी ज़रूरत नहीं थी तो बहुत से अल्लाह के बंदे ऐसे भी हैं जिन को यह मोयस्सर नहीं हैं उन्हें ले जाओ ज़रूरत मंद को देदो।

(बेहार सफहा ९९ जिल्द ५)

## सब खाना खा रहे हैं:

हज़रतद इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम के गुलाम यासिर और नादिर का बयान है कि हम से इमाम रिज़ा (अ.स.) ने इरशाद

फरमाया कि जब तुम खाना खा रहे हो और मैं पहुंच जाऊं तो खड़े न हुआ करो जब तक खाने से फारिग़ न हो जाओ। उसके बाद कभी कभी जब आप हम में से किसी को तलब फरमाते तो कह दिया जाता कि सब खाना खा रहे हैं तो आप फरमा देते थे अच्छा उन्हें खाने दो। नीज़ खादिम ही का बयान है कि हज़रत इमाम रिज़ा अलैहिस्सेलाम आखरोट की बनी हुई मिठाइयों की डलियाँ हम सब को इनायत फरमाया करते थे।

(बेहार सफहा ९९ जिल्द ५)

## अल्लाह की इबादत में किसी को शरीक न करो:

वशा का बयान है कि मैं हज़रत इमाम अली रिज़ा अलैहिस्सलाम की खिदमत में पहुंचा तो देखा कि आप के सामने पानी का लोटा रखा हुआ था और नमाज़ की तय्यरी फरमा रहे थे। मैं क़रीब गया और चाहा कि वज़ू के लिए लोटे से आप के हाथों पर पानी डालूँ आप ने फरमाया नहीं: मैंने अर्ज़ किया कि आप मुझे पानी डालने से क्यूँ मना फरमा रहे हैं? मैं चाहता हूँ कि मुझे भी सवाब मिले आप ने फरमाया तुम तो सवाब कमाओ और मुझे महरूम करो मैंने अर्ज़ किया कि यह कैसे? आप ने इरशाद फरमाया तुम ने कुरआन मजीद की यह आयत नहीं सुनी है कि:

***फमन काना यरजू लेकाअ रब्बेही फलयामलो अमलन सालेहन वला युशरिक बे इबादते रब्बेही।***

(सूरे कहेफ आयत ११०)

**"जो शख्स लेकाए इलाही की उम्मीद रखता है पस उसको चाहिये कि अमले सालेह बजा लाए और अपने रब की इबादत में किसी को शरीक न करे।"**

और मैं इस वक्त वज़ू कर रहा हूँ यह भी इबादत है तो मुझे

यह पसंद नहीं कि इस में कोई मेरे साथ शरीक हो।

(बेहार सफहा १०१ जिल्द ५)

## मज़दूरी तै करके काम लो:

सुलेमान जाफरी का बयान है कि मैं हज़रत इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम के बाज़ कामों में आप के साथ था। जब मैंने अपने घर वापसी का इरादा किया तो आप ने इरशाद फरमाया कि मेरे साथ ही चलना। लिहाज़ा मैं भी शब को वहीं मुकीम हो गया। और आप के साथ ही रहा। आप शाम के वक्त अपने बैतुश शरफ में दाखिल हुए तो अपने गुलामों पर एक नज़र डाली जिन में कोई मिट्टी का काम कर रहा था कोई जानवरों को बाँध रहा था कोई उसके अलावा दूसरा काम कर रहा था और उन ही के साथ एक हबशी भी था जो उन गुलामों के अलावा था। आप ने फरमाया कि यह कौन शख्स है जो तुम्हारे साथ काम कर रहा है। गुलामों ने अर्ज़ किया कि यह हमारी मदद करता है और उसे कुछ मज़दूरी देदेते हैं। आपने फरमाया कि क्या इसकी मज़दूरी तै कर ली है? गुलामों ने अर्ज़ किया कि नहीं बस हम जो कुछ उसे देदेते हैं उस पर राज़ी हो जाता है।

यह सुन कर आप उन गुलामों की तरफ बढ़े और उन्हों कोड़े रसीद किए आप गैज़ में भरे हुए थे। मैंने अर्ज़ किया मैं आप पर कुरबान यह आप को गुस्सा क्यूँ आ गया? आप ने फरमाया मैंने उन्हें बार बार मना किया है कि मज़दूर को अपने साथ काम में उस वक्त तक न लगाओ जब तक कि उस से उस की मज़दूरी तै न कर लो। फिर आप ने इर्शाद फरमाया कि अगर किसी मज़दूर को बगैर मज़दूरी तै किये हुए काम पर लगाओगे और उसकी मज़दूरी का तीन गुना भी दोगे तो भी उसे यही ख्याल होगा कि तुमने उसको

मज़दूरी कम दी है और जब मज़दूरी तै कर लोगे तो उसको सिर्फ उसकी तै शुदा मज़दूरी देगो तो वह मज़दूरी पूरी देने पर तुम्हारी तारीफ करेगा और अगर तुमने उसकी मज़दूरी का कुछ भी ज़ियादा दे दिया तो वह मज़ीद खुश होगा और जान लेगा कि यह मज़दूरी से ज़ियादा दिया गया है।

(बेहार सफहा १०३ जिल्द ५)

## मरवान बिन अबू हफसा के शेर से अज़ियत:

मोअम्मर बिन खल्लाद और एक जमाअत से रिवायत है कि हम हज़रत इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम की खिदमत में हाज़िर हुए तो हम में से किसी ने अर्ज़ किया हमारी जानें आप पर कुरबान आज आप के चेहरए मुबारक पर हुज़्न व मलाल के आसार क्यूँ नुमायाँ हैं आप ने इरशाद फरमाया कि आज मैं मरवान बिन अबू हफसा के इस शेर के मुताल्लिक ग़ौर कर रहा था शब में नींद भी नहीं आई वह शेर यह है।

**''यह कैसे हो सकता है और यह तो हो ही नहीं सकता कि लड़की की औलादें चचाओं को पहुंचने वाली वरासत लेलें।''**

फिर मैं सो गया तो ख्वाब में देखा कि एक शख्स मेरे दरवाज़े का बाज़ू थामे हुए यह अशआर पढ़ रहा है।

**''यह कैसे हो सकता है और यह तो हो ही नहीं सकता कि जो पहले मुश्रिक थे वह अब इसलाम के सुतून बन जाएं।''**

**''अज़रूए शरह नवासों को नाना का तरका मिलता है और चचा छोड़ दिया जाता है उसका उस में कोई हिस्सा नहीं।''**

**''भला आज़ाद करदा का मीरास से क्या ताल्लुक और वह भी वह आज़ाद करदा जिस ने तलवार के खौफ से सजदा किया हो।''**

**"कुरआन मजीद ने तो पहले ही इस वारिसे रसूल के फ़ज़्ल व इस्तेहसान की इत्तेला देदी थी और इसी बिना पर साबेका हुक्कामे वक्त ने कई बार उनके हक में फैसला दिया है।"**

**"फातेमा ज़हरा (अ.स.) की औलाद जो अपने अपने नामों से पुकारी जाती है उस ने आँहज़रत (अ.स.) के चचा की औलाद को मेहजूब कर दिया।"**

**"और नसला की औलाद खड़ी हो कर उसका मरसिया पढ़ रही है और उनके रिश्तेदार उनकी इस मरसिया ख्वानी में मदद कर रहे हैं।**

(बेहार सफहा १०७ ता १०८ जिल्द ५)

## मेआरे शर्फ:

मूसा बिन नसरानी का बयान है कि मैंने अपने वालिद को कहते हुए सुना कि एक शख्स ने हज़रत इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम से कहा, खुदा की क़सम अज़ रूए आबा व अजदाद रूए ज़मीन पर आप से बढ़ कर कोई साहेबे शर्फ नहीं आप ने इरशाद फरमाया, मगर हमारे आबा व अजदाद को तकवा ही ने तो साहेबे शर्फ बनाया था और इताअते इलाही में उनको सुकुन सब से ज़ियादा हासिल होता था फिर एक दूसरे शख्स ने कहा, आप वल्लाह तमाम इन्सानो में सब से ज़ियादा बेहतर हैं आप ने फरमाया क़सम न खाओ। मुझ से बेहतर वह हो सकता है जो मुझ से ज़ियादा मुत्तकी और अल्लाह की इताअत करता हो। याद रखो! कुरआन मजीद की यह आयत मंसूख नहीं हुई।

***व जअलना कुम शुऊबन व क़बाएला लेतआरफू इन्ना अकर मकुम इन्दल्लाहे अतकाकुम।***

(सूरए हुजुरात आयत १३)

**"और हम ने तुमहरे कुनबे और कबीले इस लिए बना दिये हैं ताकि एक दूसरे को पेहचान सको, बेशक अल्लाह के नज़दीक तुम में सब से ज़ियादा मुकर्रम वह है जो तुम में से ज़ियादा परहेज़गार हो।"**

(बेहार सफहा ९४ जिल्द ५)

**नसीहतः**

मामून रशीद ने आप को खत लिखा कि फरज़ंदे रसूल (अ.स.) आप मुझे कुछ नसीहत फरमाइये तो आप ने यह अशआर लिख कर इरसाल फरमाए।

**"तुम इस दुनिया में आबाद हो जिस की मुद्दत मुक़र्रेरा है और उस में अमल करने वाले का अमल कुबूल कर लिया जाता है।"**

**"क्या तुम नहीं देखते कि इस पर हर तरफ से मौत मंडला रही है जो उम्मीदवारों की उम्मीदों को झपट ले जाती हो।"**

**"तुम गुनाहों के इर्तेकाब में तो जल्दी करते हो, देर नहीं लगाते और तौबा को आइंदा वक्त के लिए मुलतवी कर देते हैं।"**

**"हालांकि मौत यक बयक आती है और बता कर नहीं आती कि तुम फौरन तौबा कर लो लिहाज़ा यह किसी अकलमंद और होशियार आदमी का काम नहीं कि तौबा में ताखीर से काम ले।**

(बेहार सफहा ११२ जिल्द ५)

# हज़रत इमाम मोहम्मद तक़ी अलैहिस्सलाम

## सदक़े का सिलाः

कासिम बिन मोहसिन का बयान है कि मैं मक्का और मदीने के दरमियान सफर में था एक ज़ईफुल हाल एराबी (देहाती) मेरी तरफ से हो कर गुज़रा और मुझ से सवाल किया मुझे उस पर तरस आया मैं ने एक रोटी निकाल कर उसे दी। वहचला गया तो एक बगोला आया और मेरे सर से मेरा अमामा उड़ा ले गया मुझे मालूम न हुआ वह कैसे उड़ा और कहाँ गया। अब जब मदीने पहुंचा तो हज़रत अबू जाफर (इमाम मोहम्मद तक़ी अलैहिस्सलाम) की खिदमत में हाज़िर हुआ आप ने फरमाया ऐ अबुल क़ासिम रास्ते में तुम्हारा अमामा उड़ गया? मैंने अर्ज़ किया जी हाँ आप ने गुलाम को आवाज़ दी ऐ ग़ुलाम वह अमामा निकाल लाओ वह ग़ुलाम गया और मेरा वही अमामा निकाल लाया। मैंने अर्ज़ क्या कि फरज़न्दे रसूल (स.अ.) यह अमामा आप तक कैसे पहुंच गया? आप ने फरमाया तुमने उस एराबी पर तसद्दुक क्या था उसके शुकरिये में अल्लाह ने तुम्हारा अमामा वापस कर दिया और अल्लाह कभी किसी नेकी करने वाले के अज्र को ज़ाए नहीं करता।

(वेहार सफहा ४४ जिल्द ९)

## इस्तेखारा मना आयाः

मोहम्मद बिन सुहैल बिन यसा से रिवायत है कि उसका बयान है कि मैं मक्का के अतराफ में था। मदीना गया और हज़रत इमाम अबू जाफर अलैहिस्सलाम (इमाम मोहम्मद तक़ी अलैहिस्सलाम) की खिदमत में हाज़िर हुआ मेरा इरादा था कि आप के लिबास में से कोई लिबास माँगूगा मगर माँगना भूल गया और रुखसत होकर

वापसी के इरादे से निकला और दिल में कहा कि खत लिखकर माँग लूँगा मैं ने आप को खत लिखा और मस्जिद रसूल (स.अ.) में आया कि दो रकअत नमाज़ पढ़ लूँ और इस्तेखारा देख लूँ अगर इस्तेखारा आए तो खत भेजूँ वर्ना उसे चाक कर दूँ। मैंने इस्तेखारा देखा और इस्तेखारा मना आया। मैंने खत चाक कर दिया और मदीना से निकला अभी चला ही था कि देखा कि आप का फर्सतादा आ रहा है उसके पास एक बड़े रूमाल में कुचकपड़े हैं वह मजमे को चीरता हुआ और पूछता हुआ आगे बढ़ा कि उस में मोहम्मद बिन सुलैह कुम्मी कौन है। यहाँ तक कि वह मुझ तक पहुंचा उसने कहा कि तुम्हारे आका ने तुम्हारे लिए लिबास भेजा है। अहमद बिन मोहम्मद बिन सुहेल का बयान है अल्लाह का करना यह कि मैंने अपने वालिद की मौत पर उनको गुस्ल दिया और उन्हीं दोनों चादरों में कफन दिया जिन्हें आप ने भेजा था।

(बेहार सफहा ६३ जिल्द ९)

## हुस्नो शबाब का जालः

मोहम्मद बिन रियान का बयान है कि मामून रशीद ने हज़रत इमाम मोहम्मद तक़ी अलैहिस्सलाम के खेलाफ हर चाल चली (लेकिन वह आप को अपनी मर्ज़ी के मुताबिक न ढाल सका और इमाम मोहम्मद तक़ी अलैहिस्सलाम दुनिया की रंगीनियों की तरफ कतअन मुतवज्जे न हुए। हालांकि उस वक्त आप का बचपन था) जब कोई चाल कारगर न हुई तो बिल आखिर उसने एक सौ हसीन व जमील खादमाएं तलब कीं जिन के हाथों में साग़र और साग़र में जवाहेरात जड़े हुए थे। यह कनीज़ें हज़रत अबू जाफर इमाम मोहम्मद तक़ी अलैहिस्सलाम जहाँ तशरीफ फरमा हों उनके सामने खड़ी रहीं। मगर आप उनमें से किसी की तरफ मुल्तफित नहीं हुए।

एक शख्स जिस का नाम मख़ारिक़ था बहुत अच्छा गाता था। उसके लम्बी सी दाढ़ी थी मामून ने उसे बुलाया उसने कहा या अमीरुल मोमेनीन अगर कोई दुनियावी काम हो तो बताएं मैं उसे अनजाम देने के लिए काफी हूँ। (मामून ने गाने का हुक्म दिया) वह हज़रत अबू जाफर मोहम्मद तक़ी अलैहिस्सलाम के सामने बैठ गया और एक ऐसी ज़ोरदार तान लगाई कि सब घर वाले (महल वाले) जमा हो गए और उसी के साथ वह ऊद बजाने और गाने लगा। जब उसे गाते हुए एक साअत गुज़र गई हज़रत इमाम मोहम्मद तक़ी अलैहिस्सलाम गरदन झुकाए बैठे रहे उस की तरफ मुल्तफित नहीं हुए न दाहिने देखा न बाएं। यकायक आप ने सर उठाया और फरमाया ऐ लम्बी दाढ़ी वाले अल्लाह से डर यह सुनते ही मुज़राब और ऊद उसके हाथों से गिर पड़ा फिर मरते दम तक उसके हाथ ऊद व मुज़राब उठाने के काबिल न हुए। मामून ने पूछा तेरा क्या हाल है? उसने कहा जिस वक्त से हज़रत ने डाँटा है मैं ऐसा डरा हूँ कि वह खौफ ता क्यामत मेरे दिल से न निकलेगा।

(बेहार सफहा ६४ जिल्द ९)

## मासूमीन अलैहिस्सलाम की तरफ से तवाफे काबाः

मूसा बिन कसिम से रिवायत है कि उस का बयान है कि मैं ने अबू जाफर सानी (इमाम मोहम्मद तक़ी अलैहिस्सलाम) अलैहिस्सलाम की खिदमत में अर्ज़ किया कि मेरा इरादा हुआ कि मैं आप की तरफ से और आप के पिदरे बुज़ुर्गवार की तरफ से तवाफ बजा लाऊँ मगर लोगों ने कहा कि औलिया की तरफ से तवाफ नहीं क्या जाता है। आप ने फरमाया जितना भी मुमकिन हो तवाफ करो यह जाएज़ है।

रावी का बयान है कि फिर मैंने तीन साल बाद आप से अर्ज़

किया कि आप ने मुझे इजाज़त दी थी कि आप की तरफ से तवाफ बजा लाऊँ और आप के पिदरे बुज़ुर्गवार की तरफ से भी मैंने जिस कद्र मुमकिन हुआ आप दोनों हज़रात की तरफ से तवाफ किया फिर मेरे दिल मे एक बात और आई मैंने इस पर अमल किया आप ने फरमाया कि वह किया? मैंने अर्ज़ किया कि मैंने एक दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम की तरफ से भी तवाफ किया आप ने तीन बार कहा सल्लल्लाहो अला रसूलिल्लाह दूसरे दिन अमीरुल मोमेनीन (अ.स.) की तरफ से तवाफ किया तीसरे दिन इमाम हसन (अ.स.) की जानिब से चौथे दिन इमाम हुसैन (अ.स.) की तरफ से सातवें दिन हज़रत अली इब्ने हुसैन (.स.) की तरफ से छटे दिन हज़रत इमाम मोहम्मद बाकिर (अ.स.) की तरफ से सातवें दिन हज़रत जाफर (अ.स.) बिन मोहम्मद (अ.स.) की तरफ से आठवें दिन आप के जद्दे बुज़ुर्गवार हज़रत मूसा (अ.स.) बिन जाफर (स.अ.) की तरफ से नवें दिन आप के वालिद बुज़ुर्गवार की तरफ से और दसवें दिन आप की तरफ से तवाफ किया यह वह लोग हैं कि जिन की विलायत अल्लाह ने जुज़्वे दीन करार दी है। आप ने फरमाया फिर तो तुम वल्लाह दीने खुदा पर आमिल हो इस लिए कि बगैर इन की विलायत के अल्लाह दीन को कबूल नहीं करता मैंने अर्ज़ किया और कभी कभी मैं आप की जद्दे माजेदा हज़रत फातेमा ज़हरा सलामुल्लाह अलैहा की तरफ से भी तवाफ कर लेता हूँ और कभी नहीं करता हूँ आप ने फरमयाा उन की तरफसे तवाफ और ज़ियादा करो इस लिए कि अब तक तुम ने जो अमल किया यह उन में से अफज़ल है इन्शाअल्लाह तआला।

‘ेगर सफहा १०५ ता १०६ जिल्द ९)

## बरादरे मोमिन से सुलूकः

अहमद बिन ज़करिया सैदलानी ने अहले सुब्त के कबीले बनी हनीफा के एक शख्स से रिवायत की है उस का बयान है कि जिस साल हज़रत अबू जाफर इमाम मोहम्मद तक़ी अलैहिस्सलाम ने हज अदा किया मैं भी आप के साथ था और यह मोतसिम की खिलाफत का इब्तेदाई दौर था मैं आपके साथ दस्तरख्वान पर बैठा हुआ था। वहाँ बहुत से वालियाने खेलाफत भी मौजूद थे मैंने आप से अर्ज़ किया कि मैं आप पर कुरबान हमारे इलाके का वाली एक ऐसा शख्स है जो आप अहलेबैत (अ.स.) का दोस्तदार और मुहिब है और मुझ पर उस की तेहसील का खेराज बाकी है। मैं आप पर कुरबान अगर मुनासिब समझें तो उसे एक पर्चा तहरीर करदें कि वह मुझ पर करम करे. आप ने फरमाया मेरा उस का तार्रुफ नहीं है। मैंने फिर अर्ज़ किया वह आप अहले बैत का मुहिब है और आप के एक पर्चे से मुझे बड़ा फाएदा होगा आप ने कागज़ लिया और एक पर्चा लिख दिया।

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम अम्मा बाद! हामिल रुका हाज़ा ने बताया कि तुम एक अच्छे मज़हब के पैरू हो तो अपने बरादरे मोमिन के साथ हुस्ने सुलूक करो और यह जान लो कि अल्लाह तआला एक एक ज़र्रा और एक एक राई का तुम से सवाल करेगा।

रावी का बयान है कि जब मैं वह पर्चा ले कर सजिस्तान पहुंचा तो मुझ से पहले उस की खबर हुसैन बिन अबदुल्लाह नीशापुरी को जो इस वक्त वहाँ का वाली था पहुंच चुकी थी उसने शहर से दूर दो फरसख (एक फरसख साढ़े तीन मील का होता है) आगे बढ़ कर मेरा इस्तिकबाल किया मैंने वह पर्चा उस को दिया उस ने उस को बोसा दिया आँखों से लगाया और मुझ से पूछा

तुम्हारो हाजत किया है? मैंने कहा आप की तहसील में मुझ पर मालगुज़ारी बाकी है। उस ने हुक्म दिया कि उस की बकाया मालगुज़ारी माफ की जाए और जब तक मैं यहाँ का आमिल हूँ तुम कोई मालगुज़ारी न दोगे फिर पूछा तुम्हारे मुताल्लेकीन कितने हैं? मैंने बताया तो उस ने मेरे और मेरे मुताल्लेकीन का रातिब भी मुकर्रर कर दिया चुनाँचे जब तक व ज़िंदा रहा मैंने कोई मालगुज़ारी अदा नहीं की और मरते दम तक वह हम से हुस्ने सुलूक करता रहा।

(बेहार सफहा ९६ ता ९७ जिल्द ९)

## पैरों की खाक न मिली:

हमारे असहाब में से एक बुज़ुर्ग जिन का नाम अबदुल्लाह बिन ज़रीन था उन का बयान है कि मैं कब्रे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम पर मुजाविर था। हज़रत अबू जाफर अलैहिस्सलाम का दस्तूर था कि वह रोज़ाना ज़वाल के वक्त मस्जिदे रसूल में तशरीफ लाते और मस्जिद के बाहर चट्टान के पास सवारी से उतरते वहाँ से सीधे कब्रे रसूल (स.अ.) तक आते और वहां से फिर बैते फातेमा तक जाते। वहाँ नालैन मुबारक उतारते और खड़े होकर नमाज़ पढ़ते एक दिन मेरे जी में आया कि जब आप अपनी सवारी से उतरेंगें मैं बढ़कर आप के पाऊँ की खाक उठा लूँगा। इस इरादे से मैं वहाँ जाकर बैठ गया और आप की आमद का इन्तेज़ार करने लगा।

जब ज़वाल का वक्त आया तो आप अपनी सवारी पर तशरीफ लाए और वहाँ नहीं उतरे जहाँ हर रोज़ उतरा करते थे। और आगे बढ़ गए उस चट्टान पर उतरे जो दरवाज़ए मस्जिद पर थी। फिर वहाँ से सीधे मस्जिद में दाखिल हुए और फिर क़बरे

मुताहर हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम को सलाम किया और वहाँ से आगे बढ़े और आहिस्ता आहिस्ता चलते हुए उस मकाम पर पहुंचे जहाँ रोज़ाना नमाज़ पढ़ते थे। आप ने अपना यह रोज़ाना का मामूल बना लिया मैंने दिल में सोचा अच्छा आप नालैन मुबारक उतार कर चलेंगे तो वहाँ आप के पाँव के नीचे के संगरेज़े उठालूँगा।

मगर जब दूसरे दिन ज़वाल के वक्त तशरीफ लाए तो उस चट्टान पर सवारी से उतरे और क़ब्रे रसूल (स.अ.) पर पहुंचे वहाँ सलाम किया फिर उस मकाम पर पहुंचे जहाँ नमाज़ पढ़ा करते थे। आप ने नालैन मुबारक नहीं उतारी और उसके बाद चंद दिनों तक आप का यही मामूल रहा। मैंने अपने दिल में कहा यहाँ मुझे उस का मौका न मिलेगा अब हम्माम जाऊँगा जब आप हम्माम तशरीफ ले जाएंगे तो आप के पाँव की खाक उठालूँगा। मगर जब आप हम्माम तशरीफ लाए तो सवारी के साथ सीधे कपड़े उतारने की जगेह पहुचें और चटाई पर सवारी से उतरे मैं ने हमाम वाले से पूछा तो उस ने कहा। बा खुदा वह ऐसा तो कभी नहीं करते थे आज यह नई बात है। मैं इन्तेज़ार में बैठा रहा कि हम्माम से निकलेंगे तो सवारी तक जाएंगे मैं पाँव की खाक उठालूँगा। मगर आप ने सवारी अन्दर मंगाली लिबास तबदील करने की जगह चटाई पर खड़े रहे और वहाँ से सवार होकर तशरीफ ले गए मैंने दिल में कहा कसम बा खुदा मैंने मौला को बहुत अज़ियत पहुंचाई अब में कभ भी आपके पाँव की खाक उठाने का इरादा न करूँगा। उसके बाद आप जब वक्ते ज़वाल तशरीफ लाए तो फिर उसी मक़ाम पर सवारी से उतरे जिस मक़ाम पर हमेशा उतरा करते थे।

(बेहार सफहा ५३ ता ५४ जिल्द ९)

## झूठी गवाहीः

इब्ने अरूविया से रिवायत है उसका बयान है कि एक मर्तबा मोतसिम ने अपने वज़ीरों की एक जमाअत बुलाई और उन से कहा कि तुम लोग मोहम्मद बिन अली के खेलाफ झूठी गवाही दो और लिख कर दो कि वह खुरूज का इरादा रखते हैं। उसके बाद उस ने आप को तलब किया और कहा तुम्हारा इरादा हम पर खुरूज का है आप ने फरमयाा वल्लाह ऐसा नहीं है। मोतसिम ने कहा मगर फलाँ फलाँ गवाह हैं उन लोगों ने गवाही दी है और कहा कि यह तहरीरें मैंने आप के बाज़ गुलामों से हासिल की हैं। वह सब लोग एक बड़े कमरे मैं जमा थे आप ने यह झूठी गवाहियाँ सुन कर दुआ के लिए हाथ उठाए और अर्ज़ क्या परवरदिगार यह सब मुझ पर झूठ और इफ्तेरा परदाज़ी कर रहे हैं तू इन से मवाखेज़ा फरमा। रावी का बयान है कि हम ने देखा कि वहकमरा ज़लज़ला में है झटके खा रहा है और वहाँ से जो उठना चाहता है गिर पड़ता है। मोतसिम यह देख कर घबराया और बोला फरज़ंदे रसूल (स.अ.) मैंने जो कुछ कहा है तौबा करता हुँ। दुआ कीजीए कि ज़लज़ला ठहर जाए आप ने फरमाया परवरदिगार इस कमरे को साकिन करदे तू खूब जानता है कि यह सब मेरे और तेरे दुशमन हैं तभी ज़लज़ला मौकूफ हो गया।

(बेहार सफहा ४३ जिल्द ९)

# हज़रत अली नक़ी अलैहिस्सलाम

## अल्लाह ने तेरी दुआ कबूल कर ली:

अबुल अब्बास अहमद बिन नज़र और अबू जाफर मोहम्मद बिन अलविया वगैरह का बयान है कि इसफहान में एक शख़्स था जिस का नाम अबदुर रहमान था और वह शीआ था उससे पूछा गया कि सबब किया है कि उस ज़माने के लोगों को छोड़ कर तुम हज़रत अबुल हसन अलैहिस्सलाम की इमामत के क़ाएल हुए?

उसने जवाब दिया कि मैंने कुछ ऐसी बात देखी जिस से उनकी इमामत का क़ाएल हो गया फिर उसने किस्सा इस तरह शुरू किया।

उसने कहा सुनो! मैं एक मर्दे फकीर था मेरे पास सिर्फ ज़बान थी और जुरअत थी अहले इसफहान मुझे और चंद दूसरे लोगों के साथ एक बार दरबारे मुतवक्किल में फरयाद करने के लिए ले गए।

एक दिन हम लोग बाबे मुतवक्किल पर थे कि हुक्म हुआ कि अली (अ.स.) बिन मोहम्मद (अ.स.) बिन रिज़ा (अ.स.) को हाज़िर क्या जाए मैंने अपने करीब मौजूद शख़्स से दरयाफ्त किया कि यह कौन शख़्स है जिस के हाज़िर किए जाने का हुक्म हुआ है।

उसने कहा कि यह एक मर्दे अलवी है राफज़ी उनको अपना इमाम कहते हैं और अन्दाज़ा यह है कि मुतवक्किल ने उनको क़त्ल करने के लिए बुलाया है।

मैंने अपने जी में कहा अब मैं बगैर उस शख़्स को देखे हुए यहाँ से न जाऊंगा नागाह मैंने देखा कि वह मर्दे अलवी घोड़े पर सवार आया। लोग रास्ते पर दोनों तरफ सफें बाँधे हुए खड़े उस को देख रहे थे। जब मेरी नज़र उन पर पड़ी तो बे इख्तियार दिल में उनकी मोहब्बत आ गई और दिल ही दिल में अल्लाह से दुआ करने

लगा कि अल्लाह उसको मुतवक्किल के शर से महफ़ूज़ रखे वह उसी तरह सफों के दरमियान घोड़े पर सवार आगे बढ़ते रहे। उनकी नज़र सिर्फ घोड़े की आयाल पर थी न दाहिनी जानिब थी ना बाईं जानिब और मैं मुसलसल दुआ में मशगूल था। जब वह मेरे करीब पहुंचे तो मेरी तरफ रुख कर के कहा, अल्लाह ने तेरी दुआ कबूल फरमा ली और तुझे तूले उम्र व कसरते माल व औलाद से नवाज़ा।

यह सुन कर मैं काँप उठा और वहीं गिर पड़ा।

लोगों ने पूछा क्या बात हो गई?

मैंने कहा कुछ नहीं वैसे सब खैरियत है। उस के बाद हम लोग इसफहान वापस आए और यहाँ आकर अल्लाह ने मुझ पर माल व दौलत के दरवाज़े खोल दिए आज यह हाल है कि मेरे घर में दस लाख का माल है और जो बाहर है वह उसके अलावा है। फिर अल्लाह ने मुझे दस औलादें दीं और मेरी उम्र इस वक्त पचहत्तर साल की है और मैं उस शक्स की इमामत का काएलहूँ जो मेरे दिल की बात जान गया और उसकी दुआ अल्लाह ने मेरे हक में कबूल फरमाई।

(बेहार सफहा १६९ जिल्द ९)

## रोबे इमामत:

मोहम्मद बिन हसन अश्तर अलवी से रिवायत है कि मैं अपने वालिद के साथ दरवाज़ए मुतवक्किल पर था। आप (अ.स.) उस वक्त तमाम तालिबयों, अब्बासियों और फौजियों वगैरह के दरमियान सब से छोटे थे और यह दस्तूर था कि जब हज़रत इमाम अबुल हसन इमाम अली नक़ी अलैस्सिलाम तशरीफ लाते तो सब अपनी अपनी सवारियों से उतर कर पैदल हो जाते थे और जब तक आप अन्दर तशरीफ न ले जाते सब पा प्यादा रहते।

एक मर्तबा उन में से चंद लोगों ने आपस में मशवरह किया

कि हम लोग इस कम सिन बच्चे के लिए क्यूँ पा प्यादा हों न इस में हम लोगों से ज़ियादा शरफ़ है न यह हम से बड़े हैं न हम से ज़्यादा इन का सिन है न हम से ज़्यादा इन का इल्म है लिहाज़ा अब हम लोग इनके लिए सवारियों से न उतरेंगे।

अबू हाशिम ने कहा मगर खुदा की क़सम तुम लोग उन को देखो गे तो ज़रूर बिल ज़रूर सवारियों से उतर जाओगे। अभी गुफ्तगू हो ही रही थी कि आप तशरीफ लाए और आपको देखते ही तमाम लोग पा प्यादा हो गए।

अबू हाशिम ने कहा तुम लोग तो कहते थे कि हम सवारियों से न उतरेंगे। उन लोगों ने जवाब दिया खुदा की क़सम हम लोग अपने काबू से बाहर हो गए और सवारियों से उतर पड़े।

(बेहार सफहा १६७ ता १६८ जिल्द ९)

## अपने दरवाज़े पर खड़ा हुँः

इसहाक जल्लाब से रिवायत है कि मैंने अबुल हसन इमाम अली नक़ी अलैहिस्सलाम के लिए बहुत सी भेड़ बकरियाँ खरीदीं। आप ने मुझे बुलाया और घर के बाड़े से एक ऐसी वसीअ जगह ले आए जिस से मैं वाकिफ न था। वहाँ पर आप ने मुझे बकरियाँ छाटने का हुक्म दिया, मैं बकरियाँ छाटने लगा उसके बाद आपने बड़े साहबज़ादे अबू जाफर और उनकी वालेदा वगैरह को भी इत्तेला देदी जिन्होंने खरीदने के लिए कहा था। फिर मैंने आप से बग़दाद जाने की इजाज़त चाही। आप ने फरमाया कल तक यहीं क़्याम करो फिर चले जाना।

रावी का बयान है कि मैं ठहर गया और अर्फा के दिन भी आप ही के यहाँ क्याम किया ईदुल अज़हा की शब आप के सोबा में सोया। सहर के वक्त आप तशरीफ लाए और फरमया ऐ इस्हाक उठो!

मैं उठा और आँख खोली तो देखा कि बग़दाद में अपने दरवाज़े पर खड़ा हुँ। मैं अपने वालिद के पास पहुंचा और मेरे दोस्त एहबाब मेरे पास आए।

मैंने उनसे कहा अर्फा के दिन तो मुक़ामे असकर में था और ईद करने बग़दाद आ गया।

(बेहार सफहा १७१ ता १७२ जिल्द ९)

## और मैं अच्छा हो गया:

ज़ैद बिन अली इब्निल हुसैन बिन ज़ैद से रिवायत है कि मैं एक मर्तबा बीमार हुआ रात के वक्त तबीब आया और एक दवा तजवीज़की कि मैं उसे सुब्ह के वक़्त इस्तेमाल करूँ। लेकिन वह दवा शब के वक्त मुझे हासिल न हो सकी और तबीब चला गया। इतने में हज़रत इमाम अली नक़ी अलैहिस्सलाम के एक सहाबी आए उनके हाथ में एक पुड़िया थी जिस में बेएनेही वही दवा थी। उन्होंने कहा कि हज़रत इमाम अबुल हसन अलैहिस्सलाम ने तुम को सलाम कहा है और फरमाया है कि यह दवा इस्तेमाल करो। मैंने इस्तेमाल किया और मैं अच्छा हो गया।

(बेहार सफहा १८६ जिल्द ९)

## दो दिन भी न गुज़रेंगे:

अबू सुलैमान ने इब्ने औरमा से रिवायत की है कि मैंने एक मर्तबा दौरे मुतवक्किल में सिर्रेमन राए गया और सईद हाजिब के पास पहुंचा। मुतवक्किल ने हज़रत अबुल हसन इमाम अली नक़ी अलैहिस्सलाम को कत्ल करने के लिए उसके हवाले किया था।

उसने कहा, क्या तुम अपने अल्लाह को देखना चाहते हो?

मैंने कहा, पाक है वह अल्लाह जिस को आँखें नहीं देख सकतीं।

उस ने कहा मगर इसी को तो तुम लोग समझते हो कि यह तुम्हारा इमाम है।

मैंने कहा यह कितनी बुरी बात तुम ने कही।

उसने कहा मगर मुतवक्किल ने उसके कत्ल का हुक्म दे दिया है और कल ही ऐसा करने वाला हूँ उस वक्त उसके पास एक कासिद गया हुआ है जब वह निकल आए तो तुम चले जाना।

जब कासिद निकल आया तो मुझ से कहा अब तुम अन्दर जाओ।

मैं उस घर में अन्दर दाखिल हुआ जिस में आप कैद थे। देखा कि आप के पहलू में कब्र खुदी हुई है मैंने करीब पुंहच कर आप को सलाम किया और ज़ार व क़तार रोने लगा।

आप ने पूछा क्यूँ रोते हो?

मैंने अर्ज़ किया जो कुछ देख रहा हूँ उस पर रोता हूँ।

आप ने फरमाया, उस के लिए न रोओ, यह लोग इस वक्त हरगिज़ ऐसा न कर सकेंगे। यह सुन कर मुझे सुकून हुआ आप ने फरमाया दो दिन भी न गुज़रेंगे कि अल्लाह उसका और उसके साथी का खून बहादेगा जिसको तुम देख आए हो।

रावी का बयान है कि बा खुदा वाकेअन दो दिन भी नहीं गुज़रे कि वह कत्ल कर दिया गया।

(बेहार सफहा १९१ ता १९२ जिल्द ९)

## उमर फारस मर गयाः

मोहम्मद बिन सनान से रिवायत है कि एक मर्तबा हज़रत इमाम अबुल हसन हादी अलैहिस्सलाम की खिदमत में हाज़िर हुआ आप ने पूछा क्या आले फरज में कोई हादेसा हो गया है?

मैंने अर्ज़ क्या जी हाँ उम्रे फारस मर गया।

आप ने फरमाया अलहम्दूलिल्लाह :

मैंने अर्ज़ किया मौला! अगर मुझे मालूम होता कि आप उसकी मौत पर इतने खुश होंगे तो मैं दौड़ता हुआ आकर आप को उस की इत्तेला देता।

आप ने फरमयाा तुम्हें मालूम नहीं यह कौन था?

मैंने अर्ज़ किया जी नहीं।

आप ने फरमाया, यह वह शख्स था जिस ने मेरे पिदरे बुज़ुर्गवार से दौरान गुफ्तगू कहा था कि मालूम होता है कि आप इस वक़्त नशे में हैं।

मेरे पिदरे बुज़ुर्गवार ने फरमाया, परवरदिगार! तू जानता है कि मैं रोज़े से हूँ, तो इसे सलबे माल और ज़िल्लते असीरी में मुब्तेला कर।

चंद ही दिनों में उसका सारा मालजाता रहा और उसको कैद कर दिया गया और अब वह मरा है अल्लाह उस को अपनी रहमत से दूर ही रखे।

(बेहार सफहा २२१ ता २२२ जिल्द ९)

## अपने मानने वालों के नाम खतः

अहमद बिन मोहम्मद बिन ईसा का बयान है कि हज़रत इमाम अली नक़ी अलैहिस्सलाम का एक खत इब्ने राशिद के पास था जो आप ने अपने मानने वालों के नाम तहरीर फरमाया था। जो बग़दाद और मदाइन और उनके कुर्ब व जवार में रहते थे जिस का मज़मून यह था।

अलहम्दो लिल्लाह कि मैं बखैर व आफियत हूं दुरूद भेजता हूँ अल्लाह के नबी और उन की आल पर बेहतरीन व कामिल तरीन दुरूद। वाज़ेह हो कि मैं ने अबू अली बिन राशिद को हुसैन बिन अबदरबा का और उनसे पहले लोगों का जो हमारे वकीलों में से थे उसको क़ाएम मुक़ाम बनाता हूँ। और उस को उन तमाम चीज़ों का

वाली बनाता हूँ जिस के वाली हमारे वकील उस से पहले थे ताकि वह मेरे हुकूक वसूल करे मैंने उसको तुम लोगों पर मुकर्रर व मुन्तखिब किया है। उस को तरजीह दी है और वाकेअन व इसका अहल है।

लिहाज़ा अल्लाह तुम लोगों पर रहम फरमाए तुम लोग मेरे हक का सारा माल उसके हवाले करदो और उस को अपने दिल में बुरा न महसूस करो। अल्लाह के हुक्म की इताअत में ताजील करो उसे अदा करके अपने अमवाल को हलाल करलो। देखो! नेकी और परहेज़गारी में लोगों की मदद् करो। गुनाह और सरकशी में किसी से ताऊन न करो। अल्लाह से डरो हो सकता है कि अल्लाह तुम लोगों पर रहम फरमाए। तुम सब लोग अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से पकड़लो ताकि अगर तुम्हें मौत आए तो उस वक्त तुम मुसलमान ही रहो।

याद रखो! इसकी इताअत मेरी अताअत है इस की नाफरमानी मेरी ना फरमानी है लिहाज़ा वह रास्ता इख्तियार करो कि अल्लाह तुम्हें उस का अज्र दे और तुम पर अपने फज़्ल व करम में इज़ाफा करे। बे शक अल्लाह बहुत वुसअत रिज़्क देने वाला और करीम है। वह अपने बंदों पर बड़ा रहीम है। हम और तुम सब ही अल्लाह की वदीअत और अमानत हैं और उसके हिफ्ज़ व अमान में हैं मैंने यह तहरीर खुद अपने हाथ से रकम की है। अल्लाह की बेहद हम्द और बहुत बहुत शुक्र।

(बेहार सफहा २२३ ता २२४ जिल्द ९)

## बनी हाशिम का पा पयादा जुलूसः

जिस साल मुतवक्किल कत्ल हुआ उस साल ईदलु फित्र के दिन उसने हुक्म दिया कि सारे बनी हाशिम उस की सवारी के आगे आगे पा पयादा चलें उसका मकसद हज़रत अबुलहसन इमाम अली

नक़ी अलैहिस्सलाम को अपनी सवारी के आगे पा पयादा चलाना था।

चुनाँचे बे चारे सारे बनी हाशिम और उनके साथ हज़रत अबुल हसन अलैहिस्लाम अपने एक ग़ुलाम के हाथ का सहारा लिए हुए चले। हाश्मियों में से चंद लोग आप के पास आए और अर्ज़ किया कि या सय्यदना! क्या दुनिया में कोई एक भी ऐसा नहीं है कि जिस की दुआ अल्लाह कबूल फरमाए और हम लोगों को इस के मज़ालिम से निजात दिलाए।

आप ने फरमाया इस दुनिया में एक शख्स है जिस का कटा हुआ नाखुन अल्लाह के नज़दीक नाक़ए सालेह से कहीं ज़ियादा मुकर्रम है। जब नाक़ा को पै क्या गया और उसके बच्चे ने अल्लाह से फरयाद की तो अल्लाह तआला ने इरशाद फरमाया:

***तहतऊफी दारेकुम सलासत। अय्याम ज़ालेका वअदु ग़ैरा मकज़ूब। (सूरेह हूद आयत ६५)***

**''तुम अपने घरों में तीन दिन तक मज़े लूट लो यह वादा (अज़ाब) ऐसा है जिसे झुठलाया नहीं जा सकता।**

उसके बाद तीसरे दिन मुतवक्किल कत्ल कर दिया गया।

(बेहार सफहा १९८ ता १९९ जिल्द ९)

# हज़रत इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम

## बे माँगे मिलाः

शाएर मुतवक्किल अबू यूसुफ क़सीर का बयान है कि मेरे यहाँ लड़का पैदा हुआ। उस वक्त मैं बिल्कुल तंग दस्त था। मैंने कई आदमियों के पास माली एआनत के रुक़े लिखे, मगर मेरा क़ासिद हर जगह से बे नील व मराम वापस आया, तो मैंने दिल में कहा अब खुद हर एक के दरवाज़े पर जाऊँगा।

मैं घर से निकला और मैंने हज़रत अबू मोहम्मद इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम के घर का रूख किया। जब आप के दरवाज़े पर पहुंचा तो अन्दर से अबू हमज़ा निकला, उसकेपास एक सियाह थैली थी जिस में चार सौ दिरहम थे।

उसने कहा मेरे आका फरमाते हैं कि ले यह रक़म अपने मौलूद पर खर्च कर अल्लाह तआला तुझे मुबारक करे।

(बेहार सफहा २७४ जिल्द ९)

## दुशमन दोस्त हो गयाः

मोहम्मद बिन इसमाईल अलवी से रिवायत है कि अली बिन औवताश जो एक शदीद दुशमन आले मोहम्मद (स.अ.) था और आले अबू तालिब (अ.स.) पर तशद्दुद करता था।

एक दिन हज़रत अबू मोहम्मद इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम उसके पास बैठे थे। रावी का बयान है कि अभी आप एक दिन ही बैठे थे कि उस की गरदन आप की अज़मत व जलालत क़द्र के सामने झुक गई आप के सामने उसकी निगाह न उठती थी। जब आप उसके पास से उठे तो बेहतरीन साहबे बसीरत बन चुका

था और आप की मदह सराई कर रहा था।

(बेहार सफहा २४७ जिल्द ९)

## मेरे लिए यही आयत काफी है:

इदरीस बिन ज़ियाद कुफ्र तोताई का बयान है कि मैं हज़रत आले मोहम्मद (अ.स.) के मुताल्लिक मुबालेग़ा आमेज़ बड़ी बड़ी बातें किया करता था। एक मर्तबा अबू मोहम्मद इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम की मुलाकात की ग़रज़ से असकर पहुंचा। सफर की वजह से थका माँदा था इस लिए एक हम्माम में गया वहीं पड़ कर सो रहा और आँख उस वक्त खुली जब हज़रत अबू मोहम्मद इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम ने आकर खटखटाया।

मैंने महसूस किया कि आप ही ने दरवाज़ा खटखटाया है इस लिए फौरन उठा दरवाज़ा खोला और आप के कदमों का बोसा दिया। आप सवारी पर सवार थे और कई गुलाम आप के गिर्द थे। आप ने सब से पहली जो बात फरमाई वह थी कि इद्रीस सुनो!

***बल एबादुम मुकरामुना ला यसबेकूनहू बिल क़ौले व हुम बे अमरेही यामालुन। (सूरए अंबिया आयत २६-२७)***

**बल्कि यह अल्लाह के मुकर्रम बंदे हैं उस के क़ौल पर सबक़त नहीं करते और उसी के हुक्म पर अमल करते हैं।**

मैंने अर्ज़ किया मौला! मेरे लिए यही आयत काफी है दर हक़ीक़त मैं यही पूछने के लिए आप की ख़िदमत में हाज़िर हुआ था।

(बेहार सफहा २५१-२५२ जिल्द ९)

## सख़्ती में इज़ाफा करदो:

किताबे अहमद बिन मोहम्मद बिन अयाश में है कि अबू

हाशिम जाफरी हज़रत इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम के साथ क़ैद ख़ाने में थे और मोतज़ ने तालेबीन के मुतअद्दिद लोगोंके साथ २५८ हिजरी में उन दोनों को भी क़ैद में डाल दिया था।

मोहम्मद बिन इसमाईल बिन इब्राहीम बिन मूसा बिन जाफर का बयान है कि जब हज़रत अबू मोहम्मद इमाम हसन असकरी (अ.स.) कैद कर लिए गए तो ख़ानदाने बनी अब्बास और उसके अतराफ के मुनहरेफ़ीन में से सालेह बिन अली वगैरह सालेह बिन वसीफ के पास पहुंचे और उस से कहा कि हज़रत अबू मोहम्मद अलैहिस्सलाम के साथ ज़रा भी नरमी न करना बल्कि सख्ती में इज़ाफा करदो।

सालेह बिन वसीफ ने कहा, हत्तलइमकान मैंने दो शरीर ज़ालिम तरीन लोग उन पर मामुर किए मगर वह दोनों भी आप (अ.स.) के नमाज़ और इबादत को देख कर उन से मुतास्सिर हो गए।

उस के बाद उसने उनदोनों मुहफिज़ों को बुलवाया उन से पूछा बताओ तुम दोनों की इस मर्द (इमाम हसन असकरी) के मुताल्लिक क्या राए है।

उन्होंने कहा हम ऐसे शख्स के मुताल्लिक क्या कहें जो दिन भर रोज़े से रहते हैं और रात भर इबादत के सिवा न किसी से कोई बात करते हैं न किसी और काम में मशगूल होते हैं। वह अगर कभी नज़र उठा कर हम लोगों की तरफ देखते हैं तो हमारा बंद बंद काँपने लगता है। और दिल इस तरह लरज़ने लगता है कि अपने काबू से बाहर हो जाता है।

अब्बासियों ने जब यह सुना तो वहाँ से मायूस वापस हो गए।

(बेहार सफहा २५२,२५३ जिल्द ९)

## ज़ाएर के साथ सुलूकः

अबुल कासिम हबशी से रिवायत है उनकाबयान है कि मेरा दस्तूर था कि हर साल अव्वल शाबान में असकर (सामर्रा) में मकामे मुकद्दस की ज़ियारत को जाया करता और नीमए शाबान में ज़ियारते कब्रे हुसैन अलैहिस्सलाम क्या रता था। एक साल में शाबान से पहले ही असकर पहुंच गया और ख्याल था कि अब हस्बे दस्तूर शाबान में ज़ियारत को न आसकूँगा। मगर जब शाबान आया तो दिल में कहा कि हमेशा शाबान में वहाँ ज़ियारत की है उसे न छोड़ूँगा यह सोच कर मैं फिर असकर (सामर्रा) रवाना हुआ। उससे पहले जब मैं असकर पहुंचता तो रुका या खत के ज़रिये लोगों को बता दिया करता था कि मैं आ रहा हूँ। मगर इस मर्तबा इरादा किया कि सिर्फ ज़ियारत करूँगा औ किसी से मुलाकात न करूँगा। इस लिए जिस के घर क्याम किया उससे कह दिया कि मेरे आने की किसी को इत्तेला न देना।

जब मैंने शब को उस के यहाँ क़्याम किया तो घर का मालिक मुसकुराता हुआ दो दीनार ले कर आया, उस को खुद हैरत थी, वह कह रहा था कि हज़रत इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम ने यह दो दीनार मेरे पास भेजे हैं और कहलाया है कि यह हबशी को देदो और कहो जो अल्लाह की इताअत में मशगूल होता है उसकी हाजत बरआरी अल्लाह करता है।

(बेहार सफहा २५४-२५५ जिल्द ९)

## सआादत मंद बेटा पैदा होः

मोहम्मद बिन हमाम से रिवायत है उनका का बयान है कि मेरे वालिद ने हज़रत अबू मोहम्मद इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम

को ख़त लिखा कि हमारे यहाँ लड़के का हमल ज़ाए हो जाता है और इस वक्त भी मेरी ज़ौजा हामेला है आप दुआ फरमाएं कि हमल ज़ाए न हो और सही व सलामत विलादत होजाए, नीज़ सआदत मंद बेटा पैदा हुआ हो जो आप हज़रात के दोस्तदारों में हो।

आप ने उस रुक्क़े के ऊपर अपने हाथ से तहरीर फरमाया: अल्लाह तआला ने जैसा तुम चाहते हो वैसा ही कर दिया है।

चुनाँचे हमल सलामत रहा और लड़का पैदा हुआ।

(बेहार सफहा २५६ जिल्द ९)

## सोने के तरीके:

मोहम्मद बिन यहया ने अहमद बिन इसहाक से रिवायत की है कि एक मर्तबा मैंने हज़रत अबू मोहम्मद इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम से अर्ज़ किया, मैं आप पर कुरबान, एक बात मेरे दिल में खटक रही है जिसकी मुझे बड़ी फिक्र है, मैं ने चाहा कि आपके पिदरे बुज़ुर्गवार से दरयाफ्त करूँ मगर मौक़ा न मिल सका।

आप ने फरमाया ऐ अहमद! वह क्या बात है?

मैंने अर्ज़ किया, मौला! आप के आबाए ताहेरन की यह रिवायत हम तक पहुंची है कि अँबिया की नींद पुश्त के बल (चित) होती है मोमेनीन की नींद दाएं करवट होती है। मुनाफेकीन बाएं करवट सोते हैं और शयातीन मुंह के बल सोते हैं?

आप ने फरमयाा हाँ ऐसा ही है।

मैंने अर्ज़ किया कि मौला में बड़ी कोशिश करता हूँ कि अपने दाहिने पहलू (करवट) पर सोऊं मगर मुमकिन नहीं होता, नींद नहीं आती।

यहसुन कर आप ज़रा देर खामोश रहे फिर फरमाया, अच्छा अपने दोनों हाथ आस्तीनों से अन्दर की तरफ अपने कपड़ों में कर

लो।

मैंने ऐसा ही किया।

फिर आप ने अपने हाथ आस्तीनों से निकाले और मेरे कपड़ों के अन्दर दाखिल कर दिए अपना दायाँ हाथ मेरे बाएं पहलू पर मसह फरमाया और यह तीन बार किया।

अहमद का बयान है कि जब से आप ने अपने हाथ मेरे पहलूओं पर मसह किए फिर मैं कभी बाएं करवट से सो ही न सका नींद नहीं आती।

(बेहार सफहा २५७ जिल्द ९)

## हमारा अव्वल व आखिर सब बराबर:

अबू हाशिम का बयान है कि एक मर्तबा फेहफकी ने इमाम अलैहिस्सलाम से दरयाफ्त किया क्या वजह है कि औरत गरीब व मिसकीन को एक हिस्सा (मीरास) से मिलता हैऔर मर्द को दो हिस्से?

आप ने फरमाया इस लिए कि औरत पर न जेहाद फर्ज़ है न उसका नान व नफक़ा उसके ज़िम्मे है। यह ज़िम्मेदारियाँ मर्दों पर हैं।

मैंने अपने दिल में कहा कि यही सवाल तो अबुल औजा ने भी हज़रत इमाम जाफरे सादिक अलैहिस्सलाम से किया था और आप ने भी उसका यही जवाब दिया था।

मेरे ज़हेन में यह बात आते ही आप मेरी तरफ मुतवज्जे हुए और फरमया हाँ ठीक है। यही सवाल अबुल औजा ने भी किया था और जब सवाल का मफहूम एक हो तो जवाब भी एक ही होता है। सुनो! जो बात हमारे अव्वल की होती है वही हमारे आखिर की भी होती है। हमारे अव्वल व आखिर इल्म और दिगर उमूर में बराबर हैं मगर जनाबे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम और

जनाबे अमीरूल मोमेनीन अलैहिस्सलाम को हम पर बुज़ुर्गी और फ़ज़ीलत हासिल है।

(वेहार सफहा २५३ जिल्द ९)

## इत्तेला आमदे महदी (अ.स.)

ईसा बिन सबीह से रिवायत है कि उसका बायनहै कि हज़रत इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम हम लोगों के पास कैद खाने में आए। मैं आप को पहचानता था। आप ने मुझ से फरमाया तुम्हारी उम्र इस वक्त पैसंठ साल इतने महने और इतने दिन की है। मेरे पास दुआओं की किताब थी जिस में मेरी तारीख पैदाइश तहरीर थी मैंने उसे देखा तो वाकेअन जो आप ने फरमाया था वह बिलकुल सही था।

आप ने फिर पूछा तुम्हारे कोई लड़का है?

मैंने अर्ज़ किया नहीं।

आप ने फरमाया परवरदिगार! इस को एक लड़का इनायत फरमा जो इसका बाज़ू बने क्यूँकि बेटा बाप के लिए बेहतरीन बाज़ू होता है।

मैंने अर्ज़ किया कि आप के भी कोई बैटा है?

आप ने फरमाया हाँ खुदा की क़सम मेरे एक बैटा होगा जो ज़मीन को किस्त व अद्ल से उसी तरह भर देगा जिस तरह वह ज़ुल्म व जौर से भरी होगी, मगर इस वक्त तो कोई लड़का नहीं है।

(बेहार सफहा २४४ जिल्द ९)

## ज़मीन के खज़ानों की कुंजियाँ:

अबू जाफर अमरी ने बताया कि अबू ताहिर बिन बुलबुल एक मर्तबा हज पर गया उस ने देखा कि अली बिन जाफर हमदानी बड़ी

बड़ी रकमें लोगों को अता कर रहे हैं।

जब हज से वापस आया तो उसने हज़रत अबू मोहम्मद इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम को खत लिखा।

आप ने जवाब में तहरीर फरमाया कि मैंने अली बिन जाफर हमदानी को एक लाख दीनार खर्च करने की इजाज़त दी है और तुम को भी इतनी ही रक़म खर्च करने की इजाज़त है यह काम इस अम्र की दलील है कि इन (आइम्मा ताहेरीन) के पास ज़मीन के खज़ानों की कुनजियाँ हैं।

(बेहार सफहा २५३ जिल्द ९)

## आप के सरे अकदस का नूरः

हज़रत अबू मोहम्मद इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम के गुलाम बज़ल का बयान है कि मैंने देखा कि हज़रत इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम सो रहे थे और आप के सरे मुबारक से एक नूर निकल रहा था जो आसमान तक पहुंच रहा था।

(बेहार सफहा २४४ जिल्द ९)

# हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम

**विलादत के तीसरे दिन:**

इब्ने मुतवक्किल ने हिमयरी से उन्होंने मोहम्मद बिन अहमद अलवी से उन्होंने अबी ग़ानम खादिम हज़रत अबू मोहम्मद अलैहिस्सलाम से रिवायत की है कि जब हज़रत साहेबुज़ ज़मान तवल्लुद हए तो हज़रत अबू मोहम्मद इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम ने उन्हें अपने असहाब को लाकर दिखाया और फरमाया, यही तुम्हारे इमाम और मेरे बाद तुम पर मेरे खलीफा व नाएब हैं यही वह काएम हैं जिन के इन्तेज़ार में लोगों की गरदनें उन की तरफ उठेंगी और जब सारी ज़मीन ज़ुल्म व जौर से पुर हो जाएगी तो यह ज़ुहूर करेगें और ज़मीन को अद्ल व दाद से उसीतरह भर देंगे जिस तरह वह पहले ज़ुल्म व जोर से भरी हुई होगी।

(बेहार सफहा २८-२९ जिल्द ११)

**नाम लेना जाएज़ नहीं:**

दक्क़ाक़ और वर्राक़ ने मोहम्मद बिन हारून सूफी से मोहम्मद ने रूयानी से और रूयानी ने अब्दुल अज़ीम से रिवायत कीहै कि अबुल हसन सालिस (इमाम अली नक़ी अलैहिस्सलाम) ने फरमाया कि इमामे काएम अलैहिस्सलाम का नाम लेना जाएज़ नहीं है। जब तक कि वह ज़मीन को किस्त व अद्ल से भरने के लिए ज़ुहूर न फरमाएं जैसा कि उस से पहले वह ज़ुल्म व जोर से भरी होगी।

(बेहार सफहा ७१ जिल्द ११)

## हज की इजाज़त कफन के साथ:

हुसैन बिन रौह से रिवायत है कि अहमद बिन इस्हाक ने हज़रत साहेबुज़ ज़मान अलैहिस्सलाम को अरीज़ा भेजा उस में हज पर जाने की इजाज़त चाही आप ने इजाज़त दी और साथ के लिए एक कपड़ा भी भेज दिया।

अहमद बिन इसहाक ने कहा इसका मतलब यह है कि आप ने मुझे मौत की खबर दी है चुनाँचे जब वह हज करके वापस हुआ तो मक़ामे हलवान में उसका इन्तेकाल हो गया।

(बेहार सफहा ४१४ जिल्द ११)

## तुम्हें अभी कफन की ज़रूरत नहीं है:

अली बिन मोहम्मद समरी ने आप को अरीज़ा भेजा जिस में एक कफन की दरखास्त की।

आप ने जवाब में तहरीर फरमाया कि तुम्हें अभी कफन की ज़रूरत नहीं है। अस्सी (८०) बरस की उमर में पेश आएगी।

चुनाँचे आप ने जो साल मुकर्रर फरमाया था उसी में उनकी वफात हुई और उनकी वफात से दो माह कब्ल आप ने उनके लिए कफन भेज दिया।

(बेहार सफहा ४१४ जिल्द ११)

## रुकूमे शरई वसूल न करें:

हुसैन बिन हसन अलवी का बयान है कि बादशाह के नदीमों में से एक शख्स रोज़ हसनी और दूसरा उस का साथी दोनों मक्कार और फरेबी थे। एक मर्तबा उस शख्स ने कहा कि फलाँ जगह पर रुकूम आती हैं और उनके बहुतसे वकील रुकूम वसूल करते हैं, चुनाँचे उस ने तमाम वकला के नाम बता दिये जो

अतराफ व जवानिब में थे। उस की इत्तेला उबैदुल्लाह बिन सुलैमान वज़ीर को हुई तो उसने उन तमाम वकला को कैद करने का इरादा किया लेकिन बादशाहे वक्त ने कहा कि उस शख्स को तलब किया जाए जिस ने यह खबर दी है क्यूँकि यह बात इतनी अहम है कि इसे नज़र अन्दाज़ नहीं क्या जा सकता।

उबैदुल्लाह बिन सुलैमान ने कहाः हम तमाम वकला को गिरिफ्तार कर लेते हैं।

बादशाह ने कहाः नहीं, बल्कि पहले हम कुछ लोगों को रकम देकर उन वकला के पास जासूसी के लिए रवाना करते हैं, और उन जासूसों को वकला पहचानते भी न हों पस जो वकील उन से रकम वसूल करले उसे गिरफ्तार कर लिया जाए।

रावी का बयान है कि फौरन इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम का हुक्म तमाम वकला के पास पहुंचा कि ता हुक्म सानी तक किसी भी शख्स से कोई रकम वसूल न की जाए। बल्कि रकम देने वाले शख्स से इस मामले में ला इलमी का इज़हार किया जाए।

चुनाँचे एक जासूस मोहम्मद बिन अहमद के पास जा पहुंचा और तखलिया चाहा और फिर कहा कि मेरे पास कुछ रकम है जिस को मैं इमाम (अ.स.) की खिदमत में भेजना चाहता हूँ।

मोहम्मद बिन अहमद ने कहा तुम को शायद गलत फहमी हुई है। मैं तो इस सिलसिले में किसी बात से वाकिफ नहीं हूँ।

वह शख्स मुसलसल उन की खुशामद करता रहा और मोहम्मद बिन अहमद पैहम ला इलमी का इज़हार करते रहे इसी तरह तमाम जासूसों ने हर वकील के पास रकम ले जाकर देने की भर पूर कोशिश की। मगर तमाम वकला ने उन से रकम वुसूल

करने से इनकार और मामले से ला इल्मी का इज़हार किया इस तरह यह खतरा टल गया।

(बेहार सफहा ४१९-४२० जिल्द ११)

## मेरे दिल की बात का इन्केशाफ:

हसन बिन फज़ल बिन ज़ैब यमानी से रिवायत है कि मैंने (इमाम ज़माना (अ.स.) को दो मकसद अपने अरीज़े में लिखे तीसरी हाजत का लिखना मैंने इस लिए मुनासिब न समझा कि आप को बुरा मेहसूस न हो। आप ने जवाब में दोनों मकासिद के साथ तीसरी हाजत की तफसील के बारे में खुद तहरीर फरमाया।

(बेहार सफहा ४२१ जिल्द ११)

## सरेदस्त ज़ियारत मुलतवी करदो:

मोहम्मद बिन याकूब ने अली बिन मोहम्मद से रिवायत की है कि एक मर्तबा मकाबिर कुरैश (काज़मैन) और हाएर (करबला) की ज़ियारत के लिए (हज़रत साहेबुज़ ज़मान (अ.स.)) का इम्तेनाई हुक्म आ गया कि फुरात के किनारे बसने वालों और करयए बरस के बाशिंदों से जाकर केह दो कि मकाबिर कुरैश की ज़ियारत को न जाएं इस लिए कि खलीफए वक्त ने हुक्म दिया है कि जो भी मकाबिर कुरैश की ज़ियारत को जाएगा उसे गिरफ्तार करलो।

(बेहार सफहा ४२१ जिल्द ११)

## हज की बशारत:

रावी का बयान है कि एक मर्तबा मैं बग़दाद में अपने क़याम से बहुत दिल तंग हुआ और ख्याल आया कि शायद इस साल हज न कर सकूँगा और न अपने घर वापस जा सकूँगा। यह

सोच कर मैं अबू जाफर के पास गया और उन से अर्ज़ किया कि मैंने इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम की खिदमत में जो अरीज़ा भेजा था उस का जवाब आ गया होगा वह मुझे दे दीजीए।

उन्होंने फरमायाः तुम मस्जिद में फलाँ फलाँ मक़ाम पर जाओ तो वहाँ एक शख्स आएगा उसी के पास तुम्हारे खत का जवाब होगा।

मैं उन की निशानदही के मुताबिक मस्जिद में उसी मक़ाम पर जा पहुंचा तो देखा कि एक शख्स मुस्कुराता हुआ सामने आया और कहने लगा।

तुम्हें बशारत हो तुम इससाल हज भी करोगे और सही व सलामत अपने अहले व अयाल के पास भी पहुंच जाओगे।

(वेहार सफहा ४४५ जिल्द ११)

## नियाबत का झूठा दावेदार और होशियार शीआः

हुसैन बिन मनसूर हल्लाज ने इमाम की नियाबत का झूठा दावा किया और एक बा असर शीआ अबू सहल इब्ने इसमाईल बिन अली नौ बख्ती रज़ि अल्लाह अन्हो को खत लिख कर अपना मुती करना चाहा उस का ख्याल था कि जब बा असर शीआ मेरा मुती होजाएगा तो फिर मेरा काम आसान हो जाएगा और दीगर शीआ भी मेरे मुती होजाँएगें इस प्रोग्राम के तहेत उसने अबू सहेल रज़ीअल्लाह अनहो को खत तहरीर किया किः

मैं साहेबुज़ ज़मान अलैहिस्सलाम का वकील हूँ मुझे हुक्म हुआ है कि मैं तुम्हें खत लिखूँ और इस अम्र का इज़हार करूँ कि तुम्हारी मदद की जाए ताकि तुम्हारा दिल कवी रहे और तुम इस अम्र में कोई शक न करो।

अबू सहल रज़ीअल्लाह अनहो ने उस के जवाब में लिखा:

मैं तुम्हें अपने एक मामूली से काम की ज़ेहमत देता हूँ, जहाँ तुम्हारे हाथों बहुत से मोजिज़ात व करामात ज़ाहिर होते होंगे उन के मुकाबले में मेरे इस काम की हकीकत ही नहीं वह काम ह है कि मैं औरतों को बहुत चाहता हूँ मगर मेरा बुढ़ापा इस सिलसिले में हारिज है और उसको पोशीदा रखने के लिए मैं हर जुमा को खेज़ाब इस्तेमाल करता हूँ जिस में मुझे ज़हमत शाक़्का होती है अगर ऐसा न करूँ तो मेरा बुढ़ापा उन पर ज़ाहिर होजाए और वह राहे फरार इख्तियार कर जाँएगी। मैं चाहता हूँ कि तुम मुझे खेज़ाब की ज़ेहमत से नजात दिलादो ऐसी करामत ज़ाहिर करो कि मेरी दाढ़ी के बाल सियाह हो जाएं तो मैं तुम्हारा मुती हो जाऊंगा और तुम्हारे मज़हब की तरफ दावत के लिए अपने माल और अपनी बसीरत से तुम्हारी मदद करूँगा।

हल्लाज ने जब उनका जवाब पढ़ा तो महसूस किया कि मैं ने बड़ी गलती की जो उन्हें खत लिख दिया फिर वह खामोश हो गया और उन के खत को कोई जवाब न दिया।

और इधर अबू सहल रज़ीअल्लाह अन्हो ने उस को एक लतीफा बना लिया और हर एक के सामने यह उसको बयान करने लगे चुनाँचे यह बात हर बसती और गाँव के अवाम व ख्वास में मशहूर हो गई जिस से उसका सारा मक्र व फरेब लोगों पर ज़ाहिर हो गया तो लोग उस से नफरत करने लगे।

(बेहार सफहा ४९५ - ४९६ जिल्द ११)

## दूसरा झूठा और अय्यार:

एक शक्स अबू जाफर बिन अज़ाकर गुज़रा है उसने अबुल

कासिम हुसैन बिन रौह की निसबत देकर कुफरिया यह अक़ाएद का इज़हार शुरू कर दिया और लोग उस की बातों में आ गए।

''जब यह खबर शेख अबुल कासिम हुसैन बिन रौह को मिली तो उन्होंने बनी बसताम (जिन में उस ने अपने अकाएद फैलाए थे) को खत लिखा कि तुम लोग इब्ने अबी अज़ाकर के ताबेईन और मानने वालों पर लानत और तबर्रा करो। जब यह खत बनी बसताम को मिला तो वह सब इबने अबी अज़ाकर पर टूट पड़े वह ज़ार व कतार रोने लगा और बोला (तुम लोग समझते नहीं) शेख अबुल कासिम के इस क़ौल में एक अज़ीम मतलब पोशीदा है लानत के मानी दूर करने के हैं और लानतुल्लाह का मतलब यह है कि अल्लाह तआला ने उसको जहन्नुम के अज़ाब से दूर कर दिया है और अब मैं समझा उनकी नज़र में मेरी क्या मन्ज़ेलत है। यह कह कर वह सजदा में (सजदा शुक्र) गिर पड़ा और कहा तुम लोगों पर लाज़िम है कि इस बात को पोशीदा रखो।

(वेहार सफहा ४९६-४९७ जिल्द ११)(वाकेआ वड़ा तवील है तलखीस तहरीर की गई है।)

**नोट:**

आज भी रुकूम शरई हज़म करने वाले मुख्तलिफ ढोंग से रुकूम हासिल करते हैं कोई मदरसे खोलता है कोई इदारा खोलता है कोई स्कूल के नाम पर पैसा इकट्ठा करता है कोई असपताल के नाम पर। इन अफराद में जो लोग ज़रा भी मशकूक हों और मोमेनीन मेहसूस करें कि यह रुकूम शरई ज़ाती अखराजात में सर्फ कर रहे हैं उन से इज़हारे बेज़ारी करें दीन व ईमान की

सलामती के लिए उन्हें रकूम शरई न दें उन का बाइकाट करें असली नकली अफराद को पहचानना मुश्किल नहीं है सिर्फ खुलूस से तेहक़ीक़ की ज़रूरत है सब कुछ समझ में आ जाएगा कि कौन ढोंगी है कौन मुख्लिस।

**इल्तेमासः**

इस किताब का मुतालेआ करने वालों से इल्तेमास है कि वह मेरे लिए मेरे वालेदैन के लिए मेरे भाई-बहनों और रिश्तेदारों के लिए मेरी औलाद और मेरी ज़ौजा के लिए रहम की दुआ फरमाएं और बाद मौत हम सब के लिए तलबे मग़फेरत फरमाएं। अल्लाह रहमत नाज़िल फरमाएं मोहम्मद (अ.स.) और उनके अहले बैते ताहेरीन (अ.स.) पर।

एहकरुल एबाद
हुसैन हैदर इब्ने सय्यद वसी हैदर रिज़वी साहब मरहूम
११, शव्वालुल मुकर्रम १४२५ हि. बवक्त १२ बजे शब